स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन 2013

श्रीलक्ष्मीनारायण स्तोत्र माला



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्रीलक्ष्मीनारायण स्तोत्र माला



WORLD YOGA CONVENTION 2013
GANGA DARSHAN, MUNGER, BIHAR, INDIA
23rd–27th October 2013

श्रीलक्ष्मीनारायण स्तोत्र माला



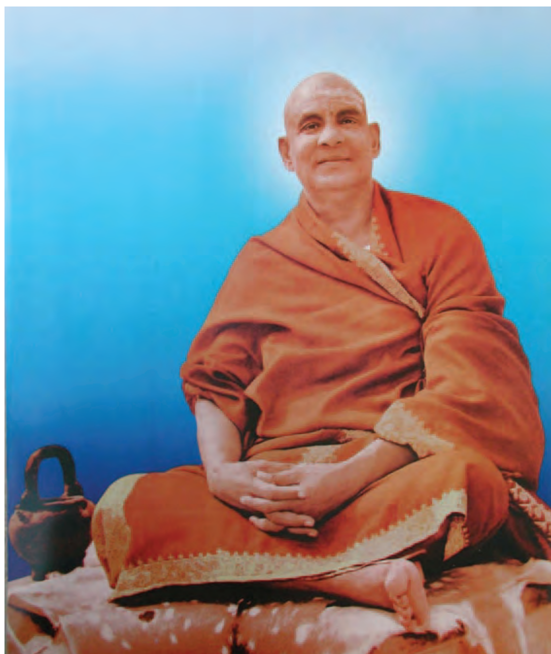
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा *प्रथम संस्करण 2011*
द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण 2012
तृतीय परिवर्द्धित संस्करण 2013

ISBN: 978-93-81620-03-8

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—एजीएन ऑफसेट प्रिंटर्स,
ग्रेटर नोएडा

वेबसाइट : www.biharyoga.net
www.rikhiapeeth.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दुःखी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

अनुक्रमणिका

लक्ष्मी स्तोत्र

नारायण स्तोत्र

परिचय

पुण्यभूमि भारतवर्ष में भगवान नारायण की उपासना आदिकाल से चली आ रही है। नारायण निर्गुण भी हैं, और सगुण भी, तथा निर्गुण-सगुण दोनों से विलक्षण भी। वे परमज्योति, परमात्मा, परम ब्रह्म और परमतत्त्व हैं। प्रलयकाल में जब सारी सृष्टि और सभी देवी-देवता प्रलयाब्धि में विलीन हो जाते हैं, एकमात्र नारायण उस अथाह जलराशि में शेषशय्या पर विराजमान रहते हैं। उन्हीं से असंख्य विश्व-ब्रह्माण्ड पुनः प्रकट होते हैं, उन्हीं में स्थित रहते हैं और अन्ततः उन्हीं में विलीन हो जाते हैं–

यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽथवा।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः॥

सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त होने के कारण ही वे परमपुरुष विष्णु भी कहलाते हैं (*विशति इति विष्णुः*)। निराकार-निर्विशेष होते हुए भी वे अपने भक्तों की पुकार सुनकर तुरन्त द्रवित हो जाते हैं, व्यापक होते हुए भी एक देश में अवतरित होते हैं और क्षणमात्र में अपने भक्तों की पीड़ा हर लेते हैं (*हरति इति हरिः*)। अनन्त कल्याणकारी गुणों के निधान, महामंगलमय भगवान विष्णु के दिव्य श्रीविग्रह की सुमनोहर, नयनाभिराम झाँकी सुप्रसिद्ध है, जिसे देखते हुए सगुणोपासक भक्तजनों के नेत्र कभी नहीं अघाते। भगवान विष्णु की आराधना से मनुष्य न केवल लौकिक मनोरथ बल्कि पारलौकिक निर्वाणपद भी प्राप्त कर लेता है। सभी देवी-देवताओं को अर्पित उपासना वास्तव में श्री नारायण की ही उपासना है, क्योंकि–

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरं।
सर्वदेव-नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

भगवान नारायण की अर्द्धांगिनी लक्ष्मी समृद्धि, सौभाग्य और सौन्दर्य की देवी हैं। समृद्धि का तात्पर्य केवल स्वर्ण-पशु-धन जैसी भौतिक सम्पदा से नहीं, बल्कि

सभी प्रकार की भव्यता, प्रसन्नता, उत्कृष्टता, महानता, सिद्धि तथा ऐश्वर्य माँ लक्ष्मी के अधीन हैं। भक्तों और साधकों में वे आध्यात्मिक जागरण के लिए आवश्यक दिव्य गुणों का विकास करती हैं। वही पराशक्ति हैं जो भगवान विष्णु के सान्निध्य मात्र से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करती हैं; उन्हीं के प्रभाव से महाविष्णु बन्ध-मोक्षमयी परम अद्भुत लीलाएँ करते हैं।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के शब्दों में–'सभी देवियाँ महत्त्वपूर्ण हैं, पर मैं लक्ष्मी को सबसे बड़ा मानता हूँ, क्योंकि वे वर्तमान युग, कलयुग की अधिष्ठात्री देवी हैं। पूर्णता और सम्पन्नता उनसे ही आती है। जब जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य और समृद्धि हो, तब समझो कि वह लक्ष्मी की अभिव्यक्ति है। परन्तु उनके दिव्य प्रसाद का उपयोग दूसरों के लिए करना चाहिए। जब तुम अपने लिए न सोचकर दूसरों के लिए सोचते हो तो लक्ष्मी बहुत प्रसन्न होती हैं। लेकिन जब तुम केवल अपने लिए सोचते हो, तब वे तुम्हें छोड़कर चली जाती हैं।'

'जब तक मैं भगवान की सेवा में हूँ, तब तक रोज लक्ष्मी जी के दर्शन कर सकता हूँ, और इसी कारण मुझे किसी से रुपये-पैसे माँगने की आवश्यकता नहीं है। मेरा लक्ष्मीजी से एक समझौता है। वे कहती हैं, "यदि तुम ईमानदारी से रहते हो तो मैं तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करूँगी, पर अगर तुम ऐसा नहीं करते तो मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी। मैं तुम्हें एक कौपीन, एक कम्बल और एक लालटेन दे सकती हूँ, क्योंकि ये तुम्हारी आवश्यकताएँ हैं। पर जिस क्षण तुम कामनावश मँहगी चीजें माँगोगे, मैं उसी समय उस कोरे चेक को रद्द कर दूँगी जो मैंने तुम्हें दे रखा है।" अभी तक लक्ष्मी जी ने मेरे सारे बिलों को पास कर दिया है!'

संन्यास पीठ, मुंगेर

हमारे ऋषि-मुनियों, मनीषियों और पूर्वजों ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया, जिसका अनुसरण हम आज तक कर रहे हैं। उसी संस्कृति के बल पर आज हमारी सभ्यता जीवित है। लेकिन इस भौतिक सम्मोहन के युग में मनुष्य अपने आप को, अपने जीवन की संस्कृति को भूल रहा है। सन् 2009 में महासमाधि में लीन होने से पहले स्वामी सत्यानन्द जी ने भारत की सांस्कृतिक और संस्कारात्मक धरोहर को सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखने के उद्देश्य से अपने उत्तराधिकारी, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती को संन्यास पीठ की स्थापना का आदेश दिया। उनके आदेशानुसार यह एक ऐसा केन्द्र होगा जो संन्यास के उच्च आदर्शों के प्रशिक्षण और संरक्षण के प्रति समर्पित होगा, जहाँ मनुष्य अपने जीवन में संस्कृति का निर्माण करना जान सकेगा।

संन्यास जीवन पद्धति के आदर्शों को एक व्यावहारिक रूप में समाज में लाना, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन में संस्कृति का अनुभव कर सके–यही अब स्वामी निरंजनानन्द के जीवन का अगला अध्याय और अगली यात्रा है। इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए ऐतिहासिक मुंगेर नगरी में गंगा के पावन तट पर पादुका दर्शन गुरुकुल में संन्यास पीठ की स्थापना हुई है।

श्री लक्ष्मीनारायण यज्ञ

स्वामी सत्यानन्द जी के आदेशानुसार संन्यास पीठ के प्रथम आयोजन के रूप में श्री लक्ष्मीनारायण यज्ञ सम्पन्न किया जा रहा है। *यज्ञैराराधितो विष्णुः*, भगवान विष्णु यज्ञ द्वारा ही आराधनीय हैं, क्योंकि वे साक्षात् यज्ञस्वरूप हैं। वे ही यज्ञपति, यजमान और यज्ञभोक्ता हैं। वे यज्ञ द्वारा प्राप्य हैं, वही यज्ञफल की प्राप्ति कराने वाले हैं और वही यज्ञ के रहस्य भी। संक्षेप में कहा जाए तो *यज्ञो वै विष्णुः*, यज्ञ ही विष्णु है और विष्णु ही यज्ञ। समस्त यज्ञों के द्वारा उन्हीं का यजन-पूजन होता है।

जिस प्रकार प्रतिवर्ष रिखियापीठ में शतचण्डी महायज्ञ एवं योग पूर्णिमा के अनुष्ठान और गंगा दर्शन में बसंत पंचमी के अवसर पर श्री विद्या पूजा के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं, उसी प्रकार भगवान नारायण और माँ लक्ष्मी को समर्पित यह लक्ष्मीनारायण यज्ञ संन्यास पीठ का वार्षिकोत्सव है, जो हर साल 8 से 12 सितम्बर में सम्पन्न होगा। 8 सितम्बर परम गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी का जन्म दिवस और 12 सितम्बर स्वामी सत्यानन्द जी का संन्यास दिवस है। गुरु-परम्परा को समर्पित यह वार्षिक लक्ष्मीनारायण यज्ञ कालान्तर में संन्यास पीठ की विशिष्ट पहचान बनेगा। निगम-आगम-पुराणों से संकलित यह 'श्रीलक्ष्मीनारायण स्तोत्रमाला' भक्तों और साधकों के कल्याण हेतु इस यज्ञ का मंगलकारी प्रसाद है।


लक्ष्मी
स्तोत्र

श्री-सूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥1॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥2॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥3॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥4॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमिं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥5॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥6॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥7॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥8॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीँ सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥13॥ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥14॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



लक्ष्मी-सूक्तम्

पद्मानने पद्मिनि पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व॥1॥

पद्मानने पद्म ऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥2॥

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥3॥

पुत्र-पौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरीरथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥4॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना॥5॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥6॥

न क्रोधो न च मात्सर्य न लोभो नाऽशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्त-जापिनाम्॥7॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥8॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥9॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥10॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयश्च श्रियः पुत्रा मयि श्रीर्देवि देवता॥11॥

ऋण - रोगादि - दारिद्र्य - पापक्षुदपमृत्यवः।
भय-शोक-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥12॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥13॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

लक्ष्मीनारायण-स्तोत्रम्

नित्यैवैषा जगन्माता विष्णोः श्रीरनपायिनी। यथा सर्वगतो विष्णुस्तथैवेयं द्विजोत्तम॥
अर्थो विष्णुरियं वाणी नीतिरेषा नयो हरिः। बोधो विष्णुरियं बुद्धिर्धर्मोऽसौ सत्क्रिया त्वियम्॥
स्रष्टा विष्णुरियं सृष्टिः श्रीर्भूमिर्भूधरो हरिः। संतोषो भगवाँल्लक्ष्मीस्तुष्टिर्मैत्रेय शाश्वती॥
इच्छा श्रीर्भगवान्कामो यज्ञोऽसौ दक्षिणा त्वियम्। आज्याहुतिरसौ देवी पुरोडाशो जनार्दनः॥
पत्नीशाला मुने लक्ष्मीः प्राग्वंशो मधुसूदनः। चितिर्लक्ष्मीर्हरिर्यूप इध्मा श्रीर्भगवान् कुशः॥
सामस्वरूपी भगवानुद्गीतिः कमलालया। स्वाहा लक्ष्मीर्जगन्नाथो वासुदेवो हुताशनः॥
शंकरो भगवाञ्छौरिः गौरिर्लक्ष्मीर्द्विजोत्तम। मैत्रेय केशवः सूर्यस्तत्प्रभा कमलालया॥
विष्णुः पितृगणः पद्मा स्वधा शाश्वतपुष्टिदा। द्यौः श्रीः सर्वात्मको विष्णुरवकाशोऽतिविस्तरः॥
शशांकः श्रीधरः कान्तिः श्रीस्तथैवानपायिनी। धृतिर्लक्ष्मीर्जगच्चेष्टा वायुः सर्वत्रगो हरिः॥
जलधिर्द्विज गोविन्दस्तद्वेला श्रीर्महामुने। लक्ष्मीस्वरूपमिन्द्राणी देवेन्द्रो मधुसूदनः॥
यमश्चक्रधरः साक्षाद्धमोर्णा कमलालया। ऋद्धिः श्रीः श्रीधरो देवः स्वयमेव धनेश्वरः॥
गौरी लक्ष्मीर्महाभागा केशवो वरुणः स्वयम्। श्रीर्देवसेना विप्रेन्द्र देवसेनापतिर्हरिः॥
अवष्टम्भो गदापाणिः शक्तिर्लक्ष्मीर्द्विजोत्तम। काष्ठा लक्ष्मीर्निमेषोऽसौमुहूर्त्तोऽसौ कला त्वियम्॥
ज्योत्स्ना लक्ष्मीः प्रदीपोऽसौ सर्वः सर्वेश्वरो हरिः। लताभूता जगन्माता श्रीविष्णुर्द्रुमसंज्ञितः॥
विभावरी श्रीर्दिवसो देवश्चक्रगदाधरः। वरप्रदो वरो विष्णुर्वधूः पद्मवनालया॥
नदस्वरूपी भगवाञ्छ्रीर्नदीरूपसंस्थिता। ध्वजश्च पुण्डरीकाक्षः पताका कमलालया॥
तृष्णा लक्ष्मीर्जगन्नाथो लोभो नारायणः परः। रती रागश्च मैत्रेय लक्ष्मीर्गोविन्द एव च॥
किं चातिबहुनोक्तेन संक्षेपेणेदमुच्यते॥
देवतिर्यङ्मनुष्यादौ पुन्नामा भगवान् हरिः। स्त्रीनाम्नी श्रीश्च विज्ञेया नानयोर्विद्यते परम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



नारायणकृतं लक्ष्मीस्तोत्रम्

देवी त्वां स्तोतुमिच्छामि न क्षमाः स्तोतुमीश्वराः।
बुद्धेरगोचरां सूक्ष्मां तेजोरूपां सनातनीम्।
अत्यनिर्वचनीयां च को वा निर्वक्तुमीश्वरः॥

स्वेच्छामयीं निराकारां भक्तानुग्रहविग्रहाम्।
स्तौमि वाङ्मनसोः पारां किं वाहं जगदम्बिके॥

परां चतुर्णां वेदानां पारबीजं भवार्णवे।
सर्वशस्याधिदेवीं च सर्वासामपि सम्पदाम्॥

योगिनां चैव योगानां ज्ञानानां ज्ञानिनां तथा।
वेदानां च वेदविदां जननीं वर्णयामि किम्॥

यया विना जगत् सर्वमवस्तु निष्फलं ध्रुवम्।
यथा स्तनान्धबालानां विना मात्रासुखं भवेत्॥

प्रसीद जगतां माता रक्षास्मानतिकातरान्।
वयं त्वच्चरणाम्भोजे प्रपन्नाः शरणं गताः॥

नमः शक्तिस्वरूपायै जगन्मात्रे नमो नमः।
ज्ञानदायै बुद्धिदायै सर्वदायै नमो नमः॥

हरिभक्तिप्रदायिन्यै मुक्तिदायै नमो नमः।
सर्वज्ञायै सर्वदायै महालक्ष्म्यै नमो नमः॥

कुपुत्राः कुत्रचित् सन्ति न कुत्रचित् कुमातरः।
कुत्र माता पुत्रदोषे तं विहाय च गच्छति॥

हे मातर्दर्शनं देहि स्तनान्धान् बालकानिव।
कृपां कुरु कृपासिन्धुप्रियेऽस्मान् भक्तवत्सले॥

इत्येवं कथितं वत्स पद्मायाश्च शुभावहम्।
सुखदं मोक्षदं सारं सुभदं सम्पदः पदम्॥

इदं स्तोत्रं महापुण्यं पूजाकाले च यः पठेत्।
महालक्ष्मीर्गृहं तस्य न जहाति कदाचन॥

इत्युक्ता श्रीहरिस्तं च तत्रैवान्तरधीयत।
देवो जगाम क्षीरोदं सुरैः सार्धं तदाज्ञया॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

इन्द्रकृतं लक्ष्मीस्तोत्रम्

ॐ नमो महालक्ष्म्यै।

ॐ नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः।
कृष्णप्रियायै सारायै पद्मायै च नमो नमः॥
पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः।
पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः॥
सर्वसम्पत्स्वरूपायै सर्वदात्र्यै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै सिद्धिदायै नमो नमः॥
हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः।
कृष्णवक्ष:स्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः॥
कृष्णशोभास्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने।
सम्पत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः॥
शस्याधिष्ठातृदेव्यै च शस्यायै च नमो नमः।
नमो बुद्धिस्वरूपायै बुद्धिदायै नमो नमः॥
वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्लक्ष्मीः क्षीरोदसागरे।
स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये॥
गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता।
सुरभी सा गवां माता दक्षिणा यज्ञकामिनी॥
अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालये।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता॥
त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा।
शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा॥
क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा च शुभानना।
परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा॥
यया विना जगत् सर्वं भस्मीभूतमसारकम्।
जीवन्मृतं च विश्वं च शवतुल्यं यया विना॥
सर्वेषां च परा त्वं हि सर्वबान्धवरूपिणी।
यया विना न सम्भाष्यो बान्धवैर्बान्धवः सदा॥
त्वया हीनो बन्धुहीनस्त्वया युक्तः सबान्धवः।
धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी॥

यथा माता स्तनन्धानां शिशूनां शैशवे सदा।
तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपत:॥
मातृहीन: स्तनत्यक्त: स चेज्जीवति दैवत:।
त्वया हीनो जन: कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम्॥
सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवाम्बिके।
वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि॥
वयं यावत् त्वया हीना बन्धुहीनाश्च भिक्षुका:।
सर्वसम्पद्विहीनाश्च तावदेव हरिप्रिये॥
राज्यं देहि श्रियं देहि बलं देहि सुरेश्वरि।
कीर्तिं देहि धनं देहि यशो मह्यं च देहि वै॥
कामं देहि मतिं देहि भोगान् देहि हरिप्रिये।
ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम्॥
प्रभावं च प्रतापं च सर्वाधिकारमेव च।
जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्यमेव च॥
इत्युक्त्वा च महेन्द्रश्च सर्वै: सुरगणै: सह।
प्रणनाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुन: पुन:॥
ब्रह्मा च शंकरश्चैव शेषो धर्मश्च केशव:।
सर्वे चक्रु: परीहारं सुरार्थे च पुन: पुन:॥
देवेभ्यश्च वरं दत्त्वा पुष्पमालां मनोहराम्।
केशवाय ददौ लक्ष्मी: संतुष्टा सुरसंसदि॥
ययुर्देवाश्च संतुष्टा: स्वं स्वं स्थानं च नारद।
देवी ययौ हरे: क्रोडं हृष्टा क्षीरोदशायिन:॥
ययतुश्चैव स्वगृहं ब्रह्मेश नौ च नारद।
दत्त्वा शुभाशिषं तौ च देवेभ्य: प्रीतिपूर्वकम्॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसंध्यं य: पठेन्नर:।
कुबेरतुल्य: स भवेद् राजराजेश्वरो महान्॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेत् सोऽपि कल्पतरुर्नर:॥
पञ्चलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्॥
सिद्धिस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं च संयत:।
महासुखी च राजेन्द्रो भविष्यति न संशय:॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

देवकृतं लक्ष्मीस्तोत्रम्

क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे।
शुद्धसत्त्वस्वरूपे च कोपादिपरिवर्जिते॥1॥

उपमे सर्वसाध्वीनां देवीनां देवपूजिते।
त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलम्॥2॥

सर्वसम्पत्स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी।
रासेश्वर्यधिदेवी त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः॥3॥

कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धुकन्यका।
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं मर्त्यलक्ष्मीश्च भूतले॥4॥

वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्देवदेवी सरस्वती।
गंगा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः॥5॥

कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोके राधिका स्वयम्।
रासे रासेश्वरी त्वं च वृन्दावनवने वने॥6॥

कृष्णप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चन्दनकानने।
विरजा चम्पकवने शतशृंगे च सुन्दरी॥7॥

पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने।
कुन्ददन्ती कुन्दवने सुशीला केतकीवने॥8॥

कदम्बमाला त्वं देवी कदम्बकाननेऽपि च।
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मीर्गृहे गृहे॥9॥

इत्युक्त्वा देवताः सर्वे मुनयो मनवस्तथा।
रुरुदुर्नम्रवदनाः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकाः॥10॥

इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय स वै सर्वं लभेद् ध्रुवम्॥11॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

अगस्त्यकृता महालक्ष्मीस्तुतिः



मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥1॥

त्वं श्रीरुपेन्द्रसदने मदनैकमातः
ज्योत्स्नासि चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये।
सूर्ये प्रभासि च जगत्त्रितये प्रभासि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥2॥

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिः
वेधास्त्वया जगदिदं विविधं विदध्यात्।
विश्वम्भरोऽपि बिभृयादखिलं भवत्या
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥3॥

त्वत्त्यक्तमेतदमले हरते हरोऽपि
त्वं पासि हंसि विदधासि परावरासि।
ईड्यो बभूव हरिरप्यमले त्वदाप्त्या
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥4॥

शूरः स एव स गुणी स बुधः स धन्यो
मान्यः स एव कुलशीलकलाकलापैः।
एकः शुचिः स हि पुमान् सकलेऽपि लोके
यत्रापतेत्तव शुभे करुणाकटाक्षः॥5॥

यस्मिन्वसेः क्षणमहो पुरुषे गजेऽश्वे
स्त्रैणे तृणे सरसि देवकुले गृहेऽन्ने।
रत्ने पतत्रिणि पशौ शयने धरायां
सश्रीकमेव सकले तदिहास्ति नान्यत्॥6॥

त्वत्स्पृष्टमेव सकलं शुचितां लभेत
त्वत्त्यक्तमेव सकलं त्वशुचीह लक्ष्मि।
त्वन्नाम यत्र च सुमंगलमेव तत्र
श्रीविष्णुपत्नि कमले कमलालयेऽपि॥7॥

लक्ष्मीं श्रियं च कमलां कमलालयां च
पद्मां रमां नलिनयुग्मकरां च मां च।
क्षीरोदजाममृतकुम्भकरामिरां च
विष्णुप्रियामिति सदा जपतां क्व दुःखम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख-चक्र-गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

स्थूल-सूक्ष्म-महारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म-स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्-स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-स्तोत्रम्

नमस्ते सर्वलोकानां जननीमब्धिसम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।
संध्या रात्रिः प्रभा मूर्तिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवी त्वं विमुक्तिफलदायिनी॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देवि पूरितम्॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम्।
विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम्॥

दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यधनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम्॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।
देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्॥

त्वमम्बा सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम्॥

मानं कोपं तथा कोषं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि॥

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गान् मा पशून्मा विभूषणम्।
त्यजेथाः मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये॥

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यजन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयाऽमले॥

त्वयाऽवलोकिता: सद्य: शीलाद्यैरखिलैर्गुणै:।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि॥

स श्लाघ्य: स गुणी धन्य: स कुलीन: सबुद्धिमान्।
स शूर: स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षित:॥

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्या: सकला गुणा:।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे॥

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणान् जिह्वापि वेधस:।
प्रसीद देवि पद्माक्षि माऽस्मांस्त्याक्षी: कदाचन॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥



कनकधारा-स्तोत्रम्

अंगं हरेः पुलक-भूषणमाश्रयन्ती
भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिल-विभूतिरपांगलीला
मांगल्यदाऽस्तु मम मंगलदेवतायाः ॥1॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपा प्रणिहितानि गतागतानि।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥2॥

विश्वामरेन्द्र-पदविभ्रमदानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थम्
इन्दीवरोदर-सहोदरमिन्दिरायाः ॥3॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दं अनिमेषमनंगतन्त्रम्।
आकेकरस्थित-कनीनिकपक्ष्मनेत्रम्
भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ॥4॥

बाह्वन्तरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥5॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव।
मातुस्समस्तजगतां महनीय मूर्त्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥6॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
मांगल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।

मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थम्
मन्दालसं च मकरालय-कन्यकायाः ॥7॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्-
अस्मिन्नकिञ्चन-विहंगशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरम्
नारायणप्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥8॥

इष्टा-विशिष्टमतयोऽपि नरा यया द्राक्
दृष्टाः त्रिविष्टपपदं सुलभं भजन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदर-दीप्तिरिष्टाम्
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः ॥9॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलय-केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥10॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥11॥

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥12॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
नमोऽस्तु देवादि-दयापरायै
नमोऽस्तु शार्गांयुधवल्लभायै ॥13॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।

नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर-वल्लभायै ॥14॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवन-प्रसूत्यै।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज-वल्लभायै ॥15॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदान-निरतानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥16॥

यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्तनोति वचनांगमानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥17॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्य-शोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥18॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टः
स्वर्वाहिनी-विमलचारुजल-प्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ-गृहिणीं अमृताब्धि-पुत्रीम् ॥19॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरंगितैरपांगैः।
अवलोकय मामकिंचनानाम्
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

धनलक्ष्मी-स्तोत्रम्

धनदे धनदे देवि दानशीले दयाकरे।
त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥1॥

धराऽमरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते।
सुधनं धार्मिके देहि यजमानाय सत्वरम् ॥2॥

रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रतिप्रिये।
शिखीसखमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ॥3॥

आरक्त-चरणाम्भोजे सिद्धि-सर्वार्थदायिके।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमालानुशोभिते ॥4॥

समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्षणलक्षिते।
शरच्चन्द्रमुखे नीले नीलनीरजलोचने ॥5॥

चंचरीक चमू चारु श्रीहारकुटिलालके।
मत्ते भगवती मातः कलकण्ठरवामृते ॥6॥

हासाऽवलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिन्तापहारिके।
रूप लावण्य तारुण्य कारुण्य गुणभाजने ॥7॥

क्वणत्कंकण-मंजीरे लसल्लीलाकराम्बुजे।
रुद्रप्रकाशिते तत्त्वे धर्माधरे धरालये ॥8॥

प्रयच्छ यजमानाय धनं धर्मेकसाधनं।
मातस्त्वं मेऽविलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके ॥9॥

कृपया करुणाऽऽगारे प्रार्थितं कुरु मे शुभे।
वसुधे वसुधारूपे वसु-वासव-वन्दिते ॥10॥

धनदे यजमानाय वरदे वरदा भव।
ब्रह्मण्यैर्ब्राह्मणैः पूज्ये पार्वतीशिवशंकरे ॥11॥

स्तोत्रं दारिद्रता-व्याधि-शमनं सुधनप्रदम्।
श्रीकरे शंकरे श्रीदे प्रसीद मयि किंकरे ॥12॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्रीलक्ष्मी-स्तोत्रम्

नमोऽस्तु लक्ष्मी मम तेजदृष्टि सौभाग्यं लोके विपुलं च पुण्यं।
सर्वाणि सौख्यानि भवति नित्यं त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी ॥1॥

लक्ष्मी प्रसादे च नरो नरेन्द्र सामान्य नारी निज राजपत्नी।
तव कृपाया बहुपुत्र भवति त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥ 2॥

लक्ष्मी प्रसादे धनधान्यभोगी लक्ष्मी प्रसादे बहुवित्तलाभं।
लक्ष्मी प्रसादे च निवास स्वर्गे त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥3॥

लक्ष्मी प्रसादे गजवाजिरूढो दिव्यांगनाया विविधो विलासः।
रत्नेषु चूडामणिशुभ्रहारं त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥4॥

लक्ष्मी प्रसादे भवति हि शूरा लक्ष्मी प्रसादे ह्याति रूप्यकाणि।
लक्ष्मी प्रसादे ह्यकुले कुलेशो त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥5॥

सर्वाणि सौख्यानि भवति भूमौ त्रिधानि भोगानि भवेत् कृपायाः।
पात्रेषु दानं द्विजदेवपूजा त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥6॥

मनस्तु लक्ष्मी वाक्येषु लक्ष्मी दानेषु लक्ष्मी ध्यानेषु लक्ष्मी।
सर्वाणि कार्याणि सुलभा भवति त्वं देहि शरणं मम मातृलक्ष्मी॥7॥

त्वं सृष्टिकर्त्ता त्वं सृष्टिभर्त्ता त्वमेव सर्वं प्रतिभाति विश्वम्।
त्वं विष्णुवक्षस्थलवासि रम्ये ममोपरि देहि कृपाकटाक्षं॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-रुक्मिणी-अष्टकम्

लक्ष्मीं स्वयंवरहृतां हरिलग्नचित्तां सौन्दर्यसुन्दरकरीं करुणामृताब्धिम्।
बिभ्रत्सुधाकरकराधिक कान्तकान्तिं श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥1॥
यत्पादपंकजरज:कणपावितांग: पापोऽपि शर्म लभते वृजिनाद्विमुक्त:।
राजेश्वरीं कुटिलकुन्तलशोभितां तां श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥2॥
यत् सम्प्रसाद मधुर क्षणदृष्टिपातो रंकं करोति धनदेन समं समृद्धम्।
तां सर्वमंगलकरीं वरदां वरेण्यां श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥3॥
पीताम्बरां कनकमौक्तिकदीप्तकांचीं ताटंककुण्डलपरिष्कृत-कर्णपालीम्।
काश्मीरजन्मतिलकांकित भव्यभालां श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥4॥
नारायणीं करसरोजधृताणुमध्यां वात्सल्यकुंभलुलितोत्तम रत्नहाराम्।
सिज्जत् सुवर्णमणिनूपुरमण्डितांघ्रिं श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥5॥
उत्फुल्लपद्मदलचारुविलोलनेत्रां सौभाग्यदाननिपुणां सुमुखीं प्रसन्नाम्।
देवाधिदेवगण-पूजितपादपद्मां श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥6॥
या शारदेति कवयो: गिरिजेति शैवा: वेदान्तिनो परशिवां प्रकृतिं वदन्ति।
तां सर्वलोकजननीं परमां दयालुं श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥7॥
श्रीपाण्डुरंगमहिषीं दुरितापहन्त्रीं सर्वार्थदां सुखमयीं सुमनोभिरामाम्।
भीमातटे नतजनोद्धरणाय दक्षां श्रीरुक्मिणीं स्वजनकल्पलतां नमामि॥8॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥



गंगा-दशहरा-स्तोत्रम्

नमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांकर्यै ते नमो नमः। सर्वदेव-स्वरूपिण्यै नमो भेषज-मूर्त्तये॥
सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठ्यै नमोऽस्तु ते। स्थाणु-जंगम-सम्भूत-विषहन्त्र्यै नमोऽस्तु ते॥
संसार-विष-नाशिन्यै जीवनायै नमोऽस्तु ते। ताप-त्रितय-संहन्त्र्यै प्राणेश्यै ते नमो नमः॥
शान्ति-सन्तान-कारिण्यै नमस्ते शुद्ध-मूर्तये। सर्व-संशुद्धि-कारिण्यै नमः पापारि-मूर्तये॥
भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिन्यै भद्रदायै नमो नमः। भोगोपभोग-दायिन्यै भोगवत्यै नमोऽस्तु ते॥
मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः। नमस्त्रैलोक्य-भूषायै त्रिपथायै नमो नमः॥
नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै क्षमावत्यै नमो नमः। त्रिहुताशन-संस्थायै तेजो-वत्यै नमो नमः॥
नन्दायै लिंगधारिण्यै सुधा-धारात्मने नमः। नमस्ते विश्व-मुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः॥
बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोकधात्र्यै नमोऽस्तु ते। नमस्ते विश्व-मित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः॥
पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः। परापर-शताढ्यायै तारायै ते नमो नमः॥
पाश-जाल-निकृन्तिन्यै अभिन्नायै नमोऽस्तु ते। शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः॥
उग्रायै सुख-जग्ध्यै च सञ्जीविन्यै नमोऽस्तु ते। ब्रह्मिष्ठायै-ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः॥
प्रणतार्ति-प्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते। सर्वापत्-प्रतिपक्षायै मंगलायै नमो नमः॥
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे। सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमो नमः। परापर-परायै च गंगे निर्वाण-दायिनि॥
गंगे ममाऽग्रतो भूया गंगे मे तिष्ठ पृष्ठतः। गंगे मे पार्श्वयोरेधि गंगे त्वय्यस्तु मे स्थितिः॥
आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्व त्वं गांगते शिवे। त्वमेव मूल-प्रकृतिस्त्वं पुमान् पर एव हि॥
गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



लक्ष्मी-कवचम्

श्रीमधुसूदन उवाच

गृहाण कवचं शक्र सर्वदु:खविनाशनम्। परमैश्वर्यजनकं सर्वशत्रुविमर्दनम्॥
ब्रह्मणे च पुरा दत्तं संसारे च जलप्लुते। यद् धृत्वा जगतां श्रेष्ठ: सर्वैश्वर्ययुतो विधि:॥
बभूवुर्मनव: सर्वे सर्वैश्वर्ययुता यत:। सर्वैश्वर्यप्रदस्यास्य कवचस्य ऋषिर्विधि:॥
पंक्तिश्छन्दश्च सा देवी स्वयं पद्मालया सुर। सिद्धैश्वर्यजपेष्वेव विनियोग: प्रकीर्तित:॥
यद् धृत्वा कवचं लोक: सर्वत्र विजयी भवेत्॥
मस्तकं पातु मे पद्मा कण्ठं पातु हरिप्रिया। नासिकां पातु मे लक्ष्मी: कमला पातु लोचनम्॥
केशान् केशवकान्ता च कपालं कमलालया। जगत्प्रसूर्गण्डयुग्मं स्कन्धं सम्पत्प्रदा सदा॥
ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदावतु। ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा वक्ष: सदावतु॥
पातु श्रीर्मम कंकालं बाहुयुग्मं च ते नम:॥
ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नम: पादौ पातु मे संततं चिरम्। ॐ ह्रीं श्रीं नम: पद्मायै स्वाहा पातु नितम्बकम्॥
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा सर्वांगं पातु मे सदा। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मां पातु सर्वत:॥
इति ते कथितं वत्स सर्वसम्पत्करं परम्। सर्वैश्वर्यप्रदं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

लक्ष्म्या मन्त्रो ध्यानं च

नारायण उवाच

दत्त्वा तस्मै च कवचं मन्त्रं च षोडशाक्षरम्। संतुष्टश्च जगन्नाथो जगतां हितकारणम्॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो महालक्ष्म्यै हरिप्रियायै स्वाहा। ददौ तस्मै च कृपया इन्द्राय च महामुने॥
ध्यानं च सामवेदोक्तं गोपनीयं सुदुर्लभम्। सिद्धैर्मुनीन्द्रैर्दुष्प्राप्यं ध्रुवं सिद्धिप्रदं शुभम्॥
श्वेतचम्पकवर्णाभां शतचन्द्रसमप्रभाम्। वह्निशुद्धांशुकाधानां रत्नभूषणभूषिताम्॥
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुग्रहकारकाम्। सहस्त्रदलपद्मस्थां स्वस्थां च सुमनोहराम्॥
शान्तां च श्रीहरे: कान्तां तां भजेज्जगतां प्रसूम्॥
ध्यानेनानेन देवेन्द्र ध्यात्वा लक्ष्मीं मनोहराम्। भक्त्या दास्यसि तस्यै च चोपचाराणि षोडश॥
स्तुत्वानेन स्तवेनैव वक्ष्यमाणेन वासव। नत्वा वरं गृहीत्वा च लभिष्यसि च निर्वृतिम्॥
स्तवनं शृणु देवेन्द्र महालक्ष्म्या: सुखप्रदाम्। कथयामि सुगोप्यं च त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

महालक्ष्मी-कवचम्

नारायण उवाच

सर्वसम्पत्प्रदस्यास्य कवचस्य प्रजापति: । ऋषिश्छन्दश्च बृहती देवी पद्मालया स्वयम्॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोग: प्रकीर्तित:। पुण्यबीजं च महतां कवचं परमाद्भुतम्॥
ॐ ह्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम्। श्रीं मे पातु कपालं च लोचने श्रीं श्रियै नम: ॥
ॐ श्रीं श्रियै स्वाहेति च कर्णयुग्मं सदावतु। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मे पातु नासिकाम्॥
ॐ श्रीं पद्मालयायै च स्वाहा दन्तं सदावतु। ॐ श्रीं कृष्णप्रियायै च दन्तरन्ध्रं सदावतु॥
ॐ श्रीं नारायणेशायै मम कण्ठं सदावतु। ॐ श्रीं केशवकान्तायै मम स्कन्धं सदावतु॥
ॐ श्रीं पद्मनिवासिन्यै स्वाहा नाभिं सदावतु। ॐ ह्रीं श्रीं संसारमात्रे मम वक्ष: सदावतु॥
ॐ श्रीं श्रीं कृष्णकान्तायै स्वाहा पृष्ठं सदावतु। ॐ ह्रीं श्रीं श्रियै स्वाहा मम हस्तौ सदावतु॥
ॐ श्रीं निवासकान्तायै मम पादौ सदावतु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा सर्वांगं मे सदावतु॥
प्राच्यां पातु महालक्ष्मीराग्नेय्यां कमलालया। पद्मा मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां श्रीहरिप्रिया॥
पद्मालया पश्चिमे मां वायव्यां पातु श्री: स्वयम्। उत्तरे कमला पातु ऐशान्यां सिन्धुकन्यका॥
नारायणेशी पातूर्ध्वमधो विष्णुप्रियावतु। संततं सर्वत: पातु विष्णुप्राणाधिका मम॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

महालक्ष्म्या मन्त्रो ध्यानं च

महालक्ष्म्याश्च मन्त्रं च शृणु तं कथयामि ते। ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहेति परमाद्भुतम्॥
ध्यानं च सामवेदोक्तं शृणु पूजाविधिं मुने। दत्तं तस्मै कुमारेण पुष्कराक्षाय धीमते॥
सहस्रदलपद्मस्थां पद्मनाभप्रियां सतीम्। पद्मालयां पद्मवक्त्रां पद्मपत्राभलोचनाम्॥
पद्मपुष्पप्रियां पद्मपुष्पतल्पविशायिनीम्। पद्मिनीं पद्महस्तां च पद्ममालाविभूषिताम्॥
पद्मभूषणभूषाढ्यां पद्मशोभाविवर्धिनीम्। पद्मकाननं पश्यन्तीं सस्मितां तां भजे मुदा॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



श्री-कमला-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

ॐ महामाया महालक्ष्मी महावाणी महेश्वरी। महादेवी महारात्रिः महिषासुरमर्दिनी॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाद्या भद्रिका निशा। जया रिक्ता महाशक्तिः देवमाता कृशोदरी॥
शचीन्द्राणी शक्रनुता शंकरप्रियवल्लभा। महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता। विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा॥
शूलिनी चक्रिणी पद्मा पाशिनी शंखधारिणी। गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियंकरी। गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता॥
गया गंगा च यमुना गोमती गरुडासना। गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी॥
नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी। किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता। कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी॥
श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा। इन्दिरा सिन्धुतनया मातंगी लोकमातृका॥
त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी। तरुणी च तमोहन्त्री मंगला मंगलायना॥
मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी। निशुम्भादिहरा माता हरिशंकरपूजिता॥
सर्वदेवमयीसर्वा शरणागतपालिनी। शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी॥
गन्धर्वगानरसिका गीतागोविन्दवल्लभा। त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता॥
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता। चन्द्रा शशांकभगिनी गीतवाद्यपरायणा।
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

कमलात्मिका-स्तुतिः

त्रैलोक्य-पूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥1॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्मधारिणी॥2॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्।
स्थिरां लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥3॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्री-लक्ष्मी-सहस्त्रनाम-स्तोत्रम्

श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया।
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा॥
व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमामृतोद्भवा।
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता॥
अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी।
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा॥
ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा।
स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला॥
अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी।
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी॥
मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरंगा निरामया।
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकाशिनी॥
स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पार्चिः सुनिर्मला।
स्वरूपा सर्वगा पारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता॥
अकलंका निराधारा निःसंकल्पा निराश्रया।
असंकीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा॥
अनौपम्या निर्विकल्पा नियन्त्रा यन्त्रवाहिनी।
अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा॥
अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी।
अनिर्देश्याप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥10॥
अप्रतर्क्या परिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी।
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी॥
सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः।
ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा॥
अक्षया वर्धमाना च सुप्रकाशा विहंगमा।
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा॥
तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी।
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी॥
अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा।
संधानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी॥

लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेन वा।
अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः॥
सत्या प्रह्वा क्रिया योग्या अपर्णा ह्लादिनी शिवा।
सम्पूर्णा ह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमृतावहा॥
रजोवत्यर्कप्रतिभाऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा।
परावसुमती देवा कान्तिः शान्तिर्मतिः कला॥
कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः।
सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा॥
अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा।
धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमतीरसा ॥20॥
शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च।
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी॥
अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी।
अनन्तरूपानन्तात्मानन्तस्थानन्तसम्भवा॥
महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा।
महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा॥
प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धिगोचरा।
नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी॥
सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका।
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी॥
नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना।
व्यक्ताव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता॥
संकल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा।
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता॥
प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा।
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी॥
नीरूपोद्भिन्नसंताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया।
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया॥
महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना।
प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ॥30॥
चिन्ताबुद्धिर्यशःप्राज्ञाशान्तिराप्रीतिवर्धिनी।
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा॥

काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा।
सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला॥
वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा।
हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता॥
योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा।
महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया॥
ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा।
त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा॥
सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा।
सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा॥
गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता।
अध्यात्मविद्याविघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी॥
आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका।
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा॥
विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा।
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी॥
इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्मूर्तिः कीर्तिः श्रद्धा दयामतिः।
श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥40॥
अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा।
प्रतिज्ञा संततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी॥
स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा।
संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती॥
काङ्क्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया।
सौम्या भोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी॥
सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना।
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा॥
चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा।
त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरवरार्चिता॥
त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी।
पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता॥
पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता।
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा॥

विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना।
महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता॥
कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणी कला।
जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा॥
वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता।
नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥50॥
ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा।
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना॥
गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना।
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा॥
युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला।
त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी॥
महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना।
शंखिनी लेखिनी स्वस्थालिखिता खेचरेश्वरी॥
भद्रकाली चैकवीरा कौमारी भवमालिनी।
कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका॥
बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका।
अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना॥
वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा।
महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया॥
उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी।
सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया॥
सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रमोदिनी।
हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्धरा॥
सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी।
पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥60॥
महाधना च या श्रृंगी कार्दमी कम्बुकन्धरा।
आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा॥
वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा।
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी॥
योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी।
कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा॥

कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी॥
बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता।
घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनि:स्वना॥
महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना।
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी॥
आर्या यशोदा सुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा।
दारिद्र्यदु:खशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी॥
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी।
क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा॥
रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी।
प्रज्ञाधारामितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती॥
समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला।
अन्तर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरा गति: ॥70॥
दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला।
अम्बिका सुरभि: सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता॥
सुदीक्षा लेलिहाना च कराला विश्वपूरका।
विश्वसंधारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया॥
उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी।
क्षीरधारा सुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा॥
हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा।
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया॥
मातृका माधवी मुख्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा।
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगला॥
श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना।
हंसाहीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया॥
सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा।
सावित्री सत्यसंकल्पा कामदाकामकामिनी॥
दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेव्या वरांगना।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना॥
आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी।
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा॥

अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी।
निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ॥80॥
बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया।
तोषिणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना॥
उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी।
कूष्माण्डा दारुणा चण्डा किराती नन्दनालया॥
कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी।
सौदामनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी॥
जगन्माताभयकरी भूतधर्त्री सुदुर्लभा।
काश्यपी शुभदात्री च वनमाला शुभा वरा॥
धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्धिनी।
गान्धर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना॥
इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया।
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया॥
जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना।
मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता॥
व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला।
रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया॥
श्रवणा श्रावणी नेत्री रसनाप्राणचारिणी।
विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना॥
वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्धिनी।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥90॥
गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती।
सर्वमंगल्यमांगल्या सर्वकामसमृद्धिदा॥
सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता।
सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः॥
अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता।
मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना॥
अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा।
राजश्री रूपसहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता॥
जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम् ।
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया॥

धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी।
कद्रूर्धनायु: कपिला सुरसा सुरमोहिनी॥
महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा।
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्ति: प्रभाकरी॥
तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती।
रत्ना रत्नावली भूता शतधामा शतापहा॥
त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता।
साध्यादितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगांकगा॥
चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नकराश्रया।
हिरण्यरजतद्वन्द्वा शंखभद्रासनस्थिता ॥100॥
गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया।
मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा॥
सुसूक्ष्मा निर्वृति: स्थूला निवृत्तारातिरेव च।
मरीचिर्ज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा॥
दायिनी कालिनी सिद्धि: शोषिणी सम्प्रबोधिनी।
भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला॥
सांगा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युति: सुमहाद्युति:।
कपिला नीलरक्ता च सुषुम्णा विस्फुलिंगिनी॥
अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा।
सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा॥
जया पुष्टिकरीच्छाया मानसाहृदयोज्ज्वला।
सुवर्णकरणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनी रणे॥
विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधि:।
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा॥
विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावागुणाम्बिका।
नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी॥
पद्मांका वज्रचिह्ना च वक्रदण्डविभासिनी।
विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी॥
मानिनी मंगला मान्या मानिनी मानदायिनी।
विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥110॥
हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी।
प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोऽभिज्ञा वदन्मति:॥

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धनी।
अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची॥
संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यमृता प्रभा।
अगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताक्षता॥
सर्वार्थसाधनकरी धातुर्धारणिकामला।
करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया॥
सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकाशिनी।
माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा॥
प्रक्रिया परमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया।
विजृम्भणा च वज्राख्या शृंखला कमलेक्षणा॥
जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा।
मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा॥
धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा।
धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता॥
सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा।
सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया॥
हलायुधा चैकवीरा सर्वशस्त्रसुधारिणी।
व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मधुमन्मयी ॥120॥
गंगा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती।
तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी॥
बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी।
ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा॥
काम्याचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी।
हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना॥
अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा।
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया॥
सर्वांगयोनिः साव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी।
विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥125॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्री-लक्ष्मी-सहस्त्रनामावलिः

ॐ श्रियै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ सत्त्वायै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ चिच्छक्त्यै नमः
ॐ अव्ययायै नमः
ॐ केवलायै नमः
ॐ निष्कलायै नमः
ॐ शुद्धायै नमः 10
ॐ व्यापिन्यै नमः
ॐ व्योमविग्रहायै नमः
ॐ व्योमपद्मकृताधारायै नमः
ॐ परस्यै नमः
ॐ व्योमामृतोद्भवायै नमः
ॐ निर्व्योमायै नमः
ॐ व्योममध्यस्थायै नमः
ॐ पञ्चव्योमपदाश्रितायै नमः
ॐ अच्युतायै नमः
ॐ व्योमनिलयायै नमः 20
ॐ परमानन्दरूपिण्यै नमः
ॐ नित्यशुद्धायै नमः
ॐ नित्यतृप्तायै नमः
ॐ निर्विकारायै नमः
ॐ निरीक्षणायै नमः
ॐ ज्ञानशक्त्यै नमः
ॐ कर्तृशक्त्यै नमः
ॐ भोक्तृशक्त्यै नमः
ॐ शिखावहायै नमः
ॐ स्नेहाभासायै नमः 30
ॐ निरानन्दायै नमः
ॐ विभूत्यै नमः
ॐ विमलायै नमः
ॐ चलायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ व्यक्तायै नमः
ॐ विश्वानन्दायै नमः
ॐ विकाशिन्यै नमः
ॐ शक्त्यै नमः 40
ॐ विभिन्नसर्वार्त्यै नमः
ॐ समुद्रपरितोषिण्यै नमः
ॐ मूर्त्यै नमः
ॐ सनातन्यै नमः
ॐ हार्द्यै नमः
ॐ निस्तरंगायै नमः
ॐ निरामयायै नमः
ॐ ज्ञानज्ञेयायै नमः
ॐ ज्ञानगम्यायै नमः
ॐ ज्ञानज्ञेयविकाशिन्यै नमः 50
ॐ स्वच्छन्दशक्त्यै नमः
ॐ गहनायै नमः
ॐ निष्कम्पार्चिषे नमः
ॐ सुनिर्मलायै नमः
ॐ स्वरूपायै नमः
ॐ सर्वगायै नमः
ॐ पारायै नमः
ॐ बृंहिण्यै नमः
ॐ सुगुणोर्जितायै नमः
ॐ अकलंकायै नमः 60

ॐ निराधारायै नमः
ॐ निःसंकल्पायै नमः
ॐ निराश्रयायै नमः
ॐ असंकीर्णायै नमः
ॐ सुशान्तायै नमः
ॐ शाश्वत्यै नमः
ॐ भासुर्यै नमः
ॐ स्थिरायै नमः
ॐ अनौपम्यायै नमः
ॐ निर्विकल्पायै नमः 70
ॐ नियन्त्रायै नमः
ॐ यन्त्रवाहिन्यै नमः
ॐ अभेद्यायै नमः
ॐ भेदिन्यै नमः
ॐ भिन्नायै नमः
ॐ भारत्यै नमः
ॐ वैखर्यै नमः
ॐ खगायै नमः
ॐ अग्राह्यायै नमः
ॐ ग्राहिकायै नमः 80
ॐ गूढायै नमः
ॐ गम्भीरायै नमः
ॐ विश्वगोपिन्यै नमः
ॐ अनिर्देश्यायै नमः
ॐ अप्रतिहतायै नमः
ॐ निर्बीजायै नमः
ॐ पावन्यै नमः
ॐ अप्रतर्क्यायै नमः
ॐ परिमितायै नमः
ॐ भवभ्रान्तिविनाशिन्यै नमः 90
ॐ एकस्यै नमः
ॐ द्विरूपायै नमः
ॐ त्रिविधायै नमः
ॐ असंख्यातायै नमः
ॐ सुरेश्वर्यै नमः
ॐ सुप्रतिष्ठायै नमः
ॐ महाधात्र्यै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ वृद्ध्यै नमः
ॐ ध्रुवायै नमः 100
ॐ गत्यै नमः
ॐ ईश्वर्यै नमः
ॐ महिम्ने नमः
ॐ ऋद्ध्यै नमः
ॐ प्रमोदायै नमः
ॐ उज्ज्वलोद्यमायै नमः
ॐ अक्षयायै नमः
ॐ वर्धमानायै नमः
ॐ सुप्रकाशायै नमः
ॐ विहंगमायै नमः 110
ॐ नीरजायै नमः
ॐ जनन्यै नमः
ॐ नित्यायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ रोचिष्मत्यै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ तपोनुदायै नमः
ॐ ज्वालायै नमः
ॐ सुदीप्त्यै नमः
ॐ अंशुमालिन्यै नमः 120
ॐ अप्रमेयायै नमः
ॐ त्रिधायै नमः
ॐ सूक्ष्मायै नमः
ॐ परस्यै नमः

ॐ निर्वाणदायिन्यै नमः
ॐ अवदातायै नमः
ॐ सुशुद्धायै नमः
ॐ अमोघाख्यायै नमः
ॐ परम्परायै नमः
ॐ संधानक्यै नमः 130
ॐ शुद्धविद्यायै नमः
ॐ सर्वभूतमहेश्वर्यै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ महाधीरायै नमः
ॐ आपूरणेन शान्त्यै नमः
ॐ अनुग्रहायै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ जगज्ज्येष्ठायै नमः 140
ॐ जगद्विधये नमः
ॐ सत्यायै नमः
ॐ प्रह्वायै नमः
ॐ क्रियायै नमः
ॐ योग्यायै नमः
ॐ अपर्णायै नमः
ॐ ह्लादिन्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ सम्पूर्णायै नमः
ॐ शुद्धायै नमः 150
ॐ ज्योतिष्मत्यै नमः
ॐ अमृतावहायै नमः
ॐ रजोवत्यै नमः
ॐ अर्कप्रतिभायै नमः
ॐ आकर्षिण्यै नमः
ॐ कर्षिण्यै नमः
ॐ रसायै नमः
ॐ परस्यै नमः
ॐ वसुमत्यै नमः
ॐ देवायै नमः 160
ॐ कान्त्यै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ मत्यै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ कलंकरहितायै नमः
ॐ विशालोद्दीपन्यै नमः
ॐ रत्यै नमः
ॐ सम्बोधिन्यै नमः
ॐ हारिण्यै नमः
ॐ प्रभावायै नमः 170
ॐ भवभूतिदायै नमः
ॐ अमृतस्यन्दिन्यै नमः
ॐ जीवायै नमः
ॐ जनन्यै नमः
ॐ खण्डिकायै नमः
ॐ स्थिरायै नमः
ॐ धूमायै नमः
ॐ कलावत्यै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ भासुरायै नमः 180
ॐ सुमत्यै नमः
ॐ ध्वन्यै नमः
ॐ सृत्यै नमः
ॐ सृष्ट्यै नमः
ॐ विकृत्यै नमः
ॐ कृष्ट्यै नमः
ॐ प्रापण्यै नमः
ॐ प्राणदायै नमः

ॐ विश्वस्यै नमः
ॐ पाण्डुरवासिन्यै नमः 190
ॐ अवन्यै नमः
ॐ वज्रनलिकायै नमः
ॐ चित्रायै नमः
ॐ ब्रह्माण्डवासिन्यै नमः
ॐ अनन्तरूपायै नमः
ॐ अनन्तात्मने नमः
ॐ अनन्तस्थायै नमः
ॐ अनन्तसम्भवायै नमः
ॐ महाशक्त्यै नमः
ॐ प्राणशक्त्यै नमः 200
ॐ प्राणदात्र्यै नमः
ॐ रतिम्भरायै नमः
ॐ महासमूहायै नमः
ॐ निखिलायै नमः
ॐ इच्छाधारायै नमः
ॐ सुखावहायै नमः
ॐ प्रत्यक्षलक्ष्म्यै नमः
ॐ निष्कम्पायै नमः
ॐ प्ररोहायै नमः
ॐ बुद्धिगोचरायै नमः 210
ॐ नानादेहायै नमः
ॐ महावर्तायै नमः
ॐ बहुदेहविकासिन्यै नमः
ॐ सहस्राण्यै नमः
ॐ प्रधानायै नमः
ॐ न्यायवस्तुप्रकाशिकायै नमः
ॐ सर्वाभिलाषपूर्णेच्छायै नमः
ॐ सर्वस्यै नमः
ॐ सर्वार्थभाषिण्यै नमः
ॐ नानास्वरूपचिद्धात्र्यै नमः 220
ॐ शब्दपूर्वायै नमः
ॐ पुरातनायै नमः
ॐ व्यक्ताव्यक्तायै नमः
ॐ जीवकेशायै नमः
ॐ सर्वेच्छापरिपूरितायै नमः
ॐ संकल्पसिद्धायै नमः
ॐ सांख्येयायै नमः
ॐ तत्त्वगर्भायै नमः
ॐ धरावहायै नमः
ॐ भूतरूपायै नमः 230
ॐ चित्स्वरूपायै नमः
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ गुणगर्वितायै नमः
ॐ प्रजापतीश्वर्यै नमः
ॐ रौद्र्यै नमः
ॐ सर्वाधारायै नमः
ॐ सुखावहायै नमः
ॐ कल्याणवाहिकायै नमः
ॐ कल्यायै नमः
ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः 240
ॐ नीरूपोद्भिन्नसंतानायै नमः
ॐ सुयन्त्रायै नमः
ॐ त्रिगुणालयायै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ योगमायायै नमः
ॐ महायोगेश्वर्यै नमः
ॐ प्रियायै नमः
ॐ महास्त्रियै नमः
ॐ विमलायै कीर्त्यै नमः
ॐ जयायै नमः 250
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ निरञ्जनायै नमः

ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ भगवन्मायायै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ निद्रायै नमः
ॐ यशस्कर्यै नमः
ॐ चिन्तायै नमः
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ यशःप्राज्ञायै नमः 260
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ आप्रीतिवर्द्धिन्यै नमः
ॐ प्रद्युम्नमात्रे नमः
ॐ साध्व्यै नमः
ॐ सुखसौभाग्यसिद्धिदायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ निष्ठायै नमः
ॐ प्रतिष्ठायै नमः
ॐ ज्येष्ठायै नमः
ॐ श्रेष्ठायै नमः 270
ॐ जयावहायै नमः
ॐ सर्वातिशायिन्यै नमः
ॐ प्रीत्यै नमः
ॐ विश्वशक्त्यै नमः
ॐ महाबलायै नमः
ॐ वरिष्ठायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ वीरायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ विजयप्रदायै नमः 280
ॐ हृद्गृहायै नमः
ॐ गोपिन्यै नमः
ॐ गुह्यायै नमः
ॐ गणगन्धर्वसेवितायै नमः
ॐ योगीश्वर्यै नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योगसिद्धिदायै नमः
ॐ महायोगेश्वरवृतायै नमः
ॐ योगायै नमः
ॐ योगेश्वरप्रियायै नमः 290
ॐ ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमितायै नमः
ॐ सुरासुरवरप्रदायै नमः
ॐ त्रिवर्त्मगायै नमः
ॐ त्रिलोकस्थायै नमः
ॐ त्रिविक्रमपदोद्भवायै नमः
ॐ सुतारायै नमः
ॐ तारिण्यै नमः
ॐ तारायै नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ संतारिण्यै नमः 300
ॐ परस्यै नमः
ॐ सुतारिण्यै नमः
ॐ तारयन्त्यै नमः
ॐ भूरितारेश्वरप्रभायै नमः
ॐ गुह्यविद्यायै नमः
ॐ यज्ञविद्यायै नमः
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ सुशोभितायै नमः
ॐ अध्यात्मविद्याविघ्नेश्यै नमः
ॐ पद्मस्थायै नमः 310
ॐ परमेष्ठिन्यै नमः
ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः
ॐ त्रयीवार्तायै नमः
ॐ दण्डनीत्यै नमः
ॐ नयात्मिकायै नमः
ॐ गौर्यै नमः



ॐ वागीश्वर्यै नमः
ॐ गोप्त्र्यै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ कमलोद्भवायै नमः 320
ॐ विश्वम्भरायै नमः
ॐ विश्वरूपायै नमः
ॐ विश्वमात्रे नमः
ॐ वसुप्रदायै नमः
ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ स्वस्त्यै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः 330
ॐ इच्छायै नमः
ॐ सृष्ट्यै नमः
ॐ द्युत्यै नमः
ॐ मूर्त्यै नमः
ॐ कीर्त्यै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ दयामत्यै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ मेधायै नमः
ॐ धृत्यै नमः 340
ॐ ह्रियै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ विबुधवन्दितायै नमः
ॐ अनसूयायै नमः
ॐ घृणायै नमः
ॐ नीत्यै नमः
ॐ निर्वृत्यै नमः
ॐ कामधुक्करायै नमः
ॐ प्रतिज्ञायै नमः 350
ॐ संतत्यै नमः
ॐ भूत्यै नमः
ॐ दिवे नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः

ॐ विश्वमानिन्यै नमः
ॐ स्मृत्यै नमः
ॐ वाग्विश्वजनन्यै नमः
ॐ पश्यन्त्यै नमः
ॐ मध्यमायै नमः
ॐ समायै नमः 360
ॐ संध्यायै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ सर्वाकारायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ कांक्षायै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ मोहिन्यै नमः
ॐ माधवप्रियायै नमः 370
ॐ सौम्यायै नमः
ॐ भोगायै नमः
ॐ महाभोगायै नमः
ॐ भोगिन्यै नमः
ॐ भोगदायिन्यै नमः
ॐ सुधौतकनकप्रख्यायै नमः
ॐ सुवर्णकमलासनायै नमः
ॐ हिरण्यगर्भायै नमः
ॐ सुश्रोण्यै नमः
ॐ हारिण्यै नमः 380
ॐ रमण्यै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ चन्द्रायै नमः
ॐ हिरण्मय्यै नमः
ॐ ज्योत्स्नायै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ शोभायै नमः
ॐ शुभावहायै नमः
ॐ त्रैलोक्यमण्डनायै नमः
ॐ नार्यै नमः 390
ॐ नरेश्वरवरार्चितायै नमः
ॐ त्रैलोक्यसुन्दर्यै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ महाविभववाहिन्यै नमः
ॐ पद्मस्थायै नमः
ॐ पद्मनिलयायै नमः
ॐ पद्ममालाविभूषितायै नमः
ॐ पद्मयुग्मधरायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ दिव्याभरणभूषितायै नमः 400
ॐ विचित्ररत्नमुकुटायै नमः
ॐ विचित्राम्बरभूषणायै नमः
ॐ विचित्रमाल्यगन्धाढ्यायै नमः
ॐ विचित्रायुधवाहनायै नमः
ॐ महानारायण्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ वीरवन्दितायै नमः
ॐ कालसंकर्षिण्यै नमः
ॐ घोरायै नमः 410
ॐ तत्त्वसंकर्षिण्यै नमः
ॐ जगत्सम्पूरण्यै नमः
ॐ विश्वस्यै नमः
ॐ महाविभवभूषणायै नमः
ॐ वारुण्यै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ व्याख्यायै नमः
ॐ घण्टाकर्णविराजितायै नमः

ॐ नृसिंह्यै नमः
ॐ भैरव्यै नमः 420
ॐ ब्राह्म्यै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ व्योमचारिण्यै नमः
ॐ ऐन्द्र्यै नमः
ॐ कामधेन्वै नमः
ॐ सृष्ट्यै नमः
ॐ कामयोन्यै नमः
ॐ महाप्रभायै नमः
ॐ दृष्टायै नमः
ॐ काम्यायै नमः 430
ॐ विश्वशक्त्यै नमः
ॐ बीजगत्यात्मदर्शनायै नमः
ॐ गरुडारूढहृदयायै नमः
ॐ चान्द्र्यै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ मधुराननायै नमः
ॐ महोग्ररूपायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः
ॐ हतासुरायै नमः 440
ॐ युगान्तहुतभुग्ज्वालायै नमः
ॐ करालायै नमः
ॐ पिंगलायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ त्रैलोक्यभूषणायै नमः
ॐ श्यामायै नमः
ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै नमः
ॐ महोत्कटायै नमः
ॐ महारक्तायै नमः
ॐ महाचण्डायै नमः 450
ॐ महासनायै नमः
ॐ शंखिन्यै नमः
ॐ लेखिन्यै नमः
ॐ स्वस्थालिखितायै नमः
ॐ खेचरेश्वर्यै नमः
ॐ भद्रकाल्यै नमः
ॐ एकवीरायै नमः
ॐ कौमार्यै नमः
ॐ भवमालिन्यै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः 460
ॐ कामधुग्ज्वालामुख्यै नमः
ॐ उत्पलमालिकायै नमः
ॐ बालिकायै नमः
ॐ धनदायै नमः
ॐ सूर्यायै नमः
ॐ हृदयोत्पलमालिकायै नमः
ॐ अजितायै नमः
ॐ वर्षिण्यै नमः
ॐ रीत्यै नमः
ॐ भरुण्डायै नमः 470
ॐ गरुडासनायै नमः
ॐ वैश्वानर्यै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ विभीषणायै नमः
ॐ महामन्दारविभवायै नमः
ॐ शिवानन्दायै नमः
ॐ रतिप्रियायै नमः
ॐ उद्रीत्यै नमः
ॐ पद्ममालायै नमः 480
ॐ धर्मवेगायै नमः
ॐ विभावन्यै नमः

ॐ सत्क्रियायै नमः
ॐ देवसेनायै नमः
ॐ हिरण्यरजताश्रयायै नमः
ॐ सहसावर्तमानायै नमः
ॐ हस्तिनादप्रमोदिन्यै नमः
ॐ हिरण्यपद्मवर्णायै नमः
ॐ हरिभद्रायै नमः
ॐ सुदुर्धरायै नमः 490
ॐ हिरण्यप्रकटसदृश्यै नमः
ॐ हेममालिन्यै नमः
ॐ पद्माननायै नमः
ॐ नित्यपुष्टायै नमः
ॐ देवमात्रे नमः
ॐ अमृतोद्भवायै नमः
ॐ महाधनायै नमः
ॐ श्रृंगयै नमः
ॐ कार्दम्यै नमः
ॐ कम्बुकन्धरायै नमः 500
ॐ आदित्यवर्णायै नमः
ॐ चन्द्राभायै नमः
ॐ गन्धद्वारायै नमः
ॐ दुरासदायै नमः
ॐ वरार्चितायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ वरेण्यायै नमः
ॐ विष्णुवल्लभायै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः
ॐ वरदायै नमः 510
ॐ वामायै नमः
ॐ वामेश्यै नमः
ॐ विन्ध्यवासिन्यै नमः
ॐ योगनिद्रायै नमः
ॐ योगरतायै नमः
ॐ देवक्यै नमः
ॐ कामरूपिण्यै नमः
ॐ कंसविद्राविण्यै नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ कौमार्यै नमः 520
ॐ कौशिक्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ कालरात्र्यै नमः
ॐ निशितृप्तायै नमः
ॐ सुदुर्जयायै नमः
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ विशालाक्ष्यै नमः
ॐ भक्तानां परिरक्षिण्यै नमः
ॐ बहुरूपायै नमः 530
ॐ स्वरूपायै नमः
ॐ विरूपायै नमः
ॐ रूपवर्जितायै नमः
ॐ घण्टानिनादबहुलायै नमः
ॐ जीमूतध्वनिनिःस्वनायै नमः
ॐ महादेवेन्द्रमथिन्यै नमः
ॐ भ्रुकुटीकुटिलाननायै नमः
ॐ सत्योपयाचितायै नमः
ॐ एकस्यै नमः
ॐ कौबेर्यै नमः 540
ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः
ॐ आर्यायै नमः
ॐ यशोदायै नमः
ॐ सुतदायै नमः
ॐ धर्मकामार्थमोक्षदायै नमः
ॐ दारिद्र्यदुःखशमन्यै नमः

ॐ घोरदुर्गार्तिनाशिन्यै नमः
ॐ भक्तार्तिशमन्यै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ भवभर्गापहारिण्यै नमः 550
ॐ क्षीराब्धितनयायै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ धरणीधरायै नमः
ॐ रुक्मिण्यै नमः
ॐ रोहिण्यै नमः
ॐ सीतायै नमः
ॐ सत्यभामायै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः
ॐ प्रज्ञाधारायै नमः 560
ॐ अमितप्रज्ञायै नमः
ॐ वेदमात्रे नमः
ॐ यशोवत्यै नमः
ॐ समाधये नमः
ॐ भावनायै नमः
ॐ मैत्र्यै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ भक्तवत्सलायै नमः
ॐ अन्तर्वेद्यै नमः
ॐ दक्षिणस्यै नमः 570
ॐ ब्रह्मचर्यपरायै नमः
ॐ गत्यै नमः
ॐ दीक्षायै नमः
ॐ वीक्षायै नमः
ॐ परीक्षायै नमः
ॐ समीक्षायै नमः
ॐ वीरवत्सलायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ सुरभ्यै नमः
ॐ सिद्धायै नमः 580
ॐ सिद्धविद्याधरार्चितायै नमः
ॐ सुदीक्षायै नमः
ॐ लेलिहानायै नमः
ॐ करालायै नमः
ॐ विश्वपूरकायै नमः
ॐ विश्वसंधारिण्यै नमः
ॐ दीप्त्यै नमः
ॐ तापन्यै नमः
ॐ ताण्डवप्रियायै नमः
ॐ उद्भवायै नमः 590
ॐ विरजायै नमः
ॐ राज्ञ्यै नमः
ॐ बिन्दुमालिन्यै नमः
ॐ क्षीरधारायै नमः
ॐ सुप्रभावायै नमः
ॐ लोकमात्रे नमः
ॐ सुवर्चसायै नमः
ॐ हव्यगर्भायै नमः
ॐ आज्यगर्भायै नमः
ॐ जुह्वतो यज्ञसम्भवायै नमः 600
ॐ आप्यायन्यै नमः
ॐ पावन्यै नमः
ॐ दहन्यै नमः
ॐ दहनाश्रयायै नमः
ॐ मातृकायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ मुख्यायै नमः
ॐ मोक्षलक्ष्म्यै नमः
ॐ महर्द्धिदायै नमः
ॐ सर्वकामप्रदायै नमः 610

ॐ भद्रायै नम:
ॐ सुभद्रायै नम:
ॐ सर्वमंगलायै नम:
ॐ श्वेतायै नम:
ॐ सुशुक्लवसनायै नम:
ॐ शुक्लमाल्यानुलेपनायै नम:
ॐ हंसाहीनकर्यै नम:
ॐ हंस्यै नम:
ॐ हृद्यायै नम:
ॐ हृत्कमलालयायै नम: 620
ॐ सितातपत्रायै नम:
ॐ सुश्रोण्यै नम:
ॐ पद्मपत्रायतेक्षणायै नम:
ॐ सावित्र्यै नम:
ॐ सत्यसंकल्पायै नम:
ॐ कामदायै नम:
ॐ कामकामिन्यै नम:
ॐ दर्शनीयायै नम:
ॐ दृशायै नम:
ॐ दृश्यायै नम: 630
ॐ स्पृश्यायै नम:
ॐ सेव्यायै नम:
ॐ वरांगनायै नम:
ॐ भोगप्रियायै नम:
ॐ भोगवत्यै नम:
ॐ भोगीन्द्रशयनासनायै नम:
ॐ आर्द्रायै नम:
ॐ पुष्करिण्यै नम:
ॐ पुण्यायै नम:
ॐ पापसूदन्यै नम: 640
ॐ श्रीमत्यै नम:
ॐ शुभाकारायै नम:
ॐ परमैश्वर्यभूतिदायै नम:
ॐ अचिन्त्यानन्तविभवायै नम:
ॐ भवभावविभावन्यै नम:
ॐ निश्रेण्यै नम:
ॐ सर्वदेहस्थायै नम:
ॐ सर्वभूतनमस्कृतायै नम:
ॐ बलायै नम:
ॐ बलाधिकायै नम: 650
ॐ देव्यै गौतम्यै नम:
ॐ गोकुलालयायै नम:
ॐ तोषिण्यै नम:
ॐ पूर्णचन्द्राभायै नम:
ॐ एकानन्दायै नम:
ॐ शताननायै नम:
ॐ उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिन्यै नम:
ॐ कूष्माण्डायै नम:
ॐ दारुणायै नम:
ॐ चण्डायै नम: 660
ॐ किरात्यै नम:
ॐ नन्दनालयायै नम:
ॐ कालायनायै नम:
ॐ कालगम्यायै नम:
ॐ भयदायै नम:
ॐ भयनाशिन्यै नम:
ॐ सौदामन्यै नम:
ॐ मेघरवायै नम:
ॐ दैत्यदानवमर्दिन्यै नम:
ॐ जगन्मात्रे नम: 670
ॐ अभयकर्यै नम:
ॐ भूतधर्त्र्यै नम:
ॐ सुदुर्लभायै नम:
ॐ काश्यप्यै नम:

ॐ शुभदात्र्यै नमः
ॐ वनमालायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ वरायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धन्येश्वर्यै नमः 680
ॐ रत्नदायै नमः
ॐ वसुवर्धिन्यै नमः
ॐ गान्धर्व्यै नमः
ॐ रेवत्यै नमः
ॐ गंगायै नमः
ॐ शकुन्यै नमः
ॐ विमलाननायै नमः
ॐ इडायै नमः
ॐ शान्तिकर्यै नमः
ॐ तामस्यै नमः 690
ॐ कमलालयायै नमः
ॐ आज्यपायै नमः
ॐ वज्रकौमार्यै नमः
ॐ सोमपायै नमः
ॐ कुसुमाश्रयायै नमः
ॐ जगत्प्रियायै नमः
ॐ सरथायै नमः
ॐ दुर्जयायै नमः
ॐ खगवाहनायै नमः
ॐ मनोभवायै नमः 700
ॐ कामचारायै नमः
ॐ सिद्धचारणसेवितायै नमः
ॐ व्योमलक्ष्म्यै नमः
ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ तेजोलक्ष्म्यै नमः
ॐ सुजाज्वलायै नमः
ॐ रसलक्ष्म्यै नमः
ॐ जगद्योन्यै नमः
ॐ गन्धलक्ष्म्यै नमः
ॐ वनाश्रयायै नमः 710
ॐ श्रवणायै नमः
ॐ श्रावण्यै नमः
ॐ नेत्र्यै नमः
ॐ रसनाप्राणचारिण्यै नमः
ॐ विरिञ्चिमात्रे नमः
ॐ विभवायै नमः
ॐ वरवारिजवाहनायै नमः
ॐ वीर्यायै नमः
ॐ वीरेश्वर्यै नमः
ॐ वन्द्यायै नमः 720
ॐ विशोकायै नमः
ॐ अनाहतायै नमः
ॐ कुण्डलिन्यै नमः
ॐ नलिन्यै नमः
ॐ वनवासिन्यै नमः
ॐ गान्धारिण्यै नमः
ॐ इन्द्रनमितायै नमः
ॐ सुरेन्द्रनमितायै नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ सर्वमंगल्यमांगल्यायै नमः 730
ॐ सर्वकामसमृद्धिदायै नमः
ॐ सर्वानन्दायै नमः
ॐ महानन्दायै नमः
ॐ सत्कीर्त्यै नमः
ॐ सिद्धसेवितायै नमः
ॐ सिनीवाल्यै नमः
ॐ कुह्वै नमः
ॐ राकायै नमः



ॐ अमायै नमः
ॐ अनुमत्यै नमः 740
ॐ द्युत्यै नमः
ॐ अरुन्धत्यै नमः
ॐ वसुमत्यै नमः
ॐ भार्गव्यै नमः
ॐ वास्तुदेवतायै नमः
ॐ मायूर्यै नमः
ॐ वज्रवेताल्यै नमः
ॐ वज्रहस्तायै नमः
ॐ वराननायै नमः
ॐ अनघायै नमः 750
ॐ धरण्यै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ धमन्यै नमः
ॐ मणिभूषणायै नमः
ॐ राजश्रियै नमः
ॐ रूपसहितायै नमः
ॐ ब्रह्मश्रियै नमः
ॐ ब्रह्मवन्दितायै नमः

ॐ जयश्रियै नमः
ॐ जयदायै नमः 760
ॐ ज्ञेयायै नमः
ॐ सर्गश्रियै नमः
ॐ सतां स्वर्गत्यै नमः
ॐ सुपुष्पायै नमः
ॐ पुष्पनिलयायै नमः
ॐ फलश्रियै नमः
ॐ निष्कलप्रियायै नमः
ॐ धनुर्लक्ष्म्यै नमः
ॐ अमिलितायै नमः
ॐ परक्रोधनिवारिण्यै नमः 770
ॐ कद्रवे नमः
ॐ धनायुषे नमः
ॐ कपिलायै नमः
ॐ सुरसायै नमः
ॐ सुरमोहिन्यै नमः
ॐ महाश्वेतायै नमः
ॐ महानीलायै नमः
ॐ महामूर्त्यै नमः

ॐ विषापहायै नमः
ॐ सुप्रभायै नमः 780
ॐ ज्वालिन्यै नमः
ॐ दीप्त्यै नमः
ॐ तृप्त्यै नमः
ॐ व्याप्त्यै नमः
ॐ प्रभाकर्यै नमः
ॐ तेजोवत्यै नमः
ॐ पद्मबोधायै नमः
ॐ मदलेखायै नमः
ॐ अरुणावत्यै नमः
ॐ रत्नायै नमः 790
ॐ रत्नावल्यै नमः
ॐ भूतायै नमः
ॐ शतधाम्ने नमः
ॐ शतापहायै नमः
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ घोषिण्यै नमः
ॐ रक्ष्यायै नमः
ॐ नर्दिन्यै नमः
ॐ घोषवर्जितायै नमः
ॐ साध्यायै नमः 800
ॐ अदित्यै नमः
ॐ दित्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ मृगवाहायै नमः
ॐ मृगांकगायै नमः
ॐ चित्रनीलोत्पलगतायै नमः
ॐ वृषरत्नकराश्रयायै नमः
ॐ हिरण्यरजतद्वन्द्वायै नमः
ॐ शंखभद्रासनस्थितायै नमः
ॐ गोमूत्र-गोमय-क्षीर-दधि-
सर्पिर्जलाश्रयायै नमः 810
ॐ मरीच्यै नमः
ॐ चीरवसनायै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ चन्द्रार्कविष्टरायै नमः
ॐ सुसूक्ष्मायै नमः
ॐ निर्वृत्यै नमः
ॐ स्थूलायै नमः
ॐ निवृत्तारात्यै नमः
ॐ धूम्रायै नमः
ॐ हव्यवाहायै नमः 820
ॐ हिरण्यदायै नमः
ॐ दायिन्यै नमः
ॐ कालिन्यै नमः
ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ शोषिण्यै नमः
ॐ सम्प्रबोधिन्यै नमः
ॐ भास्वरायै नमः
ॐ संहत्यै नमः
ॐ तीक्ष्णायै नमः
ॐ प्रचण्डज्वलनायै नमः 830
ॐ उज्ज्वलायै नमः
ॐ सांगायै नमः
ॐ प्रचण्डायै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ वैद्युत्यै नमः
ॐ सुमहाद्युत्यै नमः
ॐ कपिलायै नमः
ॐ नीलरक्तायै नमः
ॐ सुषुम्णायै नमः
ॐ विस्फुलिंगिन्यै नमः 840
ॐ अर्चिष्मत्यै नमः

ॐ रिपुहरायै नमः
ॐ दीर्घायै नमः
ॐ धूमावल्यै नमः
ॐ जरायै नमः
ॐ सम्पूर्णमण्डलायै नमः
ॐ पूषायै नमः
ॐ स्रंसिन्यै नमः
ॐ सुमनोहरायै नमः
ॐ जयायै नमः 850
ॐ पुष्टिकर्यै नमः
ॐ छायायै नमः
ॐ मानसायै नमः
ॐ हृदयोज्ज्वलायै नमः
ॐ सुवर्णकरण्यै नमः
ॐ श्रेष्ठायै नमः
ॐ रणे मृतसंजीवन्यै नमः
ॐ विशल्यकरण्यै नमः
ॐ शुभ्रायै नमः
ॐ संधिन्यै नमः 860
ॐ परमौषधये नमः
ॐ ब्रह्मिष्ठायै नमः
ॐ ब्रह्मसहितायै नमः
ॐ ऐन्दव्यै नमः
ॐ रत्नसम्भवायै नमः
ॐ विद्युत्प्रभायै नमः
ॐ बिन्दुमत्यै नमः
ॐ त्रिस्वभावागुणाम्बिकायै नमः
ॐ नित्योदितायै नमः
ॐ नित्यहृष्टायै नमः 870
ॐ नित्यकामकरीषिण्यै नमः
ॐ पद्मांकायै नमः
ॐ वज्रचिह्नायै नमः
ॐ वक्रदण्डविभासिन्यै नमः
ॐ विदेहपूजितायै नमः
ॐ कन्यायै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ विजयवाहिन्यै नमः
ॐ मानिन्यै नमः
ॐ मंगलायै नमः 880
ॐ मान्यायै नमः
ॐ मानदायिन्यै नमः
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ गणवत्यै नमः
ॐ मण्डलायै नमः
ॐ मण्डलेश्वर्यै नमः
ॐ हरिप्रियायै नमः
ॐ भौमसुतायै नमः
ॐ मनोज्ञायै नमः
ॐ मतिदायिन्यै नमः 890
ॐ प्रत्यंगिरायै नमः
ॐ सोमगुप्तायै नमः
ॐ मनोऽभिज्ञायै नमः
ॐ वदन्मत्यै नमः
ॐ यशोधरायै नमः
ॐ रत्नमालायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ त्रैलोक्यबन्धन्यै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ धारिण्यै नमः 900
ॐ हर्षायै नमः
ॐ विनतायै नमः
ॐ वल्लक्यै नमः
ॐ शच्यै नमः
ॐ संकल्पायै नमः

ॐ भामिन्यै नमः
ॐ मिश्रायै नमः
ॐ कादम्बर्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ अगतायै नमः 910
ॐ निर्गतायै नमः
ॐ वज्रायै नमः
ॐ सुहितायै नमः
ॐ सहितायै नमः
ॐ अक्षतायै नमः
ॐ सर्वार्थसाधनकर्यै नमः
ॐ धातुर्धारणिकायै नमः
ॐ अमलायै नमः
ॐ करुणाधारसम्भूतायै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः 920
ॐ शशिप्रियायै नमः
ॐ सौम्यरूपायै नमः
ॐ महादीप्तायै नमः
ॐ महाज्वालायै नमः
ॐ विकाशिन्यै नमः
ॐ मालायै नमः
ॐ काञ्चनमालायै नमः
ॐ सद्वज्रायै नमः
ॐ कनकप्रभायै नमः
ॐ प्रक्रियायै नमः 930
ॐ परमायै नमः
ॐ योक्त्र्यै नमः
ॐ क्षोभिकायै नमः
ॐ सुखोदयायै नमः
ॐ विजृम्भणायै नमः
ॐ वज्राख्यायै नमः
ॐ शृंखलायै नमः
ॐ कमलेक्षणायै नमः
ॐ जयंकर्यै नमः
ॐ मधुमत्यै नमः 940
ॐ हरितायै नमः
ॐ शशिन्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः
ॐ ईशान्यै नमः
ॐ योगमात्रे नमः
ॐ मनोजवायै नमः
ॐ धर्मोदयायै नमः
ॐ भानुमत्यै नमः
ॐ सर्वाभासायै नमः 950
ॐ सुखावहायै नमः
ॐ धुरन्धरायै नमः
ॐ बालायै नमः
ॐ धर्मसेव्यायै नमः
ॐ तथागतायै नमः
ॐ सुकुमारायै नमः
ॐ सौम्यमुख्यै नमः
ॐ सौम्यसम्बोधनायै नमः
ॐ उत्तमायै नमः
ॐ सुमुख्यै नमः 960
ॐ सर्वतोभद्रायै नमः
ॐ गुह्यशक्त्यै नमः
ॐ गुहालयायै नमः
ॐ हलायुधायै नमः
ॐ एकवीरायै नमः
ॐ सर्वशस्त्रसुधारिण्यै नमः
ॐ व्योमशक्त्यै नमः
ॐ महादेहायै नमः
ॐ व्योमगायै नमः

ॐ मधुमन्मय्यै नमः 970
ॐ गंगायै नमः
ॐ वितस्तायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ चन्द्रभागायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ तिलोत्तमायै नमः
ॐ उर्वश्यै नमः
ॐ रम्भायै नमः
ॐ स्वामिन्यै नमः
ॐ सुरसुन्दर्यै नमः 980
ॐ बाणप्रहरणायै नमः
ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
ॐ चारुहासिन्यै नमः
ॐ ककुद्मिन्यै नमः
ॐ चारुपृष्ठायै नमः

ॐ दृष्टादृष्टफलप्रदायै नमः
ॐ काम्याचर्यै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कामाचारविहारिण्यै नमः
ॐ हिमशैलेन्द्रसंकाशायै नमः 990
ॐ गजेन्द्रवरवाहनायै नमः
ॐ अशेषसुखसौभाग्यसम्पदामुत्तमायै योन्यै नमः
ॐ सर्वोत्कृष्टायै नमः
ॐ सर्वमय्यै नमः
ॐ सर्वस्यै नमः
ॐ सर्वेश्वरप्रियायै नमः
ॐ सर्वांगयोन्यै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ सम्प्रधानेश्वरेश्वर्यै नमः
ॐ विष्णुवक्षःस्थलगतायै नमः 1000



श्रीलक्ष्मीनारायण जी की आरती

जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय लक्ष्मीनारायण, जय लक्ष्मी विष्णो।
जय माधव जय श्रीपति, जै जै जै विष्णो॥

जय चम्पा सम वर्णे जय नीरदकान्ते।
जय मन्दस्मित शोभे जय अद्‌भुत शांते॥

कमल वराभय हस्ते शंखादिकधारिन्।
जय कमलालयवासिनि गरुडासनचारिन्॥

सच्चिन्मयकरचरणे सच्चिन्मयमूर्ते।
दिव्यानन्द बलासिनि जय सुखमयमूर्ते॥

तुम त्रिभुवन की माता, तुम सबके त्राता।
तुम लोक त्रय जननी, तुम सबके धाता॥

तुम धन जन सुख संतति जय देने वाली।
परमानन्द विधाता तुम हो वनमाली॥

तुम हो सुमति घरों में, तुम सबके स्वामी।
चेतन और अचेतन के अन्तर्यामी॥

शरणागत हूँ, मुझपर कृपा करो माता।
जय लक्ष्मी नारायण नव मंगल दाता॥



श्रीलक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु-धाता॥ ॐ॥

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥

दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥ ॐ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ ॐ॥

जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ॐ॥

शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ॥

महालक्ष्मी जी की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥



श्री गंगा-आरती

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता (x2), मनवांछित पाता॥
ॐ जय गंगे माता ॥

चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया (x2),
शरण पड़े जो तेरी (x2), सो नर तर जाता॥
ॐ जय गंगे माता ॥

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया (x2),
कृपा-दृष्टि तुम्हारी (x2), त्रिभुवन सुखदाता॥
ॐ जय गंगे माता ॥

एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता, मैया (x2),
यम की त्रास मिटाकर (x2), परम गति पाता॥
ॐ जय गंगे माता ॥

आरती मातु तुम्हारी, जो कोई नर गाता, मैया (x2),
दास वही सहज में, भक्त वही सहज में, मुक्ति को पाता॥
ॐ जय गंगे माता ॥




नारायण
स्तोत्र

पुरुष-सूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्-दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेदँ सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति। एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥1॥

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहा भवात्पुनः। ततो विष्वंव्यक्रामत्। साशनानशने अभि। तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥2॥

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मश्शरद्धविः सप्तास्यासन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं पशुम्। तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः ॥3॥

तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत ॥4॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः। यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। का वूरू पादावुच्येते। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः ॥5॥

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्याँ शूद्रो अजायत। चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥6॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तुपारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते। धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान्-प्रदिशश्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥7॥



अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। प्रजापति-श्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते ॥8॥

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः। यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये। रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे ॥ 9॥

ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण ॥10॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

नारायण-सूक्तम्

ॐ ॥ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्। विश्वत: परमान्नित्यं विश्वं नारायण~हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुष-स्तद्विश्व-मुपजीवति॥1॥ पतिं विश्वस्यात्मेश्वर~शाश्वत~शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥ 2॥ नारायण: परो ज्योतिरात्मा नारायण: पर:। नारायणपरं ब्रह्म तत्त्वं-नारायण: पर:। नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायण: पर: ॥3॥ यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा। अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायण: स्थित: ॥4॥

अनन्तमव्ययं कवि~समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम्। पद्मकोश-प्रतीकाश~हृदयं चाप्यधोमुखम् ॥ 5॥ अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति। ज्वालमालाकुलं भाती विश्वस्यायतनं महत् ॥6॥ सन्तत~शिलाभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभम्। तस्यान्ते सुषिर~सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥7॥ तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चि-र्विश्वतोमुख:। सोऽग्रभुग्विभजन्तिष्ठ-न्नाहारमजर: कवि: ॥8॥

तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयस्तस्य सन्तता। सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तक:। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थित: ॥9॥ नीलतो-यदमध्य-स्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा ॥10॥ तस्या: शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थित:। स ब्रह्म स शिव: स हरि: सेन्द्र: सोऽक्षर: परम: स्वराट् ॥11॥

ऋत~सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिंगलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नम:॥ ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु: प्रचोदयात्॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



विष्णु-सूक्तम्

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थि वानि विममे रजा॑ँसि यो अस्कभायदुत्तर॑ँ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधो रुगायो विष्णोरराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोस्स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

तदस्य प्रियमभिपाथो अश्याम्। नरो यत्र देवयवोमदन्ति। उरुक्रमस्य सहिबन्धुरित्था। विष्णोः पदे परमे मध्व उथ्सः। प्रतद्विष्णु स्स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। परो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति॥

उभेते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देवत्वम्। परमस्य विथ्से। विचक्रमे पृथिवी मेष एताम्। क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासो अस्य कीरयो जनासः। ऊरुक्षिति॑ँ सुजनिमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्रविष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्। त्वेषग्ग्ह्यस्य स्थविरस्य नाम॥

अतो देवा अवन्तुनो यतो विष्णु-र्विचक्रमे। पृथिव्यास्सप्तधामभिः। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा॑ँ सुरे। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। ततो धर्माणि धारयन्। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यस्सखा॥

तद्विष्णोः परमं पद॑ँ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवा॑ँ सस्समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

पर्याप्त्या अनन्तरायाय सर्वस्तोमोऽति रात्र उत्तममहर्भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्यजित्त्यै सर्वमेव तेनाप्नोति सर्वं जयति॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

नारायणोपनिषत्

ॐ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते। मनः सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणात् ब्रह्मा जायते। नारायणाद्-रुद्रो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणात्प्रजापतयः प्रजायन्ते। नारायणाद्द्वादशादित्या रुद्रा वसवस्सर्वाणि च छन्दाꣳसि। नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणे प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते॥

ओम्। अथ नित्यो नारायणः। शिवश्च नारायणः। शक्रश्च नारायणः। द्यावापृथिव्यौ च नारायणः। कालश्च नारायणः। दिशश्च नारायणः। ऊर्ध्वश्च नारायणः। अधश्च नारायणः। अन्तर्बहिश्च नारायणः। नारायण एवेदꣳ सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। निष्कलो निरंजनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणः। न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्। य एवं वेद। स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति॥

ओमित्यग्रे व्याहरेत्। नम इति पश्चात्। नारायणायेत्युपरिष्टात्। ओमित्येकाक्षरम्। नम इति द्वे अक्षरे। नारायणायेति पञ्चाक्षराणि। एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम्। यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति। अनपब्रुवस्सर्वमायुरेति। विन्दते प्राजापत्यꣳ रायस्पोषं गौपत्यम्। ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति। य एवं वेद॥

प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणवस्वरूपम्। अकार उकार मकार इति। तानेकधा समभारत्तदेतदोमिति। यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात्। ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः। वैकुण्ठभवनलोकं गमिष्यति। तदिदं परं पुण्डरीकं विज्ञानघनम्। तस्मात्तदिदावन्मात्रम्। ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनोम्। सर्वभूतस्थमेकं नारायणम्। कारणरूपमकार परब्रह्मोम्। एतदथर्व शिरोयोधीते प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। माध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चपातकोपपातकात्प्रमुच्यते। सर्ववेद पारायण पुण्यं लभते। नारायणसायुज्यमवाप्नोति नारायण सायुज्यमवाप्नोति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्रीविष्णोः प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम्॥1॥

प्रातर्नमामि मनसा वचसा व मूर्ध्ना
पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य
पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य॥2॥

प्रातर्भजामि भजतामभयंकरं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै।
यो ग्राहवक्त्रपतितांघ्रिगजेन्द्रघोर-
शोकप्रणाशनकरो धृतशंखचक्रः॥3॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



शिवकृता श्रीविष्णुस्तुतिः

नमस्ते देवतानाथ नमस्ते गरुडध्वज।
शंखचक्रगदापाणे वासुदेव नमोऽस्तु ते॥1॥

नमस्ते निर्गुणानन्त अप्रतर्क्याय वेधसे।
ज्ञानाज्ञान निरालम्ब सर्वालम्ब नमोऽस्तु ते॥2॥

रजोयुक्त नमस्तेऽस्तु ब्रह्ममूर्ते सनातन।
त्वया सर्वमिदं नाथ जगत्सृष्टं चराचरम्॥3॥

सत्त्वाधिष्ठित लोकेश विष्णुमूर्ते अधोक्षज।
प्रजापाल महाबाहो जनार्दन नमोऽस्तु ते॥4॥

तमोमूर्ते अहं ह्येष त्वदंशक्रोधसम्भवः।
गुणाभियुक्तो देवेश सर्वव्यापिन्नमोऽस्तु ते॥5॥

भूरियं त्वं जगन्नाथ जलम्बरपावकौ।
वायुर्बुद्धिर्मनश्चापि शर्वरी त्वं नमोऽस्तु ते॥6॥

धर्मो यज्ञस्तपः सत्यमहिंसा शौचमार्जवम्।
क्षमा दानं दया लक्ष्मीर्ब्रह्मचर्यं त्वमीश्वर॥7॥

त्वं हि सांगाश्चतुर्वेदास्त्वं वेद्यो वेदपाणयः।
उपवेदो भवानीश सर्वोऽसि त्वं नमोऽस्तु ते॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



ब्रह्माकृता श्रीविष्णुस्तुतिः

नमामि सर्वं सर्वेशमनन्तमजमव्ययम्।
लोकधाम धराधारामप्रकाशमभेदिनम्॥1॥
नारायणमणीयांसमशेषाणामणीयसाम्।
समस्तानां गरिष्ठं च भूरादीनां गरीयसाम्॥2॥
यत्र सर्वं यतः सर्वमुत्पन्नं मत्पुरस्सरम्।
सर्वभूतश्च यो देवः पराणामपि यः परः॥3॥
परः परस्मात् पुरुषात् परमात्मस्वरूपधृक्।
योगिभिश्चिन्त्यते योऽसौ मुक्तिहेतोर्मुमुक्षुभिः॥4॥
सत्त्वादयो न सन्तीशे यत्र चा प्राकृता गुणाः।
स शुद्धः सर्वशुद्धेभ्यः पुमानाद्यः प्रसीदतु॥5॥
कलाकाष्ठामुहूर्त्तादिकालसूत्रस्य गोचरे।
यस्य शक्तिर्न शुद्धस्य स नो विष्णुः प्रसीदतु॥6॥
प्रोच्यते परमेशो हि यः शुद्धोऽप्युपचारतः।
प्रसीदतु स नो विष्णुरात्मा यः सर्वदेहिनाम्॥7॥
यः कारणं च कार्यं च कारणस्यापि कारणम्।
कार्यस्यापि च यः कार्यं प्रसीदतु स नो हरिः॥8॥
भोक्तारं भोग्यभूतं च स्त्रष्टारं सृज्यमेव च।
कार्यकर्तृस्वरूपं तं प्रणताः स्म परं पदम्॥9॥
विशुद्धबोधवन्नित्यमजमक्षयमव्ययम्।
अव्यक्तमविकारं यत्तद्विष्णोः परमं पदम्॥10॥
न स्थूलं न च सूक्ष्मं यन्न विशेषणगोचरम्।
तत्पदं परमं विष्णोः प्रणमामः सदामलम्॥11॥
यद्योगिनः सदोद्युक्ताः पुण्यपापक्षयेऽक्षयम्।
पश्यन्ति प्रणवे चिन्त्यं तद्विष्णोः परमं पदम्॥12॥
यन्न देवा न मुनयो न चाहं न च शंकरः।
जानन्ति परमेशस्य तद्विष्णोः परमं पदम्॥13॥
शक्तयो यस्य देवस्य ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाः।
भवन्त्यभूतपूर्वस्य तद्विष्णोः परमं पदम्॥14॥
सर्वेश सर्वभूतात्मन् सर्व सर्वाश्रयाच्युत।
प्रसीद विष्णो भक्तानां व्रज नो दृष्टिगोचरम्॥15॥

नारदकृता श्रीविष्णुस्तुतिः

नमः पराय देवाय परस्मात्परमाय च।
परावर निवासाय सगुणायागुणाय च ॥1॥

अमायायात्मसंज्ञाय मायिने विश्वरूपिणे।
योगीश्वराय योगाय योगगम्याय विष्णवे॥2॥

ज्ञानाय ज्ञानगम्याय सर्वज्ञानैकहेतवे।
ज्ञानेश्वराय ज्ञेयाय ज्ञात्रे विज्ञानसंपदे॥3॥

ध्यानाय ध्यानगम्याय ध्यातृपापहराय च।
ध्यानेश्वराय सुधिये ध्येयध्यातृस्वरूपिणे॥4॥

आदित्यचन्द्राग्निविधातृदेवाः
सिद्धाश्च यक्षासुरनागसंघाः।
यच्छक्तियुक्तास्तमजं पुराणं
सत्यं स्तुतीशं सततं नतोऽस्मि॥5॥

यो ब्रह्मरूपी जगतां विधाता
स एव पाता द्विजविष्णुरूपी।
कल्पान्तरुद्राख्यतमुः स देवः
शेतेंऽघ्रिपानस्तमजं भजामि॥6॥

यन्नामसंकीर्त्तनतो गजेन्द्रो
ग्राहोग्रबन्धान्मुमुचे स देवः।
विराजमानः स्वपदे पराख्ये
तं विष्णुमाद्यं शरणं प्रपद्ये॥7॥

शिवस्वरूपी शिवभक्ति भाजां
यो विष्णुरूपी हरिभावितानाम्।
संकल्पपूर्वात्मकदेहहेतुः
तमेव नित्यं शरणं प्रपद्ये॥8॥

यः केशिहन्ता नरकान्तकश्च
बालो भुजाग्रेण दधार गोत्रम्।
देवं च भूभारविनोदशीलं
तं वासुदेवं सततं नतोऽस्मि॥9॥

लेभेऽवतीर्योग्रनृसिंहरूपी
यो दैत्यवक्षः कठिनं शिलावत्।
विदार्य संरक्षितवान्स्वभक्तं
प्रह्लादमीशं तमजं नमामि॥10॥

व्योमादिभिर्भूषितमात्मसंज्ञं
निरंजनं नित्यममेयतत्त्वम्।
जगद्विधातारमकर्मकं च
परं पुराणं पुरुषं नतोऽस्मि॥11॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रानिलवायुमर्त्य-
गन्धर्वयक्षासुरदेवसंघैः।
स्वमूर्तिभेदैः स्थित एक ईशः
तमादिमात्मानमहं भजामि॥12॥

यतो भिन्नमिदं सर्वं समुद्भूतं स्थितं च वै।
यस्मिन्नेष्यति पश्चाच्च तमस्मि शरणं गतः॥13॥

यः स्थितो विश्वरूपेण संगीवात्र प्रतीयते।
असंगी परिपूर्णश्च तमस्मि शरणं गतः॥14॥

हृदि स्थितोऽपि यो देवो मायया मोहितात्मनाम्।
न ज्ञायेत परः शुद्धस्तमस्मि शरणं गतः॥15॥

सर्वसंगनिवृत्तानां ध्यानयोगरतात्मनाम्।
सर्वत्र भाति ज्ञानात्मा तमस्मि शरणं गतः॥16॥

दधार मंदरं पृष्ठे निरोदेऽमृतमन्थने।
देवतानां हितार्थाय तं कूर्मं शरणं गतः॥17॥

दंष्ट्रांकुरेण योऽनन्तः समुद्धृत्यार्णवाद्धराम्।
तस्थाविदं जगत्कृत्स्नं वाराहं तं नतोऽस्म्यहम्॥18॥

प्रह्लादं गोपयन्दैत्यं शिलातिकठिनोरसम्।
विदार्य हतावान्यो हि तं नृसिंहं नतोऽस्म्यहम्॥19॥

लब्ध्वा वैरोचनेर्भूमिं द्वाभ्यां पद्भ्यामतीत्य यः।
आब्रह्मभुवनं पादात्सुरेभ्यस्तं नतोऽजितम्॥20॥

हैहयस्यापराधेन ह्येकविंशतिसंख्यया।
क्षत्रियान्वयभेत्ता यो जामदग्न्यं नतोऽस्मि तम्॥21॥

आविर्भूतश्चतुर्द्धा यः कपिभिः परिवारितः।
हतवान्राक्षसानीकं रामचन्द्रं नतोऽस्म्यहम्॥22॥

मूर्तिद्वयं समाश्रित्य भूभारमपहृत्य च।
संजहार कुलं स्वं यस्तं श्रीकृष्णमहं भजे॥23॥

भूम्यादिलोकत्रितयं संतृप्तात्मानमात्मनि।
पश्यन्ति निर्मलं शुद्धं तमीशानं भजाम्यहम्॥24॥

युगान्ते पापिनो शुद्धान्भित्त्वा तीक्ष्णसुधारया।
स्थापयामास यो धर्मं कृतादौ तन्नमाम्यहम्॥25॥

एवमादीन्यनेकानि यस्य रूपाणि पाण्डवाः।
न शक्यं तेन संख्यातुं कोट्यब्दैरपि तं भजे॥26॥

महिमानं तु यन्नाम्नः परं गंतुं मुनीश्वराः।
देवासुराश्च मनवः कथं तं क्षुल्लको भजे॥27॥

यन्नामश्रवणेनापि महापातकिनो नराः।
पवित्रतां प्रपद्यन्ते तं कथं स्तौमि चाल्पधीः॥28॥

यथाकथंचिद्यन्नाम्नि कीर्तिते वा श्रुतेऽपि वा।
पापिनस्तु विशुद्धाः स्युः शुद्धा मोक्षमवाप्नुयुः॥29॥

आत्मन्यात्मानमाधाय योगिनो गतकल्मषाः।
पश्यन्ति यं ज्ञानरूपं तमस्मि शरणं गतः॥30॥

सांख्याः सर्वेषु पश्यन्ति परिपूर्णात्मकं हरिम्।
तमादिदेवमजरं ज्ञानरूपं भजाम्यहम्॥31॥

सर्वसत्त्वमयं शान्तं सर्वं द्रष्टारमीश्वरम्।
सहस्रशीर्षकं देवं वन्दे भावात्मकं हरिम्॥32॥

यद्भूतं यच्च वै भाव्यं स्थावरं जंगमं जगत्।
दशांगुलं योऽत्यतिष्ठत्तमीशमजरं भजे॥33॥

अणोरणीयांसमजं महतश्च महत्तरम्।
गुह्याद्गुह्यतमं देवं प्रणमामि पुनः पुनः॥34॥

ध्यातः स्मृतः पूजितो वा श्रुतः प्रणमितोऽपि वा।
स्वपदं यो ददातीशस्तं वन्दे पुरुषोत्तमम् ॥35॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

दुर्वासाकृतं कमलाकान्तस्तोत्रम्

त्राहि मां कमलाकान्त त्राहि मां करुणानिधे।
दीनबन्धोऽतिदीनेश करुणासागर प्रभो॥1॥

वेदवेदांगसंस्रष्टुर्विधातुश्च स्वयं विधे।
मृत्योर्मृत्यो कालकाल त्राहि मां संकटार्णवे॥2॥

संहारकर्तुः संहार सर्वेश सर्वकारण।
महाविष्णुतरोर्बीज रक्ष मां भवसागरे॥3॥

शरणागतशोकार्तभयत्राणपरायण।
भगवन्नव मां भीतं नारायण नमोऽस्तु ते॥4॥

वेदेष्वाद्यं च यद् वस्तु वेदाः स्तोतुं न च क्षमाः।
सरस्वती जडीभूता किं स्तुवन्ति विपश्चितः॥5॥

शेषः सहस्रवक्त्रेण यं स्तोतुं जडतां व्रजेत्।
पञ्चवक्त्रो जडीभूतो जडीभूतश्चतुर्मुखः॥6॥

श्रुतयः स्मृतिकर्तारो वाणी चेत् स्तोतुमक्षमा।
कोऽहं विप्रश्च वेदज्ञः शिष्यः किं स्तौमि मानद॥7॥

मनूनां च महेन्द्राणामष्टाविंशतिमे गते।
दिवानिशं यस्य विधेरष्टोत्तरशतायुषः॥8॥

तस्य पातो भवेद् यस्य चक्षुरुन्मीलनेन च।
तमनिर्वचनीयं च किं स्तौमि पाहि मां प्रभो॥9॥

इत्येवं स्तवनं कृत्वा पपात चरणाम्बुजे।
नयनाम्बुजनीरेण सिषेच भयविह्वलः॥10॥

दुर्वाससा कृतं स्तोत्रं हरेश्च परमात्मनः।
पुण्यदं सामवेदोक्तं जगन्मंगलनामकम्॥11॥

यः पठेत् संकटग्रस्तो भक्तियुक्तश्च संयुतः।
नारायणस्तं कृपया शीघ्रमागत्य रक्षति॥12॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

ध्रुवकृता भगवत्स्तुतिः

योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां सञ्जीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना।
अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन् प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥ 1 ॥

एकस्त्वमेव भगवन्निदमात्मशक्त्या मायाख्ययोरुगुणया महदाद्यशेषम्।
सृष्ट्वानुविश्य पुरुषस्तदसद्गुणेषु नानेव दारुषु विभावसुवद् विभासि ॥ 2 ॥

त्वद्दत्तया वयुनयेदमचष्ट विश्वं सुप्तप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्नः।
तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं विस्मर्यते कतृविदा कथमार्तबन्धो ॥ 3 ॥

नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः।
अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभोग्यमिच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम् ॥ 4 ॥

या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्मध्यानाद् भवज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात्।
सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत्किं त्वन्तकासिलुलितात् पततां विमानात् ॥ 5 ॥

भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसंगो भूयादनन्त महताममलाशयानाम्।
येनाञ्जसोल्बणमुरुव्यसनं भवाब्धिं नेष्ये भवद्गुणकथामृतपानमत्तः ॥ 6 ॥

ते न स्मरन्त्यतितरां प्रियमीश मर्त्यं ये चान्वदः सुतसुहृद्गृहवित्तदाराः।
ये त्वब्जनाभ भवदीयपदारविन्द-सौगन्ध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रसंगाः ॥ 7 ॥

तिर्यङ्नगद्विजसरीसृपदेवदैत्य-मर्त्यादिभिः परिचितं सदसद्विशेषम्।
रूपं स्थविष्ठमज ते महदाद्यनेकं नातः परं परम वेद्मि न यत्र वादः ॥ 8 ॥

कल्पान्त एतदखिलं जठरेण गृह्णन् शेते पुमान् स्वदृगनन्तसखस्तदंके।
यन्नाभिसिन्धुरुहकाञ्चनलोकपद्म-गर्भे द्युमान् भगवते प्रणतोऽस्मि तस्मै ॥ 9 ॥

त्वं नित्यमुक्तपरिशुद्धविबुद्ध आत्मा कूटस्थ आदिपुरुषो भगवांस्त्र्यधीशः।
यद् बुद्ध्यवस्थितिमखण्डितया स्वदृष्ट्या द्रष्टा स्थितावधिमखो व्यतिरिक्त आस्से ॥ 10 ॥

यस्मिन् विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति विद्यादयो विविधशक्तय आनुपूर्व्यात्।
तद् ब्रह्म विश्वभवमेकमनन्तमाद्यमानन्दमात्रमविकारमहं प्रपद्ये ॥ 11 ॥

सत्याऽऽशिषो हि भगवंस्तव पादपद्ममाशीस्तथानुभजतः पुरुषार्थमूर्तेः।
अप्येवमर्य भगवान् परिपाति दीनान् वाश्रेव वत्सकमनुग्रहकातरोऽस्मान् ॥ 12 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

प्रहलादकृता श्रीविष्णुस्तुतिः

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम।
नमस्ते सर्वलोकात्मन्नमस्ते तिग्मचक्रिणे॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

ब्रह्मत्वे सृजते विश्वं स्थितौ पालयते पुनः।
रुद्ररूपाय कल्पान्ते नमस्तुभ्यं त्रिमूर्तये॥

देवा यक्षासुराः सिद्धा नागा गन्धर्वकिन्नराः।
पिशाचा राक्षसाश्चैव मनुष्याः पशवस्तथा॥

पक्षिणः स्थावराश्चैव पिपीलिकसरीसृपाः।
भूम्यापोऽग्निर्नभो वायुः शब्दः स्पर्शस्तथा रसः॥

रूपं गन्धो मनो बुद्धिरात्मा कालस्तथा गुणाः।
एतेषां परमार्थश्च सर्वमेतत्त्वमच्युत॥

विद्याविद्ये भवान्सत्यमसत्यं त्वं विषामृते।
प्रवृत्तं च निवृत्तं च कर्म वेदोदितं भवान्॥

समस्तकर्मभोक्ता च कर्मोपकरणानि च।
त्वमेव विष्णो सर्वाणि सर्वकर्मफलं च यत्॥

मय्यन्यत्र तथान्येषु भूतेषु भुवनेषु च।
तवैव व्याप्तिरैश्वर्यगुणसंसूचिकी प्रभो॥

त्वां योगिनश्चिन्तयन्ति त्वां यजन्ति च याजकाः।
हव्यकव्यभुगेकस्त्वं पितृदेवस्वरूपधृक्॥

रूपं महत्ते स्थितमत्र विश्वं ततश्च सूक्ष्मं जगदेतदीश।
रूपाणि सर्वाणि च भूतभेदास्तेष्वन्तरात्माख्यमतीव सूक्ष्मम्॥

तस्माच्च सूक्ष्मादिविशेषणानामगोचरे यत्परमात्मरूपम्।
किमप्यचिन्त्यं तव रूपमस्ति तस्मै नमस्ते पुरुषोत्तमाय॥

सर्वभूतेषु सर्वात्मन्या शक्तिरपरा तव।
गुणाश्रया नमस्तस्यै शाश्वतायै सुरेश्वर॥

यातीतगोचरा वाचां मनसां चाविशेषणा।
ज्ञानिज्ञानपरिच्छेद्या तां वन्दे स्वेश्वरीं पराम्॥

ॐ नमो वासुदेवाय तस्मै भगवते सदा।
व्यतिरिक्तं न यस्यास्ति व्यतिरिक्तोऽखिलस्य यः॥

नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै महात्मने।
नाम रूपं न यस्यैको योऽस्तित्वेनोपलभ्यते॥

यस्यावताररूपाणि समर्चन्ति दिवौकसः।
अपश्यन्तः परं रूपं नमस्तस्मै महात्मने॥

योऽन्तस्तिष्ठन्नशेषस्य पश्यतीशः शुभाशुभम्।
तं सर्वसाक्षिणं विश्वं नमस्ये परमेश्वरम्॥

नमोऽस्तु विष्णवे तस्मै यस्याभिन्नमिदं जगत्।
ध्येयः स जगतामाद्यः स प्रसीदतु मेऽव्ययः॥

यत्रोतमेतत्प्रोतं च विश्वमक्षरमव्ययम्।
आधारभूतः सर्वस्य स प्रसीदतु मे हरिः॥

ॐ नमो विष्णवे तस्मै नमस्तस्मै पुनः पुनः।
यत्र सर्वं यतः सर्वं यः सर्वं सर्वसंश्रयः॥

सर्वगत्वादनन्तस्य स एवाहमवस्थितः।
मत्तः सर्वमहं सर्वं मयि सर्वं सनातने॥

अहमेवाक्षयो नित्यं परमात्मात्मसंश्रयः।
ब्रह्मसंज्ञोऽहमेवाग्रे तथान्ते च परः पुमान्॥

ॐ नमः परमार्थार्थ स्थूलसूक्ष्म क्षराक्षर।
व्यक्ताव्यक्त कलातीत सकलेश निरञ्जन॥

गुणाञ्जन गुणाधार निर्गुणात्मन् गुणस्थित।
मूर्तामूर्तमहामूर्ते सूक्ष्ममूर्ते स्फुटास्फुट॥

करालसौम्यरूपात्मन् विद्याविद्यामयाच्युत।
सदसद्रूपसद्भाव सदसद्भावभावन॥

नित्यानित्यप्रपञ्चात्मन्निष्प्रपञ्चामलाश्रित।
एकानेक नमस्तुभ्यं वासुदेवादिकारण॥

यः स्थूलसूक्ष्मः प्रकटप्रकाशो यः सर्वभूतो न च सर्वभूतः।
विश्वं यतश्चैतदविश्वहेतोर्नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्री-विष्णुमहिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नस्ते पारं विधिहर-फणीन्द्रप्रभृतयो
विदुर्नाद्याप्यज्ञश्चलमतिरहं नाथ नु कथम् ।
विजानीयामद्धा नलिननयनात्मीयवचसो
विशुद्ध्यै वक्ष्यामीषदपि तु तथापि स्वमतितः ॥1॥

यदाहुर्ब्रह्मैके पुरुषमितरे कर्म च परे-
ऽपरे बुद्धं चाऽन्ये शिवमपि च धातारमपरे।
तथा शक्तिं केचिद् गणपतिमुतार्कं च सुधियो
मतीना वै भेदात्त्वमसि तदशेषं मम मतिः ॥2॥

शिवः पादाम्भस्ते शिरशि धृतवानादरयुतं
तथा शक्तिश्चासौ तव तनुजतेजोमयतनुः।
दिनेशं चैवामुं तव नयनमूचुस्तु नियमा-
स्त्वदन्यः को ध्येयो जगति किल देवो वद विभो॥3॥

क्वचिन्मत्स्यः कूर्मः क्वचिदपि वराहो नरहरिः
क्वचित् खर्वो रामो दशरथसुतो नन्दतनयः।
क्वचिद् बुद्धः कल्किर्विहरसि कुमारापहृतये
स्वतन्त्रोऽजो नित्यो विभुरपि तवाक्रीडनमिदम्॥4॥

हृताम्नायेनोक्तं स्तवनवरमाकर्ण्य विधिना
द्रुतं मात्स्यं धृत्वा वपुरजरशंखासुरमथो।
क्षयं नीत्वा मृत्योर्निगमगणमुद्धृत्य जलधेः
अशेषं संगुप्तं जगदपि च वेदैकशरणम् ॥5॥

निमज्जन्तं वार्धौ नगवरमुपालोक्य सहसा
हितार्थं देवानां कमठवपुषा-ऽऽविश्य गहनम् ।
पयोराशिं पृष्ठे तमजित सलीलं धृतवतो
जगद्धातुस्तेऽभूत् किमु सुलभभाराय गिरिकः ॥6॥

हिरण्याक्षः क्षोणीमविशदसुरो नक्रनिलयं
समादायामर्त्यैः कमलजमुखैरम्बरगतैः।
स्तुतेनानन्तात्मन्न-चिरमवभाति स्म विधृता
त्वया दंष्टाग्रेऽसाववनिरखिला कन्दुक इव ॥7॥

हरिः क्वास्तीत्युक्ते दनुजपतिनाऽऽपूर्य निखिलं
जगन्नादैः स्तम्भान्नरहरि-शरीरेण करजेः।
समुत्पत्त्याशूरा-वसुरवरमादारितवतः
तवाख्याता भूमन् किमु जगति नो सर्वगतता॥8॥

विलोक्याजं द्वार्गं कपटलघुकायं सुररिपुः
निषिद्धोऽपि प्रदादसुरगुरुणात्मीयमखिलम् ।
प्रसन्नस्तद्भक्त्या त्यजसि किल नाद्यापि भवनं
बलेर्भक्ताधीन्यं तव विदितमेवामरपते॥9॥

समाधावासक्तं नृपतितनयैर्वीक्ष्य पितरं
हतं बाणै रोषादुरुतरमुपादाय परशुम् ।
विना क्षत्रं विष्णो क्षितितलममेषं कृतवतः
असत्किं भूभारोद्धरणपटुता ते न विदिता॥10॥

समाराध्योमेशं त्रिभुवनमिदं वासवमुखं
वशे चक्रे चक्रिन्नगणयदनीशं जगदिदम् ।
गतोऽसौ लंकेशस्त्वचिरमथ ते बाणविषयं
न केनाप्तं त्वत्तः फलमविनयस्यासुररिपोः॥11॥

क्वचिद्दिव्यं शौर्यं क्वचिदपि रणे कापुरुषता
क्वचिद् गीताज्ञानं क्वचिदपि परस्त्रीविहरणम् ।
क्वचिन्मृत्स्नाशित्वं क्वचिदपि च वैकुण्ठविभवः
चरित्रं ते नूनं शरणदविमोहाय कुधियाम् ॥12॥

न हिंस्यादित्येतद् ध्रुवमवितथं वाक्यमबुधैः
अथाग्नीषोमीयं पशुमिति तु विप्रैर्निगदितम् ।
तवैत्तत्रास्थानेऽसुरगणविमोहाय गदतः
समृद्धिर्नीचानां नयकर हि दुःखाय जगतः॥13॥

विभागे वर्णानां निगमनिचये चावनितले
विलुप्ते सञ्जातो द्विजवरगृहे शंभलपुरे।
समारुह्याश्वं स्वं लसदसिकरो म्लेच्छनिकरान्
निहन्तास्युन्मत्तान् किल कलियुगान्ते युगपते॥14॥

गभीरे कासारे जलचलवराकृष्टचरणो
रणेऽशक्तो मज्जन्नभयद जलेऽचिन्तयदसौ।

यदा नागेन्द्रस्त्वां सपदि पदपाशादपगतो
गतः स्वर्णं स्थानं भवति विपदां ते किमु जनः ॥15॥

सुतैः पृष्टो वेधाः प्रतिवचनदानेऽप्रभुरसा-
वथात्मन्यात्मानं शरणमगमत्त्वां त्रिजगताम्।
ततस्तेऽस्तातंका ययुरथ मुदं हंसवपुषा
त्वया ते सार्वज्ञं प्रथितममरेशेह किमु नो॥16॥

समाविद्धो मातुर्वचनविशिखैराशु विपिनं
तपश्चक्रे गत्वा तव परमतोषाय परमम् ।
ध्रुवो लेभे दिव्यं पदमचलमल्पेऽपि वयसि
किमस्त्यस्मिंल्लोके त्वयि वरद तुष्टे दुरधिगम् ॥17॥

वृकाद्भीतस्तूर्णं स्वजनभयभित्त्वा पशुपतिः
भ्रमँल्लोकान् सर्वान् शरणमुपयातोऽथ दनुजः।
स्वयं भस्मीभूतस्तव वचनभंगोद्गतमती
रमेशाहो माया तव दुरनुमेयाऽखिलजनैः॥18॥

हृतं दैत्यैर्दृष्ट्वाऽमृतघटमजय्यैस्तु नयतः
कटाक्षैः सम्मोहं युवतिवरवेषेण दितिजान् ।
समग्रं पीयूषं सुभग सुरपूगाय ददतः
समस्यापि प्रायस्तव खलु हि भृत्येष्वभिरतिः॥19॥

समाकृष्टा दुष्टैर्द्रुपदतनयाऽलब्धशरणा
सभायां सर्वात्मंस्तव शरणमुच्चैरुपगता।
समक्षं सर्वेषामभवदचिरं चौर-निचयः
स्मृतेस्ते साफल्यं नयनविषयं नो किमु सताम् ॥20॥

वदन्त्येके स्थानं तव वरद वैकुण्ठमपरे
गवां लोकं लोकं फणिनिलयपातालमितरे।
तथाऽन्ये क्षीरोदं हृदयनलिनं चापि तु सतां
न मन्ये तत्स्थानं त्वहमिह च यत्राऽसि न विभो॥21॥

शिवोऽहं रुद्राणामहममरराजो दिविषदां
मुनीनां व्यासोऽहं सुरवरसमुद्रोऽस्मि सरसाम् ।
कुबेरो यक्षाणामिति तव वचो मन्दमतये
न जाने तज्जातं जगति ननु यन्नासि भगवन् ॥22॥

शिरो नाको नेत्रे शशिदिनकरावम्बरमुरो
निशि श्रोत्रे वाणी निगमनिकरस्ते कटिरिला।
अकूपारो बस्तिश्चरणमपि पातालमिति वै
स्वरूपं तेऽज्ञात्वा नृतनुमवजानन्ति कुधियः॥23॥

शरीरं वैकुण्ठं हृदयनलिनं वाससदनं
मनोवृत्तिस्ताक्ष्र्य मतिरियमथो सागरसुता।
विहारस्तेऽवस्थात्रितयमसवः पार्षदगणो
न पश्यत्यज्ञा त्वामिह बहिरहो याति जनता॥24॥

सुधीरं कान्तारं विशति च तडागं सुगहनं
तथोत्तुंगं शृंगं सपदि च समारोहति गिरेः
प्रसूनार्थं चैताऽम्बुजममलमेकं त्वयि विभो
समर्प्याज्ञस्तूर्णं बत न च सुखं विन्दति जनः॥25॥

कृतैकान्तावासा विगतनिखिलाशाः शमपरा
जितश्वासोच्छ्वासास्त्रुटित-भवपाशाः सुयमिनः।
परं ज्योतिः पश्यन्त्यनघ यदि पश्यन्तु मम तु
श्रियाश्लिष्टं भूयान्नयनविषयं ते किल वपुः॥26॥

कदा गंगोत्तुंगामलतरतंगाच्छपुलिने
वसन्नाशापाशादखिल-खलदाशादपगतः।
अये लक्ष्मीकान्ताम्बुजनयन तातामरपते
प्रसीदेत्याजल्पन्नमरवर नेष्यामि समयम् ॥27॥

कदा शृंगैः स्फीते मुनिगणपरीते हिमनगे
द्रुमावीते शाते सुरमधुरगीते प्रतिवसन् ।
क्वचिद्ध्यानासक्तो विषयसुविरक्तो भवहरं
स्मरंस्ते पादाब्जं जनिहर समेष्यामि विलयम् ॥28॥

सुधापानं ज्ञानं न च विपुलदानं न निगमो
न यागो नो योगी न च निखिलभोगेपरमणम् ।
जपो नो नो तीर्थं व्रतमिह न चोग्रं त्वयि तपो
विना भक्तिं तेऽलं भवभयविनाशाय मधुहन् ॥29॥

नमः सर्वेष्टाय श्रुतिशिखरदृष्टाय च नमो
नमोऽसंश्लिष्टाय त्रिभुवननिविष्टाय च नमः।



नमो विस्पष्टाय प्रणवपरिमृष्टाय च नमो।
नमस्ते सर्वात्मन् पुनरपि पुनस्ते मम नमः ॥30॥

कणान्कश्चिद् वृष्टेर्गणन-निपुणस्तूर्णमवने:
तथाऽशेषान् पांसूनमित कलयेच्चापि तु जनः।
नभः पिण्डीकुर्यादचिरमपि चेच्चर्मवदिदं
तथापीशासौ ते कलयितुमलं नाऽखिलगुणान् ॥31॥

क्व माहात्म्यं सीमोज्झितमविषयं वेदवचसां
विभो ते मे चेतः क्व च विविधतापाहतमिदम् ।
मयेदं यत् किञ्चिद् गदितमथ बाल्येन तु गुरो
गृहाणैतच्छुद्धार्पितमिह न हेयं हि महताम् ॥32॥

इति हरिस्तवनं सुमनोहरं परमहंसजनेन समीरितम् ।
सुगमसुन्दरसारपदास्पदं तदिदमस्तु हरेरनिशं मुदे॥33॥

गदारथांगाम्बुजकम्बुधारिणो रमासमाश्लिष्टतनोस्तनोतु नः।
बिलेशयाधीशशरीरशायिनः शिवं स्तवोऽजस्रमयं परंहरेः ॥34॥

पठेदिमं यस्तु नरः परं स्तवं समाहितोऽघौघ-घनप्रभञ्जनम् ।
स विन्दतेऽत्राखिलभोगसम्पदो महीयते विष्णुपदे ततो ध्रुवम् ॥35॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

पापप्रशमनं विष्णुस्तोत्रम्

विष्णवे विष्णवे नित्यं विष्णवे विष्णवे नमः।
नमामि विष्णुं चित्तस्थमहंकारगतं हरिम्॥1॥

चित्तस्थमीशमव्यक्तमनन्तमपराजितम्।
विष्णुमीड्यमशेषाणामनादिनिधनं हरिम्॥2॥

विष्णुश्चित्तगतो यो मे विष्णुर्बुद्धिगतश्च यः।
योऽहंकारगतो विष्णुर्यो विष्णुर्मयि संस्थितः॥3॥

करोति कर्तृभूतोऽसौ स्थावरस्य चरस्य च।
तत्पापं नाशमायाति तस्मिन् विष्णौ विचिन्तिते॥4॥

ध्यातो हरति यः पापं स्वप्ने दृष्टश्च पापिनाम्।
तमुपेन्द्रमहं विष्णुं नमामि प्रणतप्रियम्॥5॥

जगत्यस्मिन्निरालम्बे ह्यजमक्षरमव्ययम्।
हस्तावलम्बनं स्तोत्रं विष्णुं वन्दे सनातनम्॥6॥

सर्वेश्वरेश्वर विभो परमात्मन्नधोक्षज।
हृषीकेश हृषीकेश हृषीकेश नमोऽस्तु ते॥7॥

नृसिंहानन्त गोविन्द भूतभावन केशव।
दुरुक्तं दुष्कृतं ध्यातं शमयाशु जनार्दन॥8॥

यन्मया चिन्तितं दुष्टं स्वचित्तवशवर्तिना।
आकर्णय महाबाहो तच्छमं नय केशव॥9॥

ब्रह्मण्यदेव गोविन्द परमार्थपरायण।
जगन्नाथ जगद्धातः पापं शमय मेऽच्युत॥10॥

यच्चापराह्णे सायाह्ने मध्याह्ने च तथा निशि।
कायेन मनस वाचा कृतं पापमजानता॥11॥

जानता न हृषीकेश पुण्डरीकाक्ष माधव।
नामत्रयोच्चारणतः सर्वं यातु मम क्षयम्॥12॥

शारीरं मे हृषीकेश पुण्डरीकाक्ष मानसम्।
पापं प्रशममायातु वाक्कृतं मम माधव॥13॥

यद्भुञ्जानः पिबंस्तिष्ठन् स्वपञ्जाग्रद् यदा स्थितः।
अकार्षं पापमर्थार्थं कायेन मनसा गिरा॥ 14॥

महदल्पं च यत्पापं दुर्योनिनरकावहम्।
तत्सर्वं विलयं यातु वासुदेवस्य कीर्तनात्॥ 15॥

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत्।
अस्मिन् संकीर्तिते विष्णौ यत्पापं तत्प्रणश्यतु॥ 16॥

यत्प्राप्य न निवर्तन्ते गन्धस्पर्शविवर्जितम्।
सूरयस्तत्पदं विष्णोस्तत्सर्वं मे भवत्वलम्॥ 17॥

पापप्रशमनं स्तोत्रं यः पठेच्छृणुयान्नरः।
शारीरैर्मानसैर्वाचा कृतैः पापैः प्रमुच्यते।
मुक्तः पापग्रहादिभ्यो याति विष्णोः परं पदम्॥ 18॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



विष्णुस्तवराजः

पद्मोवाच

योगेन सिद्ध-विबुधैः परिभाव्यमानं लक्ष्म्यालयं तुलसिकाचित-भक्तभृंगम्।
प्रोत्तुंगरक्त-नखरांगुलि-पत्रचित्रं गंगारसं हरिपदाम्बुजमाश्रयेऽहम् ॥1॥

गुम्फन् मणिप्रचय-घट्टितराजहंस-सिञ्जत्सुनूपुरयुतं पदपद्मवृन्दम् ।
पीताम्बराञ्चल-विलोल-चलत्पताकं स्वर्णत्रिवक्रवलयं च हरेः स्मरामि॥2॥

जंघे सुपर्ण-गल-नीलमणि-प्रवृद्ध-शोभास्पदारुण-मणिद्युति-चञ्चुमध्ये।
आरक्त-पादतल-लम्बनशोभमाने लोकेक्षणोत्सवकरे च हरेः स्मरामि॥3॥

ते जानुनी मखपतेर्भुजमूलसंग-रंगोत्सवावृत-तडिद्वसने विचित्रे।
चञ्चत्पतत्रिमुख-निर्गतसामगीत-विस्तारितात्मयशसी च हरेः स्मरामि॥4॥

विष्णोः कटिं विधि-कृतान्त-मनोजभूमिं जीवाण्डकोशगण-संगदुकूलमध्याम् ।
नानागुणप्रकृति-पीतविचित्रवस्त्रां ध्याये निबद्धवसनां खगपृष्ठसंस्थाम्॥5॥

शान्तोदरं भगवतस्त्रिवलि-प्रकाश-मावर्तनाभिविकसद्-विधिजन्मपद्मम् ।
नाडीनदी-गणरसोत्थ-सितान्त्रसिन्धुं ध्यायेऽण्डकोशनिलयं तनुलोमरेखम् ॥6॥

वक्षः पयोधितनयाकुचकुंकुमेन हारेण कौस्तुभमणिप्रभया विभातम् ।
श्रीवत्सलक्ष्म हरिचन्दनजप्रसून-मालोचितं भगवतः सुभगं स्मरामि॥7॥

बाहू सुवेषसदनौ वलयांगदादि-शोभास्पदौ दुरितदैत्य-विनाशदक्षौ।
तौ दक्षिणौ-भगवतश्च गदासुनाभ-तेजोर्जितौ सुललितौ मनसा स्मरामि॥8॥

वामौ भुजौ मुररिपोर्धृतपद्मशंखौ श्यामौ करीन्द्रकरवन्मणिभूषणाढ्यौ।
रक्तांगुलि-प्रचय-चुम्बित-जानुमध्यौ पद्मालयाप्रियकरौ रुचिरौ स्मरामि॥9॥

कण्ठं मृणालममलं मुखपंकजस्य लेखात्रयेण वनमालिकया निवीतम् ।
किम्वा विमुक्तिवशमन्त्रक-सत्फलस्य वृन्तं चिरं भगवतः सुभगं स्मरामि॥10॥

वक्त्राम्बुजं दशनहास-विकासरम्यं रक्ताधरौष्ठ-वरकोमल-वाक्सुधाढ्यम् ।
सन्मानसोद्भव-चलेक्षण-पत्रचित्रं लोकाभिराममलं च हरेः स्मरामि॥11॥

सूरात्मजावसथ-गन्धमिदं सुनासं भ्रूपल्लवं स्थितिलयोदयकर्मदक्षम् ।
कामोत्सवं च कमलाहृदयप्रकाशं सञ्चिन्तयामि हरिवक्त्रविलासदक्षम्॥12॥

कर्णौ लसन्मकर-कुण्डलगन्धलोलौ नानादिशां च नभसश्च विकासगेहम् ।
लोलालक-प्रचयचुम्बन-कुञ्चिताग्रौ लग्नौ हरेर्मणिकिरीटतटे स्मरामि॥13॥

भालं विचित्रतिलकं प्रियचारुगन्ध-गोरोचना-रचनया ललनाक्षिसख्यम् ।
ब्रह्मैकधाम-मणिकान्त-किरीटजुष्टं ध्याये मनोनयनहारकमीश्वरस्य ॥14॥

श्रीवासुदेवचिकुरं कुटिलं निबद्धं नानासुगन्धिकुसुमैः स्वजनादरेण।
दीर्घं रमाहृदयगाशमनं धुनन्तं ध्यायेऽम्बुवाहरुचिरं हृदयाब्जमध्ये ॥15॥

मेघाकारं सोमसूर्यप्रकाशं सुभ्रून्नासं शक्रचापैकमानम् ।
लोकातीतं पुण्डरीकायताक्षं विद्युच्चैलं चाश्रयेऽहं त्वपूर्वम् ॥16॥

दीनं हीनं सेवया दैवगत्या पापैस्तापैः पूरितं मे शरीरम् ।
लोभाक्रान्तं शोकमोहादिविद्धं कृपादृष्ट्या पाहि मां वासुदेव॥17॥

ये भक्त्याऽऽद्यां ध्यायमानां मनोज्ञां व्यक्तिं विष्णोः षोडशश्लोकपुष्पैः।
स्तुत्वा नत्वा पूजयित्वा विधिज्ञाः शुद्धा मुक्ता ब्रह्मसौख्यं प्रयान्ति ॥18॥

पद्मेरितमिदं पुण्यं शिवेन परिभाषितम् ।
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं स्वस्त्ययनं परम् ॥19॥

पठन्ति ये महाभागास्ते मुच्यन्तेऽह सोऽखिलात् ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां परत्रेह फलप्रदम् ॥20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



नारायण-हृदय-स्तोत्रम्

श्रीवेदव्यास उवाच

श्रीमन्नारायणो ज्योतिरात्मा नारायणः परः।
नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥1॥

नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः।
नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते॥2॥

नारायणः परं धाम ध्याता नारायणः परः।
नारायणः परो धर्मो नारायण नमोऽस्तु ते॥3॥

नारायणपरो बोधो विद्या नारायणः परा।
विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते॥4॥

नारायणाद् विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते ॥5॥

रविर्नारायणं तेजश्चन्द्रो नारायणं महः।
वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ॥6॥

नारायणः उपास्यः स्याद् गुरुर्नारायणः परः।
नारायणः परो बोधो नारायण नमोऽस्तु ते ॥7॥

नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् ।
सर्वं नारायणः शुद्धो नारायण नमोऽस्तु ते ॥8॥

नारायणस्त्वमेवाऽसि नारायण हृदि स्थितः।
प्रेरकः प्रेर्यमाणानां त्वया प्रेरितमानसः॥9॥

त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् ।
नानोपासनमार्गाणां भावकृद्भावबोधकः॥10॥

भावकृद्-भावभूतस्त्वं मम सौख्यप्रदो भव।
त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम्॥11॥

त्वदधिष्ठानमात्रेण सैव सर्वार्थकारिणी।
त्वमेवैतां पुरस्कृत्य मम कामाद् समर्पय॥12॥

न मे त्वदन्य: सन्त्राता त्वदन्यं न हि दैवतम्।
त्वदन्यं न हि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥13॥

यावत् सांसारिको भावो नमस्ते भावनात्मने।
तत्सिद्धिदो भवेत्सद्य सर्वथा सर्वदा विभो॥14॥

पापिनामहमेकाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणी:।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये॥15॥

त्वयाऽप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता।
आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदय:॥16॥

पापसंघपरिक्रान्त: पापात्मा पापरूपधृक् ।
त्वदन्य: कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥17॥

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा।
य: पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मी: स्थिरा भवेत् ॥18॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥



श्रीनारायणाऽष्टादशकम्

प्रह्लाद प्रभुरस्ति चेत् तव हरि: सर्वत्र मे दर्शय
स्तम्भे चैनमिति ब्रुवन्तमसुरं तत्राऽविरासीद्धरि:।
वक्षस्तस्य विदारयन् निजनखैर्वात्सल्यमावेदयन्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥1॥

श्रीरामोऽत्र विभीषणोऽयमधुना त्वार्तो भयादागत:
सुग्रीवानय पालयेऽहमधुना पौलस्त्यमेवागतम् ।
एवं योऽभयमस्य सर्वविदितं लंकाधिपत्यं ददा-
वार्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥2॥

नक्रग्रस्तपदं समुद्यत्करं ब्रह्मेश देवेश मां
पाहीति प्रचुरार्तरावकरिणं देवेश शक्तीश माम् ।
मा शोचेति ररक्ष नक्रवदनाच्चक्रश्रिया तत्क्षणाद्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥3॥

हा कृष्णाऽच्युत हा कृपाजलनिधे हा पाण्डवानां गते
क्वाऽसि क्वाऽसि सुयोधनादवगतां हा रक्ष मां द्रौपदीम्।
इत्युक्तोऽक्षयवस्त्ररक्षिततनुं योऽरक्षदापद्गणाद्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥4॥

यत्पादाब्ज-नखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं
यन्नामाऽमृतपूरणं च पिबतां सन्ताप-संहारकम्।
पाषाणश्च यदंघ्रितो निजवधूरूपं मुनेराप्तवान्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥5॥

यन्नामश्रुतिमात्रतोऽपरिमितं संसारवारांनिधिं
त्यक्त्वा गच्छति दुर्जनोऽपि परमं विष्णो: पदं शाश्वतम्।
यन्नैवाऽद्भुतकारणं त्रिजगतां नाथस्य दासोऽस्म्यहम्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥6॥

पित्रा भ्रातरमुत्तमांकगमितं भक्तोत्तमं यो ध्रुवं
दृष्ट्वा तत्सममारुरुक्षुमुदितं मात्राऽवमानं गतम्।
योऽदात् तं शरणागतं तु तपसा हेमाद्रिसिंहासनं
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥7॥

नाथेति श्रुतयो न तत्त्वमतयो घोषस्थिता गोपिका
जारिण्यः कुल-जाति-धर्म-विमुखा अध्यात्मभावं ययुः।
भक्तिर्यस्य ददाति मुक्तिमतुलां जारस्य यः सद्गति-
र्ह्यार्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥8॥

क्षुत्तृष्णार्त-सहस्त्रशिष्यसहितं दुर्वाससं क्षोभितं
द्रौपद्या-भय-भक्तियुक्त-मनसा शाकं स्वहस्तार्पितम्।
भुक्त्वा तर्पयदात्मवृत्तिमखिलामावेदयन् यः पुमान्
आर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥9॥

येनाऽरक्षि रघूत्तमेन जलधेस्तीरे दशास्यानुग-
स्त्वायातं शरणं रघूत्तम विभो रक्षातुरं मामिति।
पौलस्त्येन निराकृतोऽथ सदसि भ्रात्रा च लंकापुरे
ह्यार्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥10॥

येनावाहि महाहवे वसुमती संवर्तकाले महा-
लीलाक्रोडवपुर्धरेण हरिणा नारायणेन स्वयम्।
यः पापिद्रुम-सम्प्रवर्तमचिराद्धत्वा च योऽगात् प्रियम्
आर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥11॥

योद्धाऽसौ भुवनत्रये मधुपतिर्भर्ता नराणां बले
राधाया अकरोद्रते रतिमनःपूर्तिं सुरेन्द्रानुजः।
यो वा रक्षति दीनपाण्डुतनयान् नाथेति भीतिं गतान्
आर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥12॥

यः सान्दीपिनिदेशतश्च तनयं लोकान्तरात् सन्नतं
चाऽऽनीय प्रतिपाद्य पुत्रमरणादुज्जृम्भमाणार्तये।
सन्तोषं जनयन्नमेयमहिमा पुत्रार्थसम्पादनाम्
आर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥13॥

यन्नामस्मरणादघौघसहितो विप्रः पुराऽजामिलः
प्राणान् मुक्तिमशोषितामनु च यः पापौघदावार्तियुक्।
सद्योभागवतोत्तमात्मनि मतिं पापाम्बरीषाभिध-
श्चाऽऽर्तत्राणपरायणः स भगवान् नारायणो मे गतिः॥14॥

योऽरक्षद्वसनादिनित्य-रहितं विप्रं कुचैलाभिधं
दीनाऽदीन-चकोर-पालनपरः श्रीशंखचक्रोज्ज्वलः।

तज्जीर्णाम्बर-मुष्टिमात्रपृथुकानादाय भुक्त्वा क्षणाद्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥15॥

यत्कल्याणगुणाभिराममलं मन्त्राणि संशिक्षते
यत्संशेति पतिप्रतिष्ठितमिदं विश्वं वदत्यागम:।
यो योगीन्द्रमन:सरोरुहतम: प्रध्वंसविद्धानुमान्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥16॥

कालिन्दीह्रदयाभिरामपुलिने पुण्ये जगन्मंगले
चन्द्रांभोजवटे पटे परिसरे धात्रा समाराधिते।
श्रीरंगे भुजगेन्द्रभोगशयने शेते सदा य: पुमान्
आर्तत्राणपरायण: स भगवान् नारायणो मे गति: ॥17॥

वात्सल्यादभय-प्रदानसमयादार्ताऽर्तिनिर्वापणा-
दौदार्यादघशोषणादगणित-श्रेय:-पदप्रापणाद्।
सेव्य: श्रीपतिरेव सर्वजगतामेते हि तत्साक्षिण:
प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट् पाञ्चाल्यहल्या ध्रुव: ॥18॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



हरिमीडे-स्तोत्रम्

स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं
यस्मिन्नेतत् संसृतिचक्रं भ्रमतीत्थम्।
यस्मिन् दृष्टे नश्यति तत्संसृतिचक्रं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥1॥

यस्यैकांशादित्थमशेषं जगदेतत्
प्रादुर्भूतं येन पिनद्धं पुनरित्थम्।
येन व्याप्तं येन विबुद्धं सुख-दु:खै:
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥2॥

सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्व: सकलो यो
यश्चाऽऽनन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा।
यश्चाऽव्यक्तो व्यस्तसमस्त: सदसद्य:
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥3॥

यस्मादन्यन्नास्त्यपि नैवं परमार्थं
दृश्यादन्यो निर्विषयज्ञानमयत्वात्।
ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेयविहीनोऽपि सदा ज्ञ:
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥4॥

आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्माऽच्युततत्त्वा
वैराग्येणाभ्यासबलाच्चैव द्रढिम्ना।
भक्त्यैकाग्रध्यानपरा यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥5॥

प्राणानायम्योमिति चित्तं हृदि रुद्ध्वा
नाऽन्यत् स्मृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य।
क्षीणे चित्ते भादृशिरस्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥6॥

यं ब्रह्माख्यं देवमनन्यं परिपूर्णं
हृत्स्थं भक्तैर्लभ्यमजं सूक्ष्ममतर्क्यम्।
ध्यात्वाऽऽत्मस्थं ब्रह्मविदो यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥7॥

मात्राऽतीतं स्वात्मविकासात्मविबोधं
ज्ञेयातीतं ज्ञानमयं हृद्युपलभ्यम् ।
भावग्राह्यानन्दमनन्यं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 8 ॥

यद्यद् वेद्यं वस्तु सतत्त्वं विषयाख्यं
तत्तद् ब्रह्मैवेति विदित्वा तदहं च।
ध्यायन्त्येवं यं सनकाद्या मुनयोऽजं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 9 ॥

यद्यद् वेद्यं तत्तदहं नेति विहाय
स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्दमवाप्य।
तस्मिन्नस्मीयात्मविदो यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 10 ॥

हित्वा हित्वा दृश्यमशेषं सविकल्पं
मत्वा शिष्टं भादृशिमात्रं गगनाभम् ।
त्यक्त्वा देहं यं प्रविशन्त्यच्युतभक्ताः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 11 ॥

सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी न च सर्वः
सर्वं वेत्त्येवेह न यं वेत्ति च सर्वः।
सर्वत्रान्तर्यामितयेत्थं यमनन्यः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 12 ॥

सर्वं दृष्ट्वा स्वात्मनि युक्त्या जगदेतद्
दृष्ट्वाऽऽत्मानं चैवमजं सर्वजनेषु।
सर्वात्मैकोऽस्मीति विदुर्यं जनहृत्स्थं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 13 ॥

सर्वत्रैकः पश्यति जिघ्रत्यथ भुंक्ते
स्प्रष्टा श्रोता बुध्यति चेत्याहुरिमं यम् ।
साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यन्निति चाऽन्ये
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 14 ॥

पश्यन् शृण्वन्नत्र विजानन् रसयन् सन्
जिघ्रन् विभ्रद् देहमिमं जीवतयेत्थम् ।

इत्यात्मानं यं विदुरीशं विषयज्ञं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 15 ॥

जाग्रद् दृष्ट्वा स्थूलपदार्थानथ मायां
दृष्ट्वा स्वप्नेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम् ।
इत्यात्मानं वीक्ष्य मुदास्ते च तुरीये
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 16 ॥

पश्यञ्शुद्धोऽप्यक्षर एको गुणभेदान्
नानाकारान् स्फाटिकवद् भाति विचित्रः ।
भिन्नश्छिन्नश्चाऽयमजः कर्मफलैर्यः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 17 ॥

ब्रह्मा-विष्णू रुद्र-हुताशौ रवि-चन्द्रौ
इन्द्रो वायुर्यज्ञ इतीत्थं परिकल्प्य ।
एकं सन्तं यं बहुधाऽऽहुर्मतिभेदात्
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 18 ॥

सत्यं ज्ञानं शुद्धमनन्तं व्यतिरिक्तं
शान्तं गूढं निष्कलमानन्दमनन्यम् ।
इत्याहादौ यं वरुणोऽसौ भृगवेऽजं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 19 ॥

कोशानेतान् पञ्चरसादीनतिहाय
ब्रह्माऽस्मीति स्वात्मनि निश्चित्य हृदिस्थः ।
पित्राऽऽदिष्टो वेद भृगुर्यं यजुरन्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 20 ॥

येनाऽऽविष्टो यस्य च शक्त्या यदधीनः
क्षेत्रज्ञोऽयं कारयिता जन्तुषु कर्तुः ।
कर्ता भोक्ताऽऽत्माऽत्र हि चिच्छक्त्यधिरूढः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 21 ॥

सृष्ट्वा सर्वं स्वात्मतयैवेत्थमतर्क्यं
व्याप्याऽथान्तः कृत्स्नमिदं सृष्टमशेषम् ।
सच्च त्यच्चाऽभूत् परमात्मा स य एकः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 22 ॥

वेदान्तैश्चाध्यात्मिकशास्त्रैश्च पुराणैः
शास्त्रैश्चाऽन्यैः सात्त्वततन्त्रैश्च यमीशम् ।
दृष्ट्वाऽथान्तश्चेतसि बुद्ध्या विविशुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 23 ॥

श्रद्धा-भक्ति-ध्यान-शमाद्यैर्यतमानैः
ज्ञातुं शक्यो देव इहैवाशु य ईशः ।
दुर्विज्ञेयो जन्मशतैश्चापि विना तैः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 24 ॥

यस्याऽतर्क्यं स्वात्मविभूतेः परमार्थं
सर्वं खल्वित्यत्र निरुक्तं श्रुतिविद्भिः ।
तज्जातित्वादब्धि-तरंगाभमभिन्नं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 25 ॥

दृष्ट्वा गीतास्वक्षरतत्त्वं विधिनाजं
भक्त्या गुर्व्या लभ्यहृदिस्थं दृशिमात्रम् ।
ध्यात्वा तस्मिन्नस्म्यहमित्यत्र विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 26 ॥

क्षेत्रज्ञत्वं प्राप्य विभुः पञ्चमुखैर्यो
भुंक्तेऽजस्रं भोग्यपदार्थान् प्रकृतिस्थः ।
क्षेत्रे क्षेत्रेऽप्स्विन्दुवदेको बहुधाऽऽस्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 27 ॥

युक्त्याऽऽलोड्य व्यास-वचांस्यत्र हि लभ्यः
क्षेत्र-क्षेत्रज्ञान्तरविद्भिः पुरुषाख्यः ।
योऽहं सोऽसौ सोऽस्म्यहमेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 28 ॥

एकीकृत्याऽनेकशरीरस्थमिमं ज्ञं
यं विज्ञायेहैव स एवाशु भवति ।
यस्मिँल्लीना नेह पुनर्जन्म लभन्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ 29 ॥

द्वन्द्वैकत्वं यच्च मधुब्राह्मणवाक्यैः
कृत्वा शक्रोपासनमासाद्य विभूत्या ।

योऽसौ सोऽहं सोऽस्म्यहमेवेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥30॥

योऽयं देहे चेष्टयिताऽन्त:करणस्थ:
सूर्ये चाऽसौ तापयिता सोऽस्म्यहमेव।
इत्यात्मैक्योपासनया यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥31॥

विज्ञानांशो यस्य सत: शक्त्यधिरूढो
बुद्धिर्बुद्ध्यत्यत्र बहिर्बोध्यपदार्थान् ।
नैवान्त:स्थं बुध्यति तं बोधयितारं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥32॥

कोऽयं देहे देव इतीत्थं सुविचार्य
ज्ञाता श्रोताऽऽनन्दयिता चैष हि देव:।
इत्यालोच्य ज्ञांश इहास्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥33॥

को ह्येवान्यादात्मनि न स्यादयमेष
ह्येवानन्द: प्राणिति चापानिति चेति।
इत्यस्तित्वं वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरेषा
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥34॥

प्राणो वाऽहं वाक्-श्रवणादीनि मनो वा
बुद्धिर्वाऽहं व्यस्त उताहोऽपि समस्त:।
इत्यालोच्य ज्ञप्तिरिहास्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥35॥

नाहं प्राणो नैव शरीरं न मनोऽहं
नाहं बुद्धिर्नाहमहंकारधियौ च।
योऽत्र ज्ञांश: सोऽस्म्यहमेवेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥36॥

सत्तामात्रं केवलविज्ञानमजं सत्
सूक्ष्मं नित्यं तत्त्वमसीत्यात्मसुताय।
साम्नामन्ते प्राह पिता यं विभुमाद्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥37॥

मूर्तामूर्ते पूर्वमपोह्याथ समाधौ
दृश्यं सर्वं नेति च नेतीति विहाय।
चैतन्यांशे स्वात्मनि सन्तं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥38॥

ओतं प्रोतं यत्र च सर्वं गगनान्तं
योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसंज्ञः।
ज्ञाताऽतोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्यः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥39॥

तावत्सर्वं सत्यमिवाभाति यदेतत्
यावत् सोऽस्मीत्यात्मनि यो ज्ञो न हि दृष्टः।
दृष्टे तस्मिन् सर्वमसत्यं भवतीदं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥40॥

रागामुक्तं लोहयुतं हेम यथाऽग्नौ
योगाष्टांगैरुज्जवलितज्ञानमयाग्नौ।
दग्ध्वाऽऽत्मानं ज्ञं परिशिष्टं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥41॥

यं विज्ञानज्योतिषमाद्यं सुविभान्तं
हृद्यर्केन्द्वग्न्योकसमीढ्यं तडिदाभम्।
भक्त्याराध्येहैव विशन्त्यात्मनि सन्तं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥42॥

पायाद्भक्तं स्वात्मनि सन्तं पुरुषं यो
भक्त्या स्तौतीत्यांगिरसं विष्णुरिमं माम् ।
इत्यात्मानं स्वात्मनि संहृत्य सदैकः
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥43॥

इत्थं स्तोत्रं भक्तजनेड्यं भवभीति-
ध्वान्तार्काभं भगवत्पादीयमिदं यः।
विष्णोर्लोकं पठति शृणोति व्रजति
ज्ञानं ज्ञेयं स्वात्मनि चाप्नोति मनुष्यः॥44॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

षट्पदी-स्तोत्रम्

अविनयमपनय विष्णो दमय मन:शमय विषयमृगतृष्णाम्।
भूतदयां विस्तारस्य तारय संसारसागरत: ॥1॥

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे॥2॥

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरंग: क्वचन समुद्रो न तारंग: ॥3॥

उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कार: ॥4॥

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावता सदा वसुधाम्।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम्॥5॥

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे॥6॥

नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु॥7।

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥



श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिन्दीतटविपिन-संगीतकरवो
मुदाभीरीनारीवदन-कमलास्वादमधुपः।
रमा-शम्भु-ब्रह्मा-ऽमरपति-गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 1 ॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावन-वसतिलीला-परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 2 ॥

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना।
सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवाऽवसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 3 ॥

कृपापारावारः सजल-जलद-श्रेणिरुचिरो
रमावाणीराम-स्फुरदमल-पद्मेक्षणमुखैः।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 4 ॥

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित-भूदेवपटलैः
स्तुति प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 5 ॥

परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि।
रसानन्दो राधा-सरसवपुरालिंगनसुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ 6 ॥



न वै प्रार्थ्यं राज्यं न च कनकतां भोगविभवं
न याचेऽहं रम्यां निखिलजनकाभ्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथ-पतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥7॥

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते।
अहो दीनानाथं निहितमचलं निश्चितपदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

मधुसूदन-स्तोत्रम्

ॐ मिति ज्ञानमात्रेण रोगजीर्णेन निर्जितः।
कालनिद्रां प्रपन्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥1॥

न गतिर्विद्यते चाऽन्या त्वमेव शरणं मम।
पापपंके निमग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥2॥

मोहितो मोहजालेन पुत्र-दार-गृहादिषु।
तृष्णाया पीड्यमानोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥3॥

भक्तिहीनं च दीनं च दुःखशोकातुरं प्रभो।
अनाश्रयमनाथं च त्राहि मां मधुसूदन॥4॥

गताऽऽगतेन श्रान्तोऽस्मि दीर्घसंसारवर्त्मसु।
येन भूयो न गच्छामि त्राहि मां मधुसूदन॥5॥

बहवो हि मया दृष्टा क्लेशाश्चैव पृथक् पृथक्।
गर्भवासे महद्दुःखं त्राहि मां मधुसूदन॥6॥

तेन देव प्रपन्नोऽस्मि त्राणार्थं त्वत् परायणः।
दुःखार्णव-परित्राणात् त्राहि मां मधुसूदन॥7॥

वाचा यच्च प्रतिज्ञातं कर्मणा नोपपादितम्।
तत् पापार्जितमग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥8॥

सुकृतं न कृतं किञ्चिद् दुष्कृतं च कृतं मया।
घोरे भवे निमग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥9॥

देहान्तरसहस्रेषु चाऽन्योन्यं भ्रामितो ह्यहम्।
तिर्यक् त्वं मानुषत्वं च त्राहि मां मधुसूदन॥10॥

वाचयामि यथोन्मत्तः प्रलपामि तवाऽग्रतः।
जरा-मरण-भीतोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन॥11॥



यत्र यत्र च यातोऽस्मि स्त्रीषु वा पुरुषेषु वा।
तत्र तत्राऽचला भक्तिस्त्राहि मां मधुसूदन॥12॥

गत्वा गत्वा निवर्तन्ते चन्द्र-सूर्यादयो ग्रहाः।
कदापि न निवर्तन्ते द्वादशाक्षरचिन्तकाः॥13॥

ऊर्ध्व-पाताल-मर्त्येषु व्याप्तलोकजगत्त्रयम्।
द्वादशाक्षरात् परं नास्ति वासुदेवेन भाषितम्॥14॥

द्वादशाक्षरं महामन्त्रं सर्वकामफलप्रदम्।
गर्भवास-निवासेन शुकेन परिभाषितम्॥15॥

द्वादशाक्षरं निराहारो यः पठेद् हरिवासरे।
स गच्छेद् वैष्णवं स्थानं यत्र योगेश्वरो हरिः॥16॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥1॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ॥2॥

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥3॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥4॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥5॥

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥6॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोर:स्थलं
लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥7॥

कुञ्चितै: कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयो:।
हारकेयूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं
किंकिणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥8॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



विष्णु-अष्टकम्

पुरः सृष्ट्वाऽऽविष्टः पुरुष इति तत्प्रेक्षणमुखः
सहस्राक्षो भुक्त्वा फलमनुशयी शास्ति तमुत।
स्वयं शुद्धं शान्तं निरवधिसुखं नित्यमचलं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 1 ॥

अनन्तं सत्सत्यं भवभयहरं ब्रह्म परमं
सदा भातं नित्यं जगदिदमितः कल्पितपरम्।
मुहुर्ज्ञानं यस्मिन् रजतमिव शुक्तौ भ्रमहरं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 2 ॥

मतौ यत्सद्रूपं मृगयति बुधोऽतन्निरसनान्
न रज्जौ सर्पोऽपि मुकुरजठरे नास्ति वदनम्।
अतोऽपार्थं सर्वं न हि भवति यस्मिंश्च तमहं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 3 ॥

भ्रमद्धीविक्षिप्तेन्द्रियपथमनुष्यैर्हृदि विभुं
नयं वै वेद स्वेन्द्रियमपि वसन्तं निजमुखम्।
सदा सेव्यं भक्तैर्मुनिमनसि दीप्तं मुनिनुतं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 4 ॥

बुधा यत्तद्रूपं न हि तु नैर्गुण्यममलं
यथा येऽव्यक्तं ते सततमकलंकं श्रुतिनुतम्।
यदाहुः सर्वत्रास्खलितगुणसत्ताकमतुलं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 5 ॥

लयादौ यस्मिन् यद् विलयमपि उद्यत् प्रभवति
तथा जीवोपेतं गुरुकरुणया बोधजनने।
गतं चाऽत्यन्तान्तं व्रजति सहसा सिन्धुनदवन्
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥ 6 ॥



जडं संघातं यन्निमिषलवलेशेन चपलं
यथा स्वं स्वं कार्यं प्रथयति महामोहजनकम्।
मनोवाग्जीवानां न निर्विशति यं निर्भयपदं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥7॥

गुणाख्याने यस्मिन् प्रभवति न वेदोऽपि नितरां
निषिध्यद्वाक्यार्थैश्चकित-चकितं योऽस्य वचनम्।
स्वरूपं यद्गत्वा प्रभुरपि च तूष्णीं भवति तं
नमामि श्रीविष्णुं जलधितनयासेवितपदम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

संकटनाशनं विष्णुस्तोत्रम्

नमो मत्स्यकूर्मादि-नानास्वरूपैः
सदा भक्तकार्योद्यतायार्तिहन्त्रे।
विधात्रादि-सर्ग-स्थिति-ध्वंसकर्त्रे
गदा-शंख-पद्मारिहस्ताय तेऽस्तु॥1॥

रमावल्लभायासुराणां निहन्त्रे
भुजंगारियानाय पीताम्बराय।
मखादि-क्रियापाककर्त्रे विकर्त्रे
शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥2॥

नमो दैत्यसन्तार्पितामर्त्यदुःखा-
चलध्वंसदम्भोलये विष्णवे ते।
भुजंगेश-तल्पेशयायार्क-चन्द्र-
द्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥3॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



सत्यनारायणाष्टकम्

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं लोकनाथं विभुं व्यापकं शंकरम्।
सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥1॥

सर्वदा लोक-कल्याण-पारायणं देव-गो-विप्र-रक्षार्थ-सद्विग्रहम्।
दीन-हीनात्म-भक्ताश्रयं सुन्दरं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥2॥

दक्षिणे यस्य गंगा शुभा शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा।
यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥3॥

संकटे संगरे यं जनः सर्वदा स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः।
पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥4॥

वाञ्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः।
सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥5॥

ब्राह्मणः साधु-वैश्यश्च तुंगध्वजो येऽभवन् विश्रुता यस्य भक्त्याऽमराः।
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥6॥

येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥7॥

सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।
पुत्र-पौत्रादि-सर्वेष्टदं शाश्वतं सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



दशावताराष्टकम्

नमोऽस्तु नारायण-मन्दिराय नमोऽस्तु हारायणकन्धराय।
नमोऽस्तु पारायण-चर्चिताय नमोऽस्तु नारायण तेऽर्चिताय॥ 1 ॥

नमोऽस्तुमत्स्यायलयाब्धिगाय नमोऽस्तु कूर्माय पयोऽब्धिगाय।
नमो वराहाय धराधराय नमो नृसिंहाय परात्पराय॥ 2 ॥

नमोऽस्तु शुक्राश्रयवामनाय नमोऽस्तु विप्रोत्सवभार्गवाय।
नमोऽस्तु सीताहितराघवाय नमोऽस्तु पार्थस्तुतयादवाय॥ 3 ॥

नमोऽस्तु बुद्धाय विमोहकाय नमोऽस्तु ते कल्किपदोदिताय।
नमोऽस्तु पूर्णामितसद्गुणाय समस्तनाथाय हयाननाय॥ 4 ॥

करस्थ-शंखोल्लसदक्षमाला प्रबोधमुद्राभयपुस्तकाय।
नमोऽस्तु वक्त्रोद्गिरदामगाय निरस्तहेयाय हयाननाय॥ 5 ॥

रमासमाकारचतुष्टयेन क्रमाच्चतुर्दिक्षु निषेविताय।
नमोऽस्तु पार्श्वद्वयगद्विरूप-श्रियाभिषिक्ताय हयाननाय॥ 6 ॥

किरीट-पट्टांगद-हार-काञ्ची-सुरत्न-पीताम्बर-नूपुराद्यैः।
विराजितांगाय नमोऽस्तु तुभ्यं सुरैः परीताय हयाननाय॥ 7 ॥

विदोषि-कोटीन्दुनिभ-प्रभाय विशेषतो मध्वमुनिप्रियाय।
विमुक्तवन्द्याय नमोऽस्तु विष्वग् विधूतविघ्नाय हयाननाय॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-दशावतार-स्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्। विहितवहित्रचरित्रमखेदम्॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥1॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे। धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे॥2॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना। शशिनि कलंककलेव निमग्ना॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे॥3॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृंगम्। दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम्॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे॥4॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन। पदनखनीरजनितजनपावन॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे॥5॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्। स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥6॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्। दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्॥
केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे॥7॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे॥8॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्। सदयहृदयदर्शितपशुघातम्॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे॥9॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम्॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥10॥

श्री जयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्। शृणु सुखदं शुभदं भवसारम्॥
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे॥11॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

लक्ष्मीनृसिंह-स्तोत्रम्

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे भोगीन्द्रभोगमणिरञ्जितपुण्यमूर्ते।
योगीश शाश्वतशरण्यभवाब्धिपोत लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 1 ॥

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-संघट्टितांघ्रि-कमलामलकान्तिकान्त।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 2 ॥

संसारघोरगहने चरतो मुरारे मारोग्र-भीकर-मृगप्रवरार्दितस्य।
आर्तस्य मत्सर-निदाघ-निपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 3 ॥

संसारकूप-मतिघोरमगाधमूलं सम्प्राप्य दु:खशत-सर्पसमाकुलस्य।
दीनस्य देव कृपणापदमागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 4 ॥

संसार-सागरविशाल-करालकाल-नक्रग्रहग्रसन-निग्रह-विग्रहस्य।
व्यग्रस्य रागदसनोर्मिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 5 ॥

संसारवृक्ष-भवबीजमनन्तकर्म-शाखाशतं करणपत्रमनंगपुष्पम्।
आरुह्य दु:खफलितं पततो दयालो लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 6 ॥

संसारसर्पघनवक्त्र-भयोग्रतीव्र-दंष्ट्राकरालविषदग्ध-विनष्टमूर्ते।
नागारिवाहन-सुधाब्धिनिवास-शौरे लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 7 ॥

संसारदावदहनातुर भीकरोरु-ज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य।
त्वत्पादपद्म-सरसीशरणागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 8 ॥

संसारजालपतितस्य जगन्निवास सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशार्थझषोपमस्य।
प्रोत्खण्डित-प्रचुरतालुक-मस्तकस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 9 ॥

संसारभीकरकरीन्द्र-कराभिघात-निष्पिष्टमर्मवपुष: सकलार्तिनाश।
प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 10 ॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य चौरै: प्रभो बलिभिरिन्द्रियनामधेयै:।
मोहान्धकूपकुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ 11 ॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम्॥ 12 ॥

यन्माययोर्जितवपु: प्रचुरप्रवाहमग्नार्थमत्र निबहोरुकरावलम्बम्।
लक्ष्मीनृसिंहचरणाब्जमधुव्रतेन स्तोत्रं कृतं सुखकरं भुवि शंकरेण॥ 13 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

श्रीकमलापत्यष्टकम्

भुजगतल्पगतं घनसुन्दरं गरुडवाहनमम्बुजलोचनम्।
नलिनचक्रगदाकरमव्ययं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥1॥

अलिकुलासितकोमलकुन्तलं विमलपीतदुकूलमनोहरम्।
जलधिजांकितवामकलेवरं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥2॥

किमु जपैश्च तपोभिरुताध्वरैरपि किमुत्तमतीर्थनिषेवणैः।
किमुत शास्त्रकदम्बविलोकनैर्भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥3॥

मनुजदेहमिमं भुवि दुर्लभं समधिगम्य सुरैरपि वाञ्छितम्।
विषयलम्पटतामपहाय वै भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥4॥

न वनिता न सुतो न सहोदरो न हि पिता जननी न च बान्धवः।
व्रजति साकजनेन वै भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥5॥

सकलमेव चलं सचराचरं जगदिदं सुतरां धनयौवनम्।
समवलोक्य विवेकदृशा द्रुतं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥6॥

विविधरोगयुतं क्षणभंगुरं परवशं नवमार्गमलाकुलम्।
परिनिरीक्ष्य शरीरमिदं स्वकं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥7॥

मुनिवरैरनिशं हृदि भावितं शिवविरिञ्चिमहेन्द्रनुतं सदा।
मरणजन्मजराभयमोचनं भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीरमापत्यष्टकम्

जगदादिमनादिमजं पुरुषं शरदम्बरतुल्यतनुं वितनुम्।
धृतकञ्जरथांगगदं विगदं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥1॥

कमलाननकञ्जरतं विरतं हृदि योगिजनैः कलितं ललितम्।
कुजनैः सुजनैरलभं सुलभं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥2॥

मुनिवृन्द-हृदिस्थपदं सुपदं निखिला-ऽध्वरभागभुजं सुभुजम्।
हृतवासवमुख्यमदं विमदं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥3॥

हृतदानव-दृप्तबलं सुबलं स्वजनास्त-समस्तमलं विमलम्।
समपास्तगजेन्द्रदरं सुन्दरं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥4॥

परिकल्पितसर्वबलं विकलं सकलागमगीतगुणं विगुणम्।
भवपाशनिराकरणं शरणं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥5॥

मृति-जन्म-जराशमनं कमनं शरणागतभीतिहरं दहरम्।
परितुष्टरमाहृदयं सुदरं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥6॥

सकलावनिबिम्बधरं स्वधरं परिपूरित-सर्वदिशं सुदृशम्।
गतशोकमशोककरं सुकरं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥7॥

मथितार्णवराजरसं सरसं ग्रहिताऽखिललोकहृदं सुहृदम्।
प्रथिताद्भुतशक्तिगणं सुगणं प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीहरिस्तोत्रम्

जगज्जालपालं कचत्कण्ठमालं शरच्चन्द्रभालं महादैत्यकालम्।
नभोनीलकायं दुरावारमायं सुपद्मासहायं भजेऽहं भजेऽहम्॥1॥

सदाऽम्भोधिवासं गलत्पुष्पहासं जगत्सन्निवासं शतादित्यभासम्।
गदाचक्रशस्त्रं लसत्पीतवस्त्रं हसच्चारुवक्त्रं भजेऽहं भजेऽहम्॥2॥

रमाकण्ठहारं श्रुतिव्रातसारं जलान्तर्विहारं धराभारहारम्।
सदानन्दरूपं मनोज्ञस्वरूपं धृतानेकरूपं भजेऽहं भजेऽहम्॥3॥

जराजन्महीनं परानन्दपीनं समाधानलीनं सदैवानवीनम्।
जगज्जन्महेतुं सुरानीककेतुं त्रिलोकैकसेतुं भजेऽहं भजेऽहम्॥4॥

कृताम्नायगानं खगाधीशयानं विमुक्तेर्निदानं हरारातिमानम्।
स्वभक्तानुकूलं जगद्वृक्षमूलं निरस्तार्तशूलं भजेऽहं भजेऽहम्॥5॥

समस्तामरेशं द्विरेफाभकेशं जगद्बिम्बलेशं हृदाकाशदेशम्।
सदा दिव्यदेहं विमुक्ताखिलेऽहं सुवैकुण्ठगेहं भजेऽहं भजेऽहम्॥6॥

सुरालीबलिष्ठं त्रिलोकीवरिष्ठं गुरूणां गरिष्ठं स्वरूपैकनिष्ठम्।
सदा युद्धधीरं महावीरधीरं भवाम्भोधिधीरं भजेऽहं भजेऽहम्॥7॥

रमावामभागं तलानग्ननागं कृताधीनयागं गतारागरागम्।
मुनीन्द्रैः सुगीतं सुरैः सम्परीतं गुणौघैरतीतं भजेऽहं भजेऽहम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीहरिनामाष्टकम्

श्रीकेशवाच्युत मुकुन्द रथांगपाणे गोविन्द माधव जनार्दन दानवारे।
नारायणामरपते त्रिजगन्निवास जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥1॥

श्रीदेवदेव मधुसूदन शार्गंपाणे दामोदरार्णवनिकेतन कैटभारे।
विश्वम्भराभरणभूषित भूमिपाल जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥2॥

श्रीपद्मलोचन गदाधर पद्मनाभ पद्मेश पद्मपद पावन पद्मपाणे।
पीताम्बराम्बररुचे रुचिरावतारी जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥3॥

श्रीकान्तकौस्तुभधरार्तिहराब्जपाणे विष्णो त्रिविक्रममहीधर धर्मसेतो।
वैकुण्ठवास वसुधाधिप वासुदेव जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥4॥

श्रीनारसिंह नरकान्तक कान्तमूर्ते लक्ष्मीपते गरुडवाहन शेषशायिन्।
केशिप्रणाशन सुकेश किरीटमौले जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥5॥

श्रीवत्सलाञ्छन सुरर्षभ शंखपाणे कल्पान्तवारिधिविहार हरे मुरारे।
यज्ञेश यज्ञमय यज्ञभुगादिदेव जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥6॥

श्रीराम रावणरिपो रघुवंशकेतो सीतापते दशरथात्मज राजसिंह।
सुग्रीवमित्र मृगवेधन चापपाणे जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥7॥

श्रीकृष्णवृष्णिवर यादव राधिकेश गोवर्धनोद्धरण कंसविनाश शौरे।
गोपाल वेणुधर पाण्डुसुतैकबन्धो जिह्वे जपेति सततं मधुराक्षराणि ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्रीहरिशरणाष्टकम्

ध्येयं वदन्ति शिवमेव हि केचिदन्ये शक्तिं गणेशमपरे तु दिवाकरं वै।
रूपैस्तु तैरपि विभासि यतस्त्वमेकस्तस्मात् त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥1॥

नो सोदरो न जनको जननी न जाया नैवात्मजो न च कुलं विपुलं बलं वा।
संदृश्यते न किल कोऽपि सहायको मे तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥2॥

नोपासिता मदमपास्य मया महान्तस्तीर्थानिचास्तिकधिया न हि सेवितानि।
सेवार्चनं च विधिवन्न कृतं कदापि तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥3॥

दुर्वासना मम सदा परिकर्षयन्ति चित्तं शरीरमपि रोगगणा दहन्ति।
सञ्जीवनं च परहस्तगतं सदैव तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥4॥

पूर्वं कृतानि दुरितानि मया तु यानि स्मृत्वाऽखिलानि हृदयं परिकम्पते मे।
ख्याता च ते पतितपावनता तु यस्मात्तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥5॥

दु:खं जराजननजं विविधाश्च रोगा: काक-श्व-सूकरजनिर्निरये च पात:।
त्वद्विस्मृते: फलमिदं विततं हि लोके तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥6॥

नीचोऽपि पापबलितोऽपि विनिन्दितोऽपि ब्रूयात्तवाहमिति यस्तु किलैकवारम्।
तं यच्छसीश निजलोकमितिव्रतं ते तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥7॥

वेदेषु धर्मवचनेषु तथाऽऽगमेषु रामायणेऽपि च पुराणकदम्बके वा।
सर्वत्र सर्वविधिना गदितस्त्वमेव तस्मात्त्वमेव शरणं मम शंखपाणे॥8॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥



दीनबन्धु-अष्टकम्

यस्मादिदं जगदुदेति चतुर्मुखाद्यं यस्मिन्नवस्थितमशेषमशेषमूले।
यत्रोपयाति विलयं च समस्तमन्ते दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥1॥

चक्रं सहस्रकरचारुकरारविन्दे गुर्वी गदा दरवरश्च विभाति यस्य।
पक्षीन्द्रपृष्ठ-परिरोपित-पादपद्मो दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥2॥

येनोद्धृता वसुमती सलिले निमग्ना नग्ना च पाण्डववधूः स्थगितादुकूलैः।
सम्मोचितो जलचरस्य मुखाद् गजेन्द्रो दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥3॥

यस्यार्द्रदृष्टिवशतस्तु सुराः समृद्धिं कोपेक्षणेन दनुजा विलयं व्रजन्ति।
भीताश्चरन्ति च यतोऽर्कयमानिलाद्या दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥4॥

गायन्ति सामकुशला यमजं मखेषु ध्यायन्ति वीरयतयो यतयो विविक्ते।
पश्यन्ति योगिपुरुषाः पुरुषं शरीरे दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥5॥

आकाररूपगुण-योग-विवर्जितोऽपि भक्तानुकम्पननिमित्तगृहीतमूर्तिः।
यः सर्वगोऽपि कृतशेषशरीरशय्यो दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥6॥

यस्यांघ्रिपंकजमनिद्रमुनीन्द्र-वृन्दैराराध्यते भवदवानलदाहशान्त्यै।
सर्वापराधमविचिन्त्य ममाऽखिलात्मा दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥7॥

यन्नामकीर्तनपरः श्वपचोऽपि नूनं हित्वाऽखिलं कलिमलं भुवनं पुनाति।
दग्ध्वा ममाघमखिलं करुणेक्षणेन दृग्गोचरो भवतु मेऽद्य स दीनबन्धुः ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



शालिग्रामशिला-स्तोत्रम्

युधिष्ठिर उवाच

श्रीदेवदेव देवेश देवतार्चनमुत्तमम्।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहि मे पुरुषोत्तम॥1॥

श्रीभगवानुवाच

गण्डक्यां चोत्तरे तीरे गिरिराजस्य दक्षिणे।
दशयोजनविस्तीर्णा महाक्षेत्रवसुन्धरा॥2॥

शालिग्रामो भवेद् देवो देवी द्वारावती भवेत्।
उभयो: संगमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशय:॥3॥

शालिग्रामशिला यत्र तत्र द्वारावती शिला।
उभयो संगमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशय:॥4॥

आजन्मकृतपापानां प्रायश्चितं य इच्छति।
शालिग्रामशिलावारि पापहारि नमोऽस्तु ते॥5॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि-विनाशनम्।
विष्णो: पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥6॥

शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अंगलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यादिकं दहेत्॥7॥

स्नानोदकं पिबेन्नित्यं चक्रांकितशिलोद्भवम्।
प्रक्षाल्य शुद्धं तत्तोयं ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥8॥

अग्निष्टोमसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
सम्यक् फलमवाप्नोति विष्णोर्नैवेद्यभक्षणात्॥9॥

नैवेद्ययुक्तां तुलसीं च मिश्रितां विशेषत: पादजलेन विष्णो:।
योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारे: प्राप्नोति यज्ञाऽयुतकोटिपुण्यम्॥10॥

खण्डिता: स्फुटिता भिन्ना वह्निदग्धास्तथैव च।
शालिग्रामशिला यत्र तत्र दोषो न विद्यते॥11॥

न मन्त्रः पूजने नैव न तीर्थं न च भावना।
न स्तुतिर्नोपचारश्च शालिग्रामशिलार्चने॥ 12॥

ब्रह्महत्यादिकं पापं मनो-वाक्-कायसम्भवम्।
शीघ्रं नश्यति तत्सर्वं शालिग्रामशिलार्चनात्॥ 13॥

नानावर्णमयं चैव नानाभोगेन वेष्टितम्।
तथा वरप्रसादेन लक्ष्मीकान्तं वदाम्यहम्॥ 14॥

नारायणोद्भवो देवश्चक्रमध्ये च कर्मणा।
तथा वरप्रसादेन लक्ष्मीकान्तं वदाम्यहम्॥ 15॥

कृष्णे शिलातले यत्र सूक्ष्मं चक्रं च दृश्यते।
सौभाग्य सन्ततिं धत्ते सर्वसौख्यं ददाति च॥ 16॥

वासुदेवस्य चिह्नानि दृष्ट्वा पापैःप्रमुच्यते।
श्रीधरः सकरे वामे हरिद्वर्णस्तु दृश्यते॥ 17॥

वाराहरूपिणं देवं कूर्मांगैरपि चिह्नितम्।
गोपदं तत्र दृश्यते वाराहं वामनं तथा॥ 18॥

पीतवर्णं तु देवानां रक्तवर्णं भयावहम्।
नारसिंहो भवेद् देवो मोक्षदं च प्रकीर्तितम्॥ 19॥

शंख-चक्र-गदा-कूर्माः शंखो यत्रप्रदृश्यते।
शंखवर्णस्य देवानां वामे देवस्य लक्षणम्॥ 20॥

दामोदरं तथा स्थूलं मध्ये चक्रं प्रतिष्ठितम्।
पूर्णद्वारेण संकीर्णा पीतरेखा च दृश्यते॥ 21॥

छत्राकारे भवेद् राज्यं वर्तुले च महाश्रियः।
चिपिटे च महादुःखं शूलाग्रे तु रणं ध्रुवम्॥ 22॥

ललाटे शेषभोगस्तु शिरोपरि सुकाञ्चनम्।
चक्रकाञ्चनवर्णानां वामदेवस्य लक्षणम्॥ 23॥

वामपार्श्वे च वै चक्रे कृष्णवर्णस्तु पिंगलम्।
लक्ष्मीनृसिंहदेवानां पृथग् वर्णस्तु दृश्यते॥ 24॥

लम्बोष्ठे च दरिद्रं स्यात् पिंगले हानिरेव च।
लग्नचक्रे भवेद् व्याधिर्विदारे मरणं ध्रुवम्॥25॥

पादोदकं च निर्माल्यं मस्तके धारयेत् सदा।
विष्णोर्दृष्टं भक्षितव्यं तुलसीदलमिश्रितम्॥26॥

कल्पकोटिसहस्राणि वैकुण्ठे वसते सदा।
शालिग्रामशिलाविन्दुर्हत्याकोटिविनाशनः॥27॥

तस्मात् सम्पूजयेद् ध्यात्वा पूजितं चाऽपि सर्वदा।
शालिग्रामशिलास्तोत्रं यः पठेच्च द्विजोत्तमः॥28॥

स गच्छेत् परमं स्थानं यत्र लोकेश्वरो हरिः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति॥29॥

दशावतारो देवानां पृथग् वर्णस्तु दृश्यते।
ईप्सितं लभते राज्यं विष्णुपूजामनुक्रमात्॥30॥

कोट्यो हि ब्रह्महत्यानामगम्यागम्यकोटयः।
ताः सर्वा नाशमायान्ति विष्णुनैवेद्यभक्षणात्॥31॥

विष्णोः पादोदकं पीत्वा कोटिजन्माऽघनाशनम्।
तस्मादष्टगुणं पापं भूमौ बिन्दुनिपातनात्॥32॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



मंगलगीतम्

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए।
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ॥1॥

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए।
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ॥2॥

कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ॥3॥

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ॥4॥

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥5॥

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए।
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ॥6॥

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ॥7॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥8॥

श्रीजयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम्।
मंगलमञ्जुलगीतं जय जय देव हरे ॥9॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

नारायण-कवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान् ।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥1॥

भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥2॥

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायाऽनुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ॥3॥

विश्वरूप उवाच

धौतांघ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥4॥

नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि॥5॥

मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥6॥

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादि-यकारान्तमंगुल्यंगुष्ठ-पर्वसु॥7॥

न्यसेद् हृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्॥8॥

वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसन्धिषु ।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्र-मूर्तिर्भवेद् बुधः॥9॥

सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति॥10॥

आत्मानं परमं ध्यायेद्ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥11॥

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्तांघ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥12॥

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोगणेभ्योवरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥13॥

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः॥14॥

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्षणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥15॥

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-
न्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥16॥

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥17॥

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।

यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥18॥

द्वैपायनो भगवान प्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किःकलेःकालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥19॥

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसंगवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति-
र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥20॥

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥21॥

श्रीवत्सधामाऽपररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥22॥

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥23॥

गदेऽशनिस्पर्शन-विस्फुलिंगे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायक-यक्ष-रक्षो-
भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥24॥

त्वं यातुधानप्रमथ-प्रेत-मातृ-
पिशाच-विप्रग्रह-घोरदृष्टीन् ।

दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥25॥

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मन् शतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥26॥

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योऽहोभ्य एव वा ॥27॥

सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥28॥

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥29॥

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥30॥

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥31॥

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ॥32॥

तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥33॥

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता-
दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्त-समस्ततेजाः ॥34॥

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् ।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ॥35॥

एतद्धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥36॥

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥37॥

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वांगं जहौ स मरुधन्वनि ॥38॥

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः ॥39॥

गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥40॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



विष्णु-पञ्जर-स्तोत्रम्

परंपरस्मात् प्रकृतेरनादि-
मेकं निविष्टं बहुधा गुहायाम् ।
सर्वालयं सर्वचराचरस्थं
नमामिविष्णुं जगदेकनाथम् ॥1॥

विष्णुपञ्जरकं दिव्यं सर्वदुष्टनिवारणम् ।
उग्रतेजो महावीर्यं सर्वशत्रु-निकृन्तनम् ॥2॥

त्रिपुरं दहमानस्य हरस्य ब्रह्मणोदितम् ।
तदहं सम्प्रवक्ष्यामि आत्मरक्षाकरं नृणाम् ॥3॥

पादौ रक्षतु गोविन्दो जंघे चैव त्रिविक्रमः।
ऊरू मे केशवः पातु कटिं चैव जनार्दनः॥4॥

नाभिं चैवाऽच्युतः पातु गुह्यं चैव तु वामनः।
उदरं पद्मनाभश्च पृष्ठे चैव तु माधवः॥5॥

वामपार्श्वं तथा विष्णुर्दक्षिणं मधुसूदनः।
बाहू वै वासुदेवश्च हृदि दामोदरस्तथा॥6।

कण्ठं रक्षतु वाराहः कृष्णश्च मुखमण्डलम् ।
माधवः कर्णमूले तु हृषीकेशश्च नासिके॥7॥

नेत्रे नारायणो रक्षेल्ललाटं गरुडध्वजः।
कपोलौ केशवो रक्षेद् वैकुण्ठः सर्वतोदिशम्॥8।

श्रीवत्सांकश्च सर्वेषामंगानां रक्षको भवेत् ।
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्ष आग्नेय्यां श्रीधरस्तथा॥9॥

दक्षिणे नारसिंहश्च नैर्ऋत्यां माधवोऽवतु।
पुरुषोत्तमो मे वारुण्यां वायव्यां च जनार्दनः ॥10॥

गदाधरस्तु कौबेर्यामीशान्यां पातु केशवः।
आकाशे च गदा पातु पाताले च सुदर्शनम् ॥11॥

सन्नद्धः सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपञ्जरः।
विष्णुपञ्जरविष्टोऽहं विचरामि महीतले ॥12॥

राजद्वारेऽपथे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे।
नदीषु च रणे चैव चोरव्याघ्रभयेषु च ॥13॥

डाकिनीप्रेतभूतेषु भयं तस्य न जायते।
रक्ष रक्ष महादेव रक्ष रक्ष जनेश्वरः ॥14॥

रक्षन्तु देवताः सर्वा ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः॥15॥

अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः।
दिवा रक्षतु मां सूर्यो रात्रौ रक्षतु चन्द्रमाः॥16॥

पन्थानं दुर्गमं रक्षेत् सर्वमेव जनार्दनः।
रोगविघ्नहतश्चैव ब्रह्महा गुरुतल्पगः॥17॥

स्त्रीहन्ता बालघाती च सुरापो वृषलीपतिः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो यः पठेन्नाऽत्र संशयः॥18॥

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥19॥

आपदो हरते नित्यं विष्णुस्तोत्रार्थसम्पदा।
यस्त्विदं पठते स्तोत्रं विष्णुपञ्जरमुत्तमम् ॥20॥

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।
गोसहस्रफलं तस्य वाजपेयशतस्य च॥21॥

अश्वमेध-सहस्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः।
सर्वकामं लभेदस्य पठनान्नाऽत्र संशयः॥22॥

जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके।
ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥23॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

जगन्मंगल-कवचम्

ब्रह्मोवाच

शृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम्।
श्रीकृष्णेनैव कथितं मह्यं च कृपया पुरा॥1॥
मया दत्तं च धर्माय तेन नारायणर्षये।
ऋषिणा तेन तद्दत्तं सुभद्राय महात्मने॥2॥
अतिगुह्यतमं शुद्धं परं स्नेहाद् वदाम्यहम्।
यद् धृत्वापठनात्सिद्धाःसिद्ध्यादिप्राप्नुवन्ति च॥3॥
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।
ऋषिश्छन्दश्च सावित्री देवो नारायणः स्वयम्॥4॥
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
ॐ राधेशो मे शिरः पातु कण्ठं राधेश्वरः स्वयम्॥5॥
गोपीश्चक्षुषी पातु तालुं च भगवान् स्वयम्।
गण्डयुग्मं च गोविन्दः कर्णयुग्मं च केशवः॥6॥
गलं गदाधरः पातु स्कन्धं कृष्णः स्वयंप्रभुः।
वक्षःस्थलं वासुदेवश्चोदरं चाऽपि सोऽच्युतः॥7॥
नाभिं पातु पद्मनाभः कंकालं कंससूदनः।
पुरुषोत्तमः पातु पृष्ठं नित्यानन्दो नितम्बकम्॥8॥
पुण्डरीकः पादयुग्मं हस्तयुग्मं हरिः स्वयम्।
नासां च नखरं पातु नरसिंहः स्वयंप्रभुः॥9॥
सर्वैश्वरश्च सर्वांगं सततं मधुसूदनः।
प्राच्यां पातु च रामश्च वह्नौ वंशीधरः स्वयम्॥10॥
पातु दामोदरो दक्षे नैर्ऋत्ये च नरोत्तमः।
पश्चिमे पुण्डरीकाक्षो वायव्यां वामनः स्वयम्॥11॥
अनन्तश्चोत्तरे पातु ऐशान्यामीश्वरः स्वयम्।
जले स्थले चाऽन्तरिक्षे स्वप्ने जागरणे तथा॥12॥
पातु वृन्दावनेशश्च मां भक्तं शरणागतम्।
इति ते कथितं वत्स कवचं परमाद्भुतम्॥13॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

मृत्यु-जय-स्तोत्रम्

ततो विष्णवर्पितमना मार्कण्डेयो महामतिः।
तुष्टाव प्रणतो भूत्वा देवदेवं जनार्दनम्॥1॥

विष्णुनैवोपदिष्टं तु स्तोत्रं कर्णे महामनाः।
सम्भावितेन मनसा तेन तुष्टाव माधवम्॥2॥

नारायणं सहस्राक्षं पद्मनाभं पुरातनम्।
प्रणतोऽस्मि ऋषीकेशं किं मे मृत्युः करिष्यति॥3॥

गोविन्दं पुण्डरीकाक्षमनन्तमजमव्ययम्।
केशवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥4॥

वाराहं वामनं विष्णुं नारसिंहं जनार्दनम्।
माधवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥5॥

पुरुषं पुष्करं पुण्यं क्षेत्रबीजं जगत्पतिम्।
लोकनाथं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥6॥

भूतात्मानं महात्मानं जगद्योनिमयोनिजम्।
विश्वरूपं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥7॥

सहस्रशिरसं देवं व्यक्ताऽव्यक्तं सनातनम्।
महायोगं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥8॥

इत्युदीरितमाकर्ण्य स्तोत्रं तस्य महात्मनः।
अपयातस्ततो मृत्युर्विष्णुदूतैश्च पीडितः॥9॥

इति तेन जितो मृत्युर्मार्कण्डेयेन धीमता।
प्रसन्ने पुण्डरीकाक्षे नृसिंहे नास्ति दुर्लभम्॥10॥

मार्कण्डेयहितार्थाय स्वयं विष्णुरुवाच ह॥11॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्री-पाण्डुरंगाष्टकम्

महायोगपीठे तटे भीमरथ्या: वरं पुण्डरीकाय दातुं मुनीन्द्रैः।
समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्दं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥1॥
तडिद्वासस‌ं नीलमेघावभासं रमामन्दिरं सुन्दरं चित्प्रकाशम्।
वरं त्विष्टिकायां समन्यस्तपादं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥2॥
प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां नितंब: कराभ्यां धृतो येन तस्मात्।
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोश: परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥3॥
स्फुरत्कौस्तुभालंकृतं कण्ठदेशे श्रिया जुष्टकेयूरकं श्रीनिवासम्।
शिवं शान्तमीड्यं वरं लोकपालं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥4॥
शरच्चन्द्रबिम्बाननं चारुहासं लसत्कुण्डलक्रान्त-गण्डस्थलान्तम्।
जपारागबिम्बाधरं कञ्जनेत्रं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥5॥
किरीटोज्ज्वलत्सर्वदिक्प्रान्तभागं सुरैरर्चितं दिव्यरत्नैरनर्घैः।
त्रिभंगाकृतिं बर्हमाल्यावतंसं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥6॥
विभुं वेणुनादं चरन्तं दुरन्तं स्वयं लीलया गोपवेषं दधानम्।
गवां वृन्दकानन्दनं चारुहासं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥7॥
अजं रुक्मिणीप्राणसंजीवनं तं परं धाम कैवल्यमेकं तुरीयम्।
प्रसन्नं प्रपन्नार्तिहं देवदेवं परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



विष्णोः षोडशनाम-स्तोत्रम्

औषधे चिन्तयेद् विष्णुं भोजने च जनार्दनम्।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम्॥1॥

युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमम्।
नारायणं तनुत्यागे श्रीधरं प्रियसंगमे॥2॥

दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं संकटे मधुसूदनम्।
कानने नारसिंहं च पावके जलशायिनम्॥3॥

जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम्।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम्॥4॥

षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते॥5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

विष्णोः एकादशनाम-स्तुतिः

राम नारायणानन्त मुकुन्द मधुसूदन।
कृष्ण केशव कंसारे हरे वैकुण्ठ वामन॥1॥

इत्येकादश-नामानि पठेद्यो पाठयेद्यतिः।
जन्मकोटि-सहस्राणां पातकादेव मुच्यते॥2॥

हरे मुरारे मधुकैटभारे गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरे।
यज्ञेश नारायण कृष्ण विष्णो निराश्रयं मां जगदीश रक्ष॥3॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

विष्णोः अष्टाविंशतिनाम-स्तोत्रम्

अर्जुन उवाच

किं नु नामसहस्राणि जपन्ते च पुनः पुनः।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाऽऽचक्ष्वकेशव॥ 1 ॥

श्रीभगवानुवाच

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्॥ 2 ॥

पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधम्।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्॥ 3 ॥

विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्।
दामोदरं श्रीधरं च वेदांगं गरुडध्वजम्।
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम्॥ 4 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

वेंकटेश-द्वादशनाम-स्तोत्रम्

श्रीवेंकटेशमतिसुन्दरमोहनांगं श्रीभूमिकान्तमरविन्ददलायताक्षम्।
प्राणप्रियं परमकारुण-कम्बुराशिं ब्रह्मेशवन्द्यममृतं वरदं नमामि॥ 1 ॥

अखिल-विबुध-वन्द्यंविश्वरूपं सुरेशमभय-वरदहस्तं कञ्जजाक्षं रमेशम्।
जलधरनिभकान्तिं श्रीमहिभ्यां समेतं परमपुरुषमाद्यं वेंकटेशं नमामि॥2॥

वेंकटेशो वासुदेवो वारिजासनवन्दितः।
स्वामि-पुष्करिणीवासः शंख-चक्र-गदाधरः॥3॥

पीताम्बरधरो देवो गरुडारूढशोभितः।
विश्वात्मा विश्वलोकेश-विजयो वेंकटेश्वरः॥4॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

विष्णु-शतनाम-स्तोत्रम्

ॐ वासुदेवं हृषीकेषं वामनं जलशायिनम्।
जनार्दनं हरिं कृष्णं श्रीवक्षं गरुडध्वजम्॥ 1 ॥

वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं नरकान्तकम्।
अव्यक्तं शाश्वतं विष्णुमनन्तमजमव्ययम्॥ 2 ॥

नारायणं गदाध्यक्षं गोविन्दं कीर्तिभाजनम्।
गोवर्धनोद्धरं देवं भूधरं भुवनेश्वरम्॥ 3 ॥

वेत्तारं यज्ञपुरुषं यज्ञेशं यज्ञवाहकम्।
चक्रपाणिं गदापाणिं शंखपाणिं नरोत्तमम्॥ 4 ॥

वैकुण्ठं दुष्टदमनं भूगर्भं पीतवाससम्।
त्रिविक्रमं त्रिकालज्ञं त्रिमूर्तिं नन्दिकेश्वरम्॥ 5 ॥

रामं रामं हयग्रीवं भीमं रौद्रं भवोद्भवम्।
श्रीपतिं श्रीधरं श्रीशं मंगलं मंगलायुधम्॥ 6 ॥

दामोदरं दमोपेतं केशवं केशिसूदनम्।
वरेण्यं वरदं विष्णुमानन्दं वासुदेवजम्॥ 7 ॥

हिरण्यरेतसं दीप्तं पुराणं पुरुषोत्तमम्।
सकलं निष्कलं शुद्धं निर्गुणं गुणशाश्वतम्॥ 8 ॥

हिरण्यतनुसंकाशं सूर्यायुतसमप्रभम्।
मेघश्यामं चतुर्बाहुं कुशलं कमलेक्षणम्॥ 9 ॥

ज्योतिरूपमरूपं च स्वरूपं रूपसंस्थितम्।
सर्वज्ञं सर्वरूपस्थं सर्वेशं सर्वतोमुखम्॥ 10 ॥

ज्ञानं कूटस्थमचलं ज्ञानदं परमं प्रभुम्।
योगीशं योगनिष्णातं योगिनं योगरूपिणम्॥ 11 ॥

ईश्वरं सर्वभूतानां वन्दे भूतमयं प्रभुम्।
इति नामशतं दिव्यं वैष्णवं खलु पापहम्॥ 12 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्रीनारायणाष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

नारायणाय सुरमण्डनमण्डनाय नारायणाय सकलस्थितिकारणाय।
नारायणाय भवभीतिनिवारणाय नारायणाय प्रभवाय नमो नमस्ते ॥1॥

नारायणाय शतचन्द्रनिभाननाय नारायणाय मणि-कुण्डलधारणाय।
नारायणाय निजभक्तपरायणाय नारायणाय सुभगाय नमो नमस्ते ॥2॥

नारायणाय सुरलोकप्रपोषकाय नारायणाय खलदुष्टविनाशकाय।
नारायणाय दितिपुत्रविमर्दनाय नारायणाय सुलभाय नमो नमस्ते ॥3॥

नारायणाय रविमण्डल-संस्थिताय नारायणाय परमार्थ-प्रदर्शनाय।
नारायणाय अतुलाय अतीन्द्रियाय नारायणाय विरजाय नमो नमस्ते ॥4॥

नारायणाय रमणाय रमावराय नारायणाय रसिकाय रसोत्सुकाय।
नारायणाय रसवर्जितनिर्मलाय नारायणाय वरदाय नमो नमस्ते ॥5॥

नारायणाय वरदाय सुरोत्तमाय नारायणाय अखिलान्तरसंस्थिताय।
नारायणाय भय-शोक-विवर्जिताय नारायणाय प्रबलाय नमो नमस्ते ॥6॥

नारायणाय निगमाय निरञ्जनाय नारायणाय च हराय नरोत्तमाय।
नारायणाय कटिसूत्रविभूषणाय नारायणाय हरये महते नमस्ते॥7॥

नारायणाय कटकांगदभूषणाय नारायणाय मणिकौस्तुभशोभनाय।
नारायणाय तुलमौक्तिकभूषणाय नारायणाय च यमाय नमो नमस्ते ॥8॥

नारायणाय रविकोटिप्रतापनाय नारायणाय शशिकोटिसुशीतलाय।
नारायणाय यमकोटिदुरासदाय नारायणाय करुणाय नमो नमस्ते ॥9॥

नारायणाय मुकुटोज्ज्वलसोज्ज्वलाय नारायणाय मणिनूपुरभूषणाय।
नारायणाय ज्वलिताग्निशिखप्रभाय नारायणाय हरये गुरवे नमस्ते ॥10॥

नारायणाय दशकण्ठविमर्दनाय नारायणाय विनतात्मजवाहनाय।
नारायणाय मणिकौस्तुभभूषणाय नारायणाय परमाय नमो नमस्ते ॥11॥

नारायणाय विदुराय च माधवाय नारायणाय कमठाय महीधराय।
नारायणाय उरगाधिपमञ्चकाय नारायणाय विरजापतये नमस्ते ॥12॥

नारायणाय रविकोटिसमाम्बराय नारायणाय च हराय मनोहराय।
नारायणाय निजधर्मप्रतिष्ठिताय नारायणाय च मखाय नमो नमस्ते ॥13॥

नारायणाय भवरोगरसायनाय नारायणाय शिवचापप्रतोटनाय।
नारायणाय निजवानरजीवनाय नारायणाय सुभुजाय नमो नमस्ते ॥14॥

नारायणाय सुरथाय सुहृच्छिताय नारायणाय कुशलाय धुरन्धराय।
नारायणाय गजपाश-विमोक्षणाय नारायणाय जनकाय नमो नमस्ते ॥15॥

नारायणाय निजभृत्यप्रपोषकाय नारायणाय शरणागतपञ्जराय।
नारायणाय पुरुषाय पुरातनाय नारायणाय सुपथाय नमो नमस्ते ॥16॥

नारायणाय मणिस्वासनसंस्थिताय नारायणाय शतवीर्यशताननाय।
नारायणाय पवनाय च केशवाय नारायणाय रविभाय नमो नमस्ते ॥17॥

श्रिय:पतिर्यज्ञपतिः प्रजापतिर्धियां पतिर्लोकपतिर्धरापतिः।
पतिर्गति-श्चाऽन्धक-वृष्णि-सात्वतां प्रसीदतां मे भगवान् सतांपतिः ॥18॥

त्रिभुवनैकमनं तमालवर्णं रविकरगौर-वराम्बरं दधाने।
वपुरलक-कुलावृताननाब्जं विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या ॥19॥

अष्टोत्तराधिकशतानिसुकोमलानि नामानि ये सुकृतिन:सततं स्मरन्ति।
तेऽनेकजन्मकृत-पापचयाद्विमुक्ता नारायणे व्यवहितांगतिमाप्नुवन्ति ॥20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

सत्यनारायण-स्तुतिः

ध्यायेत् सत्यं गुणातीतं गुणत्रय-समन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्॥1॥

नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपदभूषितम्।
गोविन्दं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम्॥2॥

सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं प्रभुम्।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः॥3॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्रीविष्णोरष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

अष्टोत्तरशतं नाम्नां विष्णोरतुलतेजसः।
यस्य श्रवणमात्रेण नरो नारायणो भवेत् ॥1॥
विष्णुर्जिष्णुर्वषट्कारो देवदेवो वृषाकपिः।
दामोदरो दीनबन्धुरादिदेवोऽदितेः सुतः॥2॥
पुण्डरीकः परानन्दः परमात्मा परात्परः।
परशुधारी विश्वात्मा कृष्णः कलिमलापहः॥3॥
कौस्तुभोद्भासितोरस्को नरो नारायणो हरिः।
हरो हरप्रियः स्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः॥4॥
हृषीकेशोऽप्रमेयात्मा वराहो धरणीधरः।
वामनो वेदवक्ता च वासुदेवः सनातनः॥5॥
रामो विरामो विरजो रावणारि रमापतिः।
वैकुण्ठवासी वसुमान् धनदो धरणीधरः॥6॥
धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयो धर्मभृतां वरः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥7॥
सर्वगः सर्ववित् सर्वः शरण्यः साधुवल्लभः।
कौसल्यानन्दनः श्रीमान् रक्षःकुलविनाशकः॥8॥
जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जेता जनार्तिहा।
जानकीवल्लभो देवो जयरूपो जलेश्वरः॥9॥
क्षीराब्धिवासी क्षीराब्धितनयावल्लभस्तथा।
शेषशायी पन्नगारिवाहनोविष्टरश्रवाः॥10॥
माधवो मधुरानाथो मोहदो मोहनाशनः।
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो ह्यच्युतो मधुसूदनः॥11॥
सोमसूर्याग्निनयनो नृसिंहो भक्तवत्सलः।
नित्यो निरामयः शुद्धो नरदेवो जगत्प्रभुः॥12॥
हयग्रीवो जितरिपुरुपेन्द्रो रुक्मिणीपतिः।
सर्वदेवमयः श्रीशः सर्वाधारः सनातनः॥13॥
सौम्यः सौम्यप्रदः स्रष्टा विष्वक्सेनो जनार्दनः।
यशोदातनयो योगी योगशास्त्रपरायणः॥14॥
रुद्रात्मको रुद्रमूर्ती राघवो मधुसूदनः।
इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥15॥

श्रीनारायणाष्टोत्तर-शतनामावलिः

ॐ नारायणाय नमः
ॐ सुरमण्डन-मण्डनाय नमः
ॐ सकलस्थिति-कारणाय नमः
ॐ भवभीति-निवारणाय नमः
ॐ प्रभवाय नमः
ॐ शतचन्द्रनिभाननाय नमः
ॐ मणिकुण्डल-धारणाय नमः
ॐ निजभक्त-परायणाय नमः
ॐ सुभगाय नमः
ॐ सुरलोक-प्रपोषकाय नमः 10
ॐ खलदुष्ट-विनाशकाय नमः
ॐ दितिपुत्र-विमर्दनाय नमः
ॐ सुलभाय नमः
ॐ रविमण्डल-संस्थिताय नमः
ॐ परमार्थप्रदर्शनाय नमः
ॐ अतुलाय नमः
ॐ अतीन्द्रियाय नमः
ॐ विरजाय नमः
ॐ रमणाय नमः
ॐ रमावराय नमः 20
ॐ रसिकाय नमः
ॐ रसोत्सुकाय नमः
ॐ रसवर्जितनिर्मलाय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ सुरोत्तमाय नमः
ॐ अखिलान्तर-संस्थिताय नमः
ॐ भयशोक-विवर्जिताय नमः
ॐ प्रबलाय नमः
ॐ निगमाय नमः
ॐ निरंजनाय नमः 30
ॐ हराय नमः
ॐ नरोत्तमाय नमः
ॐ कटिसूत्र-विभूषणाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ महते नमः
ॐ कटकांगदभूषणाय नमः
ॐ मणिकौस्तुभ-शोभनाय नमः
ॐ तुलमौक्तिक-भूषणाय नमः
ॐ यमाय नमः
ॐ रविकोटि-प्रतापनाय नमः 40
ॐ शशिकोटि-सुशीतलाय नमः
ॐ यमकोटिदुरासदाय नमः
ॐ करुणाय नमः
ॐ मुकुटोज्ज्वल-सोज्ज्वलाय नमः
ॐ मणिनूपुर-भूषणाय नमः
ॐ ज्वलिताग्नि-शिखप्रभाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ गुरवे नमः
ॐ दशकण्ठविमर्दनाय नमः
ॐ विनतात्मज-वाहनाय नमः 50
ॐ मणिकौस्तुभ-भूषणाय नमः
ॐ परमाय नमः
ॐ विदुराय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ कमठाय नमः
ॐ महीधराय नमः
ॐ उरगाधिपमञ्चकाय नमः
ॐ विरजापतये नमः
ॐ रविकोटिसमाम्बराय नमः
ॐ हराय नमः 60

ॐ मनोहराय नमः
ॐ निजधर्मप्रतिष्ठिताय नमः
ॐ मखाय नमः
ॐ भवरोगरसायनाय नमः
ॐ शिवचाप-प्रतोटनाय नमः
ॐ निजवानर-जीवनाय नमः
ॐ सुभुजाय नमः
ॐ सुरथाय नमः
ॐ सुहृच्छिताय नमः
ॐ कुशलाय नमः 70
ॐ धुरन्धराय नमः
ॐ गजपाश-विमोक्षणाय नमः
ॐ जनकाय नमः
ॐ निजभृत्य-प्रपोषकाय नमः
ॐ शरणागत-पञ्जराय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ पुरातनाय नमः
ॐ सुपथाय नमः
ॐ मणिस्वासनसंस्थिताय नमः
ॐ शतवीर्य-शताननाय नमः 80
ॐ पवनाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ रविभाय नमः
ॐ श्रियःपतये नमः
ॐ यज्ञपतये नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ धियांपतये नमः
ॐ लोकपतये नमः
ॐ धरापतये नमः
ॐ पतये नमः 90
ॐ गतये नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ सतांपतये नमः
ॐ त्रिभुवनैकमनसे नमः
ॐ तमालवर्णाय नमः
ॐ रविकर-गौरवराम्बराय नमः
ॐ वपुषे नमः
ॐ अलक-कुलावृताननाब्जाय नमः
ॐ विजयसख्ये नमः
ॐ वामनाय नमः 100
ॐ नृसिंहाय नमः
ॐ रामाय नमः
ॐ कृष्णाय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ विष्णवे नमः 108

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-विष्णु-सहस्रनाम-स्तोत्रम्

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः। सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः। अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः। विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः। प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम् ॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः। हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः। अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः। अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥10॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः। वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः। अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः। अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः। वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः। अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः॥20॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः। निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः। अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः। सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसु:। नैकरूपो बृहद्रूप: शिपिविष्ट: प्रकाशन:॥
ओजस्तेजोद्युतिधर: प्रकाशात्मा प्रतापन:। ऋद्ध: स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युति:॥ 30॥

अमृतांशूद्भवो भानु: शशबिन्दु: सुरेश्वर:। औषधं जगत: सेतु: सत्यधर्मपराक्रम:॥
भूतभव्यभवन्नाथ: पवन: पावनोऽनल:। कामहा कामकृत्कान्त: काम: कामप्रद: प्रभु:॥
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशन:। अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥
इष्टोऽविशिष्ट: शिष्टेष्ट: शिखण्डी नहुषो वृष:। क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधर:॥
अच्युत: प्रथित: प्राण: प्राणदो वासवानुज:। अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्त: प्रतिष्ठित:॥
स्कन्द: स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहन:। वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेव: पुरन्दर:॥
अशोकस्तारणस्तार: शूर: शौरिर्जनेश्वर:। अनुकूल: शतावर्त: पद्मी पद्मनिभेक्षण:॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्ष: पद्मगर्भ: शरीरभृत्। महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वज:॥
अतुल: शरभो भीम: समयज्ञो हविर्हरि:। सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जय:॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदर: सह:। महीधरो महाभागो वेगवानमिताशन:॥ 40॥

उद्भव: क्षोभणो देव: श्रीगर्भ: परमेश्वर:। करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुह:॥
व्यवसायो व्यवस्थान: संस्थान: स्थानदो ध्रुव:। परर्द्धि: परमस्पष्टस्तुष्ट: पुष्ट: शुभेक्षण:॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनय:। वीर: शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तम:॥
वैकुण्ठ: पुरुष: प्राण: प्राणद: प्रणव: पृथु:। हिरण्यगर्भ: शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षज:॥
ऋतु: सुदर्शन: काल: परमेष्ठी परिग्रह:। उग्र: संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिण:॥
विस्तार: स्थावरस्थाणु: प्रमाणं बीजमव्ययम्। अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधन:॥
अनिर्विण्ण: स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामख:। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षम: क्षाम: समीहन:॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतु: सत्रं सतां गति:। सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥
सुव्रत: सुमुख: सूक्ष्म: सुघोष: सुखद: सुहृत्। मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारण:॥
स्वापन: स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्। वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वर:॥ 50॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्। अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षण:॥
गभस्तिनेमि: सत्त्वस्थ: सिंहो भूतमहेश्वर:। आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरु:॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्य: पुरातन:। शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिण:॥
सोमपोऽमृतप: सोम: पुरुजित्पुरुसत्तम:। विनयो जय: सत्यसंधो दाशार्ह: सात्वतां पति:॥
जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रम:। अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तक:॥
अजो महार्ह: स्वाभाव्यो जितामित्र: प्रमोदन:। आनन्दो नन्दनो नन्द: सत्यधर्मा त्रिविक्रम:॥
महर्षि: कपिलाचार्य: कृतज्ञो मेदिनीपति:। त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृंग: कृतान्तकृत्॥
महावराहो गोविन्द: सुषेण: कनकांगदी। गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधर:॥

वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः। वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥
भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः। आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥ 60॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः। दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्। संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्॥
शुभांगः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः। गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥
स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। विजितात्माविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः। अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः। त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः। अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः॥ 70॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः। ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः। महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः। वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्। अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥
एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्। लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥
सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी। वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥ 80॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः। प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः। चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥
शुभांगो लोकसारंगः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः। इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः। अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तः सर्वविज्जयी॥
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः। महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः। अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥

सहस्रार्चि: सप्तजिह्व: सप्तैधा: सप्तवाहन:। अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशन: ॥
अणुर्बृहत्कृश: स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्। अधृत: स्वधृत: स्वास्य: प्राग्वंशो वंशवर्द्धन: ॥ 90 ॥

भारभृत्कथितो योगी योगीश: सर्वकामद:। आश्रम: श्रमण: क्षाम: सुपर्णो वायुवाहन: ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दम:। अपराजित: सर्वसहो नियन्ता नियमो यम: ॥
सत्त्ववान्सात्त्विक: सत्य: सत्यधर्मपरायण:। अभिप्राय: प्रियार्होऽर्ह: प्रियकृत्प्रीतिवर्धन: ॥
विहायसगतिर्ज्योति: सुरुचिर्हुतभुग्विभु:। रविर्विरोचन: सूर्य: सविता रविलोचन: ॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रज:। अनिर्विण्ण: सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुत: ॥
सनात्सनातनतम: कपिल: कपिरप्यय:। स्वस्तिद: स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिण: ॥
अरौद्र: कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासन:। शब्दातिग: शब्दसह: शिशिर: शर्वरीकर: ॥
अक्रूर: पेशलो दक्षो दक्षिण: क्षमिणां वर:। विद्वत्तमो वीतभय: पुण्यश्रवणकीर्तन: ॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दु:स्वप्ननाशन:। वीरहा रक्षण: सन्तो जीवन: पर्यवस्थित: ॥
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापह:। चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिश: ॥ 100 ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मी: सुवीरो रुचिरांगद:। जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रम: ॥
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहास: प्रजागर:। ऊर्ध्वग: सत्पथाचार: प्राणद: प्रणव: पण: ॥
प्रमाणं प्राणनिलय: प्राणभृत्प्राणजीवन:। तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिग: ॥
भूर्भुव:स्वस्तरुस्तार: सविता प्रपितामह:। यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहन: ॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधन:। यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥
आत्मयोनि: स्वयंजातो वैखान: सामगायन:। देवकीनन्दन: स्रष्टा क्षितीश: पापनाशन: ॥
शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्गंधन्वा गदाधर:। रथांगपाणिरक्षोभ्य: सर्वप्रहरणायुध: ॥ 107 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



श्री-विष्णु-सहस्त्रनामावलिः

ॐ विश्वस्मै नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ वषट्काराय नमः
ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
ॐ भूतकृते नमः
ॐ भूतभृते नमः
ॐ भावाय नमः
ॐ भूतात्मने नमः
ॐ भूतभावनाय नमः
ॐ पूतात्मने नमः 10
ॐ परमात्मने नमः
ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ साक्षिणे नमः
ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
ॐ अक्षराय नमः
ॐ योगाय नमः
ॐ योगविदां नेत्रे नमः
ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः 20
ॐ नारसिंहवपुषे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ सर्वस्मै नमः
ॐ शर्वाय नमः
ॐ शिवाय नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ भूतादये नमः
ॐ निधये अव्ययाय नमः 30
ॐ सम्भवाय नमः
ॐ भावनाय नमः
ॐ भर्त्रे नमः
ॐ प्रभवाय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ ईश्वराय नमः
ॐ स्वयम्भुवे नमः
ॐ शम्भवे नमः
ॐ आदित्याय नमः
ॐ पुष्कराक्षाय नमः 40
ॐ महास्वनाय नमः
ॐ अनादिनिधनाय नमः
ॐ धात्रे नमः
ॐ विधात्रे नमः
ॐ धातवे उत्तमाय नमः
ॐ अप्रमेयाय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ अमरप्रभवे नमः
ॐ विश्वकर्मणे नमः 50
ॐ मनवे नमः
ॐ त्वष्ट्रे नमः
ॐ स्थविष्ठाय नमः
ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः
ॐ अग्राह्याय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ कृष्णाय नमः
ॐ लोहिताक्षाय नमः
ॐ प्रतर्दनाय नमः
ॐ प्रभूताय नमः 60



ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः
ॐ पवित्राय नमः
ॐ परम्मंगलाय नमः
ॐ ईशानाय नमः
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ प्राणाय नमः
ॐ ज्येष्ठाय नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः 70
ॐ भूगर्भाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ ईश्वराय नमः
ॐ विक्रमिणे नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ मेधाविने नमः
ॐ विक्रमाय नमः
ॐ क्रमाय नमः
ॐ अनुत्तमाय नमः 80
ॐ दुराधर्षाय नमः
ॐ कृतज्ञाय नमः
ॐ कृतये नमः
ॐ आत्मवते नमः
ॐ सुरेशाय नमः
ॐ शरणाय नमः
ॐ शर्मणे नमः
ॐ विश्वरेतसे नमः
ॐ प्रजाभवाय नमः
ॐ अह्ने नमः 90
ॐ संवत्सराय नमः
ॐ व्यालाय नमः
ॐ प्रत्ययाय नमः
ॐ सर्वदर्शनाय नमः
ॐ अजाय नमः
ॐ सर्वेश्वराय नमः

ॐ सिद्धाय नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ सर्वादये नमः
ॐ अच्युताय नमः 100
ॐ वृषाकपये नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ वसुमनसे नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ समात्मने नमः
ॐ असम्मिताय नमः
ॐ समाय नमः
ॐ अमोघाय नमः 110
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः
ॐ वृषकर्मणे नमः
ॐ वृषाकृतये नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ बहुशिरसे नमः
ॐ बभ्रवे नमः
ॐ विश्वयोनये नमः
ॐ शुचिश्रवसे नमः
ॐ अमृताय नमः
ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः 120
ॐ वरारोहाय नमः
ॐ महातपसे नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ सर्वविद्भानवे नमः
ॐ विष्वक्सेनाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ वेदाय नमः
ॐ वेदविदे नमः
ॐ अव्यंगाय नमः
ॐ वेदांगाय नमः 130
ॐ वेदविदे नमः
ॐ कवये नमः



ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
ॐ सुराध्यक्षाय नमः
ॐ धर्माध्यक्षाय नमः
ॐ कृताकृताय नमः
ॐ चतुरात्मने नमः
ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः 140
ॐ भ्राजिष्णवे नमः
ॐ भोजनाय नमः
ॐ भोक्त्रे नमः
ॐ सहिष्णवे नमः
ॐ जगदादिजाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ विजयाय नमः
ॐ जेत्रे नमः
ॐ विश्वयोनये नमः
ॐ पुनर्वसवे नमः 150
ॐ उपेन्द्राय नमः
ॐ वामनाय नमः
ॐ प्रांशवे नमः
ॐ अमोघाय नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ ऊर्जिताय नमः
ॐ अतीन्द्राय नमः
ॐ संग्रहाय नमः
ॐ सर्गाय नमः
ॐ धृतात्मने नमः 160
ॐ नियमाय नमः
ॐ यमाय नमः
ॐ वेद्याय नमः
ॐ वैद्याय नमः
ॐ सदायोगिने नमः
ॐ वीरघ्ने नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ मधवे नमः
ॐ अतीन्द्रियाय नमः
ॐ महामायाय नमः 170
ॐ महोत्साहाय नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ महाबुद्धये नमः
ॐ महावीर्याय नमः
ॐ महाशक्तये नमः
ॐ महाद्युतये नमः
ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ महाद्रिधृषे नमः 180
ॐ महेष्वासाय नमः
ॐ महीभर्त्रे नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ सतां गतये नमः
ॐ अनिरुद्धाय नमः
ॐ सुरानन्दाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ गोविदाम्पतये नमः
ॐ मरीचये नमः
ॐ दमनाय नमः 190
ॐ हंसाय नमः
ॐ सुपर्णाय नमः
ॐ भुजगोत्तमाय नमः
ॐ हिरण्यनाभाय नमः
ॐ सुतपसे नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः

ॐ प्रजापतये नम:
ॐ अमृत्यवे नम:
ॐ सर्वदृशे नम:
ॐ सिंहाय नम: 200
ॐ संधात्रे नम:
ॐ संधिमते नम:
ॐ स्थिराय नम:
ॐ अजाय नम:
ॐ दुर्मर्षणाय नम:
ॐ शास्त्रे नम:
ॐ विश्रुतात्मने नम:
ॐ सुरारिघ्ने नम:
ॐ गुरवे नम:
ॐ गुरुतमाय नम: 210
ॐ धाम्ने नम:
ॐ सत्याय नम:
ॐ सत्यपराक्रमाय नम:
ॐ निमिषाय नम:
ॐ अनिमिषाय नम:
ॐ स्त्रग्विणे नम:
ॐ वाचस्पतये उदारधिये नम:
ॐ अग्रण्ये नम:
ॐ ग्रामण्ये नम:
ॐ श्रीमते नम: 220
ॐ न्यायाय नम:
ॐ नेत्रे नम:
ॐ समीरणाय नम:
ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने नम:
ॐ विश्वात्मने नम:
ॐ सहस्त्राक्षाय नम:
ॐ सहस्त्रपदे नम:
ॐ आवर्त्तनाय नम:
ॐ निवृत्तात्मने नम:
ॐ संवृताय नम: 230
ॐ सम्प्रमर्दनाय नम:
ॐ अह:संवर्तकाय नम:
ॐ वह्नये नम:
ॐ अनिलाय नम:
ॐ धरणीधराय नम:
ॐ सुप्रसादाय नम:
ॐ प्रसन्नात्मने नम:
ॐ विश्वधृषे नम:
ॐ विश्वभुजे नम:
ॐ विभवे नम: 240
ॐ सत्कर्त्रे नम:
ॐ सत्कृताय नम:
ॐ साधवे नम:
ॐ जह्नवे नम:
ॐ नारायणाय नम:
ॐ नराय नम:
ॐ असंख्येयाय नम:
ॐ अप्रमेयात्मने नम:
ॐ विशिष्टाय नम:
ॐ शिष्टकृते नम: 250
ॐ शुचये नम:
ॐ सिद्धार्थाय नम:
ॐ सिद्धसंकल्पाय नम:
ॐ सिद्धिदाय नम:
ॐ सिद्धिसाधनाय नम:
ॐ वृषाहिणे नम:
ॐ वृषभाय नम:
ॐ विष्णवे नम:
ॐ वृषपर्वणे नम:
ॐ वृषोदराय नम: 260

ॐ वर्धनाय नम:
ॐ वर्धमानाय नम:
ॐ विविक्ताय नम:
ॐ श्रुतिसागराय नम:
ॐ सुभुजाय नम:
ॐ दुर्धराय नम:
ॐ वाग्मिने नम:
ॐ महेन्द्राय नम:
ॐ वसुदाय नम:
ॐ वसवे नम: 270
ॐ नैकरूपाय नम:
ॐ बृहद्रूपाय नम:
ॐ शिपिविष्टाय नम:
ॐ प्रकाशनाय नम:
ॐ ओजस्तेजो-द्युतिधराय नम:
ॐ प्रकाशात्मने नम:
ॐ प्रतापनाय नम:
ॐ ऋद्धाय नम:
ॐ स्पष्टाक्षराय नम:
ॐ मन्त्राय नम: 280
ॐ चन्द्रांशवे नम:
ॐ भास्करद्युतये नम:
ॐ अमृतांशूद्भवाय नम:
ॐ भानवे नम:
ॐ शशबिन्दवे नम:
ॐ सुरेश्वराय नम:
ॐ औषधाय नम:
ॐ जगत: सेतवे नम:
ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नम:
ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नम: 290
ॐ पवनाय नम:
ॐ पावनाय नम:
ॐ अनलाय नम:
ॐ कामघ्ने नम:
ॐ कामकृते नम:
ॐ कान्ताय नम:
ॐ कामाय नम:
ॐ कामप्रदाय नम:
ॐ प्रभवे नम:
ॐ युगादिकृते नम: 300
ॐ युगावर्ताय नम:
ॐ नैकमायाय नम:
ॐ महाशनाय नम:
ॐ अदृश्याय नम:
ॐ अव्यक्तरूपाय नम:
ॐ सहस्रजिते नम:
ॐ अनन्तजिते नम:
ॐ इष्टाय नम:
ॐ अविशिष्टाय नम:
ॐ शिष्टेष्टाय नम: 310
ॐ शिखण्डिने नम:
ॐ नहुषाय नम:
ॐ वृषाय नम:
ॐ क्रोधघ्ने नम:
ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नम:
ॐ विश्वबाहवे नम:
ॐ महीधराय नम:
ॐ अच्युताय नम:
ॐ प्रथिताय नम:
ॐ प्राणाय नम: 320
ॐ प्राणदाय नम:
ॐ वासवानुजाय नम:
ॐ अपां निधये नम:
ॐ अधिष्ठानाय नम:

ॐ अप्रमत्ताय नमः
ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
ॐ स्कन्दाय नमः
ॐ स्कन्दधराय नमः
ॐ धुर्याय नमः
ॐ वरदाय नमः 330
ॐ वायुवाहनाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ बृहद्भानवे नमः
ॐ आदिदेवाय नमः
ॐ पुरन्दराय नमः
ॐ अशोकाय नमः
ॐ तारणाय नमः
ॐ ताराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ शौरये नमः 340
ॐ जनेश्वराय नमः
ॐ अनुकूलाय नमः
ॐ शतावर्ताय नमः
ॐ पद्मिने नमः
ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ अरविन्दाक्षाय नमः
ॐ पद्मगर्भाय नमः
ॐ शरीरभृते नमः
ॐ महर्द्धये नमः 350
ॐ ऋद्धाय नमः
ॐ वृद्धात्मने नमः
ॐ महाक्षाय नमः
ॐ गरुडध्वजाय नमः
ॐ अतुलाय नमः
ॐ शरभाय नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ समयज्ञाय नमः
ॐ हविर्हरये नमः
ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः 360
ॐ लक्ष्मीवते नमः
ॐ समितिञ्जयाय नमः
ॐ विक्षराय नमः
ॐ रोहिताय नमः
ॐ मार्गाय नमः
ॐ हेतवे नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ सहाय नमः
ॐ महीधराय नमः
ॐ महाभागाय नमः 370
ॐ वेगवते नमः
ॐ अमिताशनाय नमः
ॐ उद्भवाय नमः
ॐ क्षोभणाय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ श्रीगर्भाय नमः
ॐ परमेश्वराय नमः
ॐ करणाय नमः
ॐ कारणाय नमः
ॐ कर्त्रे नमः 380
ॐ विकर्त्रे नमः
ॐ गहनाय नमः
ॐ गुहाय नमः
ॐ व्यवसायाय नमः
ॐ व्यवस्थानाय नमः
ॐ संस्थानाय नमः
ॐ स्थानदाय नमः
ॐ ध्रुवाय नमः



ॐ परर्द्धये नमः
ॐ परमस्पष्टाय नमः 390
ॐ तुष्टाय नमः
ॐ पुष्टाय नमः
ॐ शुभेक्षणाय नमः
ॐ रामाय नमः
ॐ विरामाय नमः
ॐ विरजाय नमः
ॐ मार्गाय नमः
ॐ नेयाय नमः
ॐ नयाय नमः
ॐ अनयाय नमः 400
ॐ वीराय नमः
ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः
ॐ धर्माय नमः
ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः
ॐ वैकुण्ठाय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ प्राणाय नमः
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ प्रणवाय नमः
ॐ पृथवे नमः 410
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
ॐ शत्रुघ्नाय नमः
ॐ व्याप्ताय नमः
ॐ वायवे नमः
ॐ अधोक्षजाय नमः
ॐ ऋतवे नमः
ॐ सुदर्शनाय नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ परमेष्ठिने नमः
ॐ परिग्रहाय नमः 420
ॐ उग्राय नमः
ॐ संवत्सराय नमः
ॐ दक्षाय नमः
ॐ विश्रामाय नमः
ॐ विश्वदक्षिणाय नमः
ॐ विस्ताराय नमः
ॐ स्थावरस्थाणवे नमः
ॐ प्रमाणाय नमः
ॐ बीजमव्ययाय नमः
ॐ अर्थाय नमः 430

ॐ अनर्थाय नमः
ॐ महाकोशाय नमः
ॐ महाभोगाय नमः
ॐ महाधनाय नमः
ॐ अनिर्विण्णाय नमः
ॐ स्थविष्ठाय नमः
ॐ अभुवे नमः
ॐ धर्मयूपाय नमः
ॐ महामखाय नमः
ॐ नक्षत्रनेमये नमः 440
ॐ नक्षत्रिणे नमः
ॐ क्षमाय नमः
ॐ क्षामाय नमः
ॐ समीहनाय नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ इज्याय नमः
ॐ महेज्याय नमः
ॐ क्रतवे नमः
ॐ सत्राय नमः
ॐ सतांगतये नमः 450
ॐ सर्वदर्शिने नमः
ॐ विमुक्तात्मने नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ ज्ञानमुत्तमाय नमः
ॐ सुव्रताय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ सूक्ष्माय नमः
ॐ सुघोषाय नमः
ॐ सुखदाय नमः
ॐ सुहृदे नमः 460
ॐ मनोहराय नमः
ॐ जितक्रोधाय नमः
ॐ वीरबाहवे नमः
ॐ विदारणाय नमः
ॐ स्वापनाय नमः
ॐ स्ववशाय नमः
ॐ व्यापिने नमः
ॐ नैकात्मने नमः
ॐ नैककर्मकृते नमः
ॐ वत्सराय नमः 470
ॐ वत्सलाय नमः
ॐ वत्सिने नमः
ॐ रत्नगर्भाय नमः
ॐ धनेश्वराय नमः
ॐ धर्मगोपाय नमः
ॐ धर्मकृते नमः
ॐ धर्मिणे नमः
ॐ 'सत्' स्वरूपाय नमः
ॐ 'असत्' रूपाय नमः
ॐ क्षराय नमः 480
ॐ अक्षराय नमः
ॐ अविज्ञात्रे नमः
ॐ सहस्रांशवे नमः
ॐ विधात्रे नमः
ॐ कृतलक्षणाय नमः
ॐ गभस्तिनेमये नमः
ॐ सत्त्वस्थाय नमः
ॐ सिंहाय नमः
ॐ भूतमहेश्वराय नमः
ॐ आदिदेवाय नमः 490
ॐ महादेवाय नमः
ॐ देवेशाय नमः
ॐ देवभृद्गुरवे नमः
ॐ उत्तराय नमः

ॐ गोपतये नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ ज्ञानगम्याय नमः
ॐ पुरातनाय नमः
ॐ शरीरभूतभृते नमः
ॐ भोक्त्रे नमः 500
ॐ कपीन्द्राय नमः
ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
ॐ सोमपाय नमः
ॐ अमृतपाय नमः
ॐ सोमाय नमः
ॐ पुरुजिते नमः
ॐ पुरुसत्तमाय नमः
ॐ विनयाय नमः
ॐ जयाय नमः
ॐ सत्यसन्धाय नमः 510
ॐ दाशार्हाय नमः
ॐ सात्त्वताम्पतये नमः
ॐ जीवाय नमः
ॐ विनयितासाक्षिणे नमः
ॐ मुकुन्दाय नमः
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ अम्भोनिधये नमः
ॐ अनन्तात्मने नमः
ॐ महोदधिशयाय नमः
ॐ अन्तकाय नमः 520
ॐ अजाय नमः
ॐ महार्हाय नमः
ॐ स्वाभाव्याय नमः
ॐ जितामित्राय नमः
ॐ प्रमोदनाय नमः
ॐ आनन्दाय नमः
ॐ नन्दनाय नमः
ॐ नन्दाय नमः
ॐ सत्यधर्मणे नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः 530
ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः
ॐ कृतज्ञाय नमः
ॐ मेदिनीपतये नमः
ॐ त्रिपदाय नमः
ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः
ॐ महाशृंगाय नमः
ॐ कृतान्तकृते नमः
ॐ महावराहाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ सुषेणाय नमः 540
ॐ कनकांगदिने नमः
ॐ गुह्याय नमः
ॐ गभीराय नमः
ॐ गहनाय नमः
ॐ गुप्ताय नमः
ॐ चक्रगदाधराय नमः
ॐ वेधसे नमः
ॐ स्वांगाय नमः
ॐ अजिताय नमः
ॐ कृष्णाय नमः 550
ॐ दृढाय नमः
ॐ संकर्षणोऽच्युताय नमः
ॐ वरुणाय नमः
ॐ वारुणाय नमः
ॐ वृक्षाय नमः
ॐ पुष्कराक्षाय नमः
ॐ महामनसे नमः
ॐ भगवते नमः

ॐ भगघ्ने नमः
ॐ आनन्दिने नमः 560
ॐ वनमालिने नमः
ॐ हलायुधाय नमः
ॐ आदित्याय नमः
ॐ ज्योतिरादित्याय नमः
ॐ सहिष्णवे नमः
ॐ गतिसत्तमाय नमः
ॐ सुधन्वने नमः
ॐ खण्डपरशवे नमः
ॐ दारुणाय नमः
ॐ द्रविणप्रदाय नमः 570
ॐ दिविस्पृशे नमः
ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः
ॐ वाचस्पतिरयोनिजाय नमः
ॐ त्रिसामायै नमः
ॐ सामगाय नमः
ॐ साम्ने नमः
ॐ निर्वाणाय नमः
ॐ भेषजाय नमः
ॐ भिषजे नमः
ॐ संन्यासकृते नमः 580
ॐ शमाय नमः
ॐ शान्ताय नमः
ॐ निष्ठायै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ परायणाय नमः
ॐ शुभांगाय नमः
ॐ शान्तिदाय नमः
ॐ स्रष्ट्रे नमः
ॐ कुमुदाय नमः
ॐ कुवलेशयाय नमः 590
ॐ गोहिताय नमः
ॐ गोपतये नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ वृषभाक्षाय नमः



ॐ वृषप्रियाय नमः
ॐ अनिवर्तिने नमः
ॐ निवृत्तात्मने नमः
ॐ संक्षेप्त्रे नमः
ॐ क्षेमकृते नमः
ॐ शिवाय नमः 600
ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
ॐ श्रीवासाय नमः
ॐ श्रीपतये नमः
ॐ श्रीमतांवराय नमः
ॐ श्रीदाय नमः
ॐ श्रीशाय नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ श्रीनिधये नमः
ॐ श्रीविभावनाय नमः
ॐ श्रीधराय नमः 610
ॐ श्रीकराय नमः
ॐ श्रेयसे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः
ॐ स्वक्षाय नमः
ॐ स्वंगाय नमः
ॐ शतानन्दाय नमः
ॐ नन्दिने नमः
ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
ॐ विजितात्मने नमः 620
ॐ अविधेयात्मने नमः
ॐ सत्कीर्तये नमः
ॐ छिन्नसंशयाय नमः
ॐ उदीर्णाय नमः
ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
ॐ अनीशाय नमः
ॐ शाश्वतस्थिराय नमः
ॐ भूशयाय नमः
ॐ भूषणाय नमः
ॐ भूतये नमः 630
ॐ विशोकाय नमः
ॐ शोकनाशनाय नमः
ॐ अर्चिष्मते नमः
ॐ अर्चिताय नमः
ॐ कुम्भाय नमः
ॐ विशुद्धात्मने नमः
ॐ विशोधनाय नमः
ॐ अनिरुद्धाय नमः
ॐ अप्रतिरथाय नमः
ॐ प्रद्युम्नाय नमः 640
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ शौरये नमः
ॐ शूरजनेश्वराय नमः
ॐ त्रिलोकात्मने नमः
ॐ त्रिलोकेशाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ केशिघ्ने नमः
ॐ हरये नमः 650
ॐ कामदेवाय नमः
ॐ कामपालाय नमः
ॐ कामिने नमः
ॐ कान्ताय नमः
ॐ कृतागमाय नमः
ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ वीराय नमः

ॐ अनन्ताय नमः
ॐ धनञ्जयाय नमः 660
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ ब्रह्मकृते नमः
ॐ ब्राह्मिणे नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
ॐ ब्रह्मविदे नमः
ॐ ब्राह्मणाय नमः
ॐ ब्रह्मिणे नमः
ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः
ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः 670
ॐ महाक्रमाय नमः
ॐ महाकर्मणे नमः
ॐ महातेजसे नमः
ॐ महोरगाय नमः
ॐ महाक्रतवे नमः
ॐ महायज्वने नमः
ॐ महायज्ञाय नमः
ॐ महाहविषे नमः
ॐ स्तव्याय नमः
ॐ स्तवप्रियाय नमः 680
ॐ स्तोत्राय नमः
ॐ स्तुतये नमः
ॐ स्तोत्रे नमः
ॐ रणप्रियाय नमः
ॐ पूर्णाय नमः
ॐ पूरयित्रे नमः
ॐ पुण्याय नमः
ॐ पुण्यकीर्तये नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ मनोजवाय नमः 690
ॐ तीर्थकराय नमः
ॐ वसुरेतसे नमः
ॐ वसुप्रदाय नमः
ॐ वसुमनसे नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ वसुप्रदाय नमः
ॐ हविषे नमः
ॐ सद्गतये नमः
ॐ सत्कृतये नमः 700
ॐ सत्तायै नमः
ॐ सद्भूतये नमः
ॐ सत्परायणाय नमः
ॐ शूरसेनाय नमः
ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः
ॐ सन्निवासाय नमः
ॐ सुयामुनाय नमः
ॐ भूतावासाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ सर्वासुनिलयाय नमः 710
ॐ अनलाय नमः
ॐ दर्पघ्ने नमः
ॐ दर्पदाय नमः
ॐ दृप्ताय नमः
ॐ दुर्धराय नमः
ॐ अपराजिताय नमः
ॐ विश्वमूर्त्तये नमः
ॐ महामूर्त्तये नमः
ॐ दीप्तमूर्त्तये नमः
ॐ अमूर्त्तिमते नमः 720
ॐ अनेकमूर्त्तये नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः

ॐ शतमूर्त्तये नम:
ॐ शताननाय नम:
ॐ एकस्मै नम:
ॐ नैकस्मै नम:
ॐ सवाय नम:
ॐ काय नम:
ॐ कस्मै नम:
ॐ यस्मै नम: 730
ॐ तस्मै नम:
ॐ पदमनुत्तमाय नम:
ॐ लोकबन्धवे नम:
ॐ लोकनाथाय नम:
ॐ माधवाय नम:
ॐ भक्तवत्सलाय नम:
ॐ सुवर्णवर्णाय नम:
ॐ हेमांगाय नम:
ॐ वरांगाय नम:
ॐ चन्दनांगदिने नम: 740
ॐ वीरघ्ने नम:
ॐ विषमाय नम:
ॐ शून्याय नम:
ॐ घृताशिषे नम:
ॐ अचलाय नम:
ॐ चलाय नम:
ॐ अमानिने नम:
ॐ मानदाय नम:
ॐ मान्याय नम:
ॐ लोकस्वामिने नम: 750
ॐ त्रिलोकधृषे नम:
ॐ सुमेधसे नम:
ॐ मेधजाय नम:
ॐ धन्याय नम:
ॐ सत्यमेधसे नम:
ॐ धराधराय नम:
ॐ तेजोवृषाय नम:
ॐ द्युतिधराय नम:
ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय नम:
ॐ प्रग्रहाय नम: 760
ॐ निग्रहाय नम:
ॐ व्यग्राय नम:
ॐ नैकशृंगाय नम:
ॐ गदाग्रजाय नम:
ॐ चतुर्मूर्त्तये नम:
ॐ चतुर्बाहवे नम:
ॐ चतुर्व्यूहाय नम:
ॐ चतुर्गतये नम:
ॐ चतुरात्मने नम:
ॐ चतुर्भावाय नम: 770
ॐ चतुर्वेदविदे नम:
ॐ एकपदे नम:
ॐ समावर्ताय नम:
ॐ अनिवृत्तात्मने नम:
ॐ दुर्जयाय नम:
ॐ दुरतिक्रमाय नम:
ॐ दुर्लभाय नम:
ॐ दुर्गमाय नम:
ॐ दुर्गाय नम:
ॐ दुरावासाय नम: 780
ॐ दुरारिघ्ने नम:
ॐ शुभांगाय नम:
ॐ लोकसारंगाय नम:
ॐ सुतन्तवे नम:
ॐ तन्तुवर्धनाय नम:
ॐ इन्द्रकर्मणे नम:

ॐ महाकर्मणे नमः
ॐ कृतकर्मणे नमः
ॐ कृतागमाय नमः
ॐ उद्भवाय नमः 790
ॐ सुन्दराय नमः
ॐ सुन्दाय नमः
ॐ रत्ननाभाय नमः
ॐ सुलोचनाय नमः
ॐ अर्काय नमः
ॐ वाजसनाय नमः
ॐ शृंगिणे नमः
ॐ जयन्ताय नमः
ॐ सर्वविज्जयिने नमः
ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः 800
ॐ अक्षोभ्याय नमः
ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
ॐ महाह्रदाय नमः
ॐ महागर्ताय नमः
ॐ महाभूताय नमः
ॐ महानिधये नमः
ॐ कुमुदाय नमः
ॐ कुन्दराय नमः
ॐ कुन्दाय नमः
ॐ पर्जन्याय नमः 810
ॐ पावनाय नमः
ॐ अनिलाय नमः
ॐ अमृताशाय नमः
ॐ अमृतवपुषे नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वतोमुखाय नमः
ॐ सुलभाय नमः
ॐ सुव्रताय नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ शत्रुजिते नमः 820
ॐ शत्रुतापनाय नमः
ॐ न्यग्रोधाय नमः
ॐ उदुम्बराय नमः
ॐ अश्वत्थाय नमः
ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
ॐ सहस्त्रार्चिषे नमः
ॐ सप्तजिह्वाय नमः
ॐ सप्तैधसे नमः
ॐ सप्तवाहनाय नमः
ॐ अमूर्त्तये नमः 830
ॐ अनघाय नमः
ॐ अचिन्त्याय नमः
ॐ भयकृते नमः
ॐ भयनाशनाय नमः
ॐ अणवे नमः
ॐ बृहते नमः
ॐ कृशाय नमः
ॐ स्थूलाय नमः
ॐ गुणभृते नमः
ॐ निर्गुणाय नमः 840
ॐ महते नमः
ॐ अधृताय नमः
ॐ स्वधृताय नमः
ॐ स्वास्याय नमः
ॐ प्राग्वंशाय नमः
ॐ वंशवर्धनाय नमः
ॐ भारभृते नमः
ॐ कथिताय नमः
ॐ योगिने नमः
ॐ योगीशाय नमः 850



ॐ सर्वकामदाय नमः
ॐ आश्रमाय नमः
ॐ श्रमणाय नमः
ॐ क्षामाय नमः
ॐ सुपर्णाय नमः
ॐ वायुवाहनाय नमः
ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ धनुर्वेदाय नमः
ॐ दण्डाय नमः
ॐ दमयित्रे नमः 860
ॐ दमाय नमः
ॐ अपराजिताय नमः
ॐ सर्वसहाय नमः
ॐ नियन्त्रे नमः
ॐ अनियमाय नमः
ॐ अयमाय नमः
ॐ सत्त्ववते नमः
ॐ सात्त्विकाय नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः 870
ॐ अभिप्रायाय नमः
ॐ प्रियार्हाय नमः
ॐ अर्हाय नमः
ॐ प्रियकृते नमः
ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
ॐ विहायसगतये नमः
ॐ ज्योतिषे नमः
ॐ सुरुचये नमः
ॐ हुतभुजे नमः
ॐ विभवे नमः 880
ॐ रवये नमः
ॐ विरोचनाय नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ सवित्रे नमः

ॐ रविलोचनाय नम:
ॐ अनन्ताय नम:
ॐ हुतभुजे नम:
ॐ भोक्त्रे नम:
ॐ सुखदाय नम:
ॐ नैकजाय नम: 890
ॐ अग्रजाय नम:
ॐ अनिर्विण्णाय नम:
ॐ सदामर्षिणे नम:
ॐ लोकाधिष्ठानाय नम:
ॐ अद्भुताय नम:
ॐ सनाते नम:
ॐ सनातनतमाय नम:
ॐ कपिलाय नम:
ॐ कपये नम:
ॐ आप्यायनाय नम: 900
ॐ स्वस्तिदाय नम:
ॐ स्वस्तिकृते नम:
ॐ स्वस्तिने नम:
ॐ स्वस्तिभुजे नम:
ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नम:
ॐ अरौद्राय नम:
ॐ कुण्डलिने नम:
ॐ चक्रिणे नम:
ॐ विक्रमिणे नम:
ॐ ऊर्जितशासनाय नम: 910
ॐ शब्दातिगाय नम:
ॐ शब्दसहाय नम:
ॐ शिशिराय नम:
ॐ शर्वरीकराय नम:
ॐ अक्रूराय नम:
ॐ पेशलाय नम:
ॐ दक्षाय नम:
ॐ दक्षिणाय नम:
ॐ क्षमिणां वराय नम:
ॐ विद्वत्तमाय नम: 920
ॐ वीतभयाय नम:
ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नम:
ॐ उत्तारणाय नम:
ॐ दुष्कृतिघ्ने नम:
ॐ पुण्याय नम:
ॐ दु:स्वप्ननाशनाय नम:
ॐ वीरघ्ने नम:
ॐ रक्षणाय नम:
ॐ सन्ताय नम:
ॐ जीवनाय नम: 930
ॐ पर्यवस्थिताय नम:
ॐ अनन्तरूपाय नम:
ॐ अनन्तश्रिये नम:
ॐ जितमन्यवे नम:
ॐ भयापहाय नम:
ॐ चतुरस्राय नम:
ॐ गभीरात्मने नम:
ॐ विदिशाय नम:
ॐ व्यादिशाय नम:
ॐ दिशाय नम: 940
ॐ अनादये नम:
ॐ भूर्भुवाय नम:
ॐ लक्ष्म्यै नम:
ॐ सुवीराय नम:
ॐ रुचिरांगदाय नम:
ॐ जननाय नम:
ॐ जनजन्मादये नम:
ॐ भीमाय नम:

ॐ भीमपराक्रमाय नम:
ॐ आधारनिलयाय नम: 950
ॐ अधात्रे नम:
ॐ पुष्पहासाय नम:
ॐ प्रजागराय नम:
ॐ ऊर्ध्वगाय नम:
ॐ सत्पथाचाराय नम:
ॐ प्राणदाय नम:
ॐ प्रणवाय नम:
ॐ पणाय नम:
ॐ प्रमाणाय नम:
ॐ प्राणनिलयाय नम: 960
ॐ प्राणभृते नम:
ॐ प्राणजीवनाय नम:
ॐ तत्त्वाय नम:
ॐ तत्त्वविदे नम:
ॐ एकात्मने नम:
ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नम:
ॐ भूर्भुव:स्वस्तरवे नम:
ॐ ताराय नम:
ॐ सवित्रे नम:
ॐ प्रपितामहाय नम: 970
ॐ यज्ञाय नम:
ॐ यज्ञपतये नम:
ॐ यज्वने नम:
ॐ यज्ञांगाय नम:
ॐ यज्ञवाहनाय नम:
ॐ यज्ञभृते नम:
ॐ यज्ञकृते नम:
ॐ यज्ञिने नम:
ॐ यज्ञभुजे नम:
ॐ यज्ञसाधनाय नम: 980
ॐ यज्ञान्तकृते नम:
ॐ यज्ञगुह्याय नम:
ॐ अन्नाय नम:
ॐ अन्नादाय नम:
ॐ आत्मयोनये नम:
ॐ स्वयंजाताय नम:
ॐ वैखानाय नम:
ॐ सामगायनाय नम:
ॐ देवकीनन्दनाय नम:
ॐ स्रष्ट्रे नम: 990
ॐ क्षितीशाय नम:
ॐ पापनाशनाय नम:
ॐ शंखभृते नम:
ॐ नन्दकिने नम:
ॐ चक्रिणे नम:
ॐ शार्गंधन्वने नम:
ॐ गदाधराय नम:
ॐ रथांगपाणये नम:
ॐ अक्षोभ्याय नम:
ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नम: 1000



आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

जो ध्यावे फल पावै दु:ख बिनसे मन का, स्वामि दु:ख बिनसे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवै, सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी, स्वामि शरण गहूँ किसकी
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम पूरन परमात्मा तुम अन्तर्यामी, स्वामि तुम अन्तर्यामी
पार ब्रह्म परमेश्वर, पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामि तुम पालनकर्ता
मैं मूरख खलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामि सबके प्राणपति
किस विध मिलूं दयामय, किस विध मिलूं गुसाईं, तुमको मैं कुमति
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे, स्वामि तुम ठाकुर मेरे
अपने हाथ बढ़ाओ, अपनी शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामि पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥



SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

समस्त सृष्टि का आधार माँ लक्ष्मी और भगवान नारायण हैं। इसी युगल तत्त्व को विभिन्न दर्शनों और परम्पराओं में शिव-शक्ति, पुरुष-प्रकृति, ब्रह्म-माया आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। इन्हीं की परस्पर अन्तर्क्रिया से जगत् का सृजन, पालन-पोषण और संहार होता है। विष्णु पुराण के अनुसार, '*देवतिर्यङ्मनुष्यादौ पुन्नामा भगवान् हरिः, स्त्रीनाम्नी श्रीश्च विज्ञेया नानयोर्विद्यते परम्*', अर्थात् 'देव, तिर्यक्, मनुष्य आदि योनियों में समस्त पुरुषवाची तत्त्व भगवान श्रीहरि हैं और स्त्रीवाची तत्त्व श्रीलक्ष्मीजी; इनके परे और कोई नहीं है।'

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के निर्देशानुसार संन्यास पीठ, मुंगेर में सन् 2011 से श्री लक्ष्मीनारायण यज्ञ की परम्परा का श्रीगणेश हुआ है। विश्व कल्याण और शांति की कामना से प्रेरित इस यज्ञ का मंगलकारी प्रसाद 'श्रीलक्ष्मीनारायण स्तोत्र माला' के रूप में प्रदान किया जा रहा है।



[bar code here]

ISBN : 978-93-81620-03-8